गिनती

इस्राएल की गिनती की जाती है

1 यहोवा ने मूसा से मिलापवाले तम्बू में बात की। यह
सीनै मरुभूमि में हुई। यह बात इस्राएल के लोगों द्वारा
मिस्र छोड़ने के बाद दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले
दिन की थी। यहोवा ने मूसा से कहा: 2“इस्राएल के सभी
लोगों को गिनो। हर एक व्यक्ति की सूची उसके परिवार
और उसके परिवार समूह के साथ बनाओ। 3तुम तथा
हारून इस्राएल के सभी पुरुषों को गिनोगे। उन पुरुषों
को गिनो जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं। (ये
वे हैं जो इस्राएल की सेना में सेवा करते हैं।) इनकी
सूची इनके समुदाय* के आधार पर बनाओ। 4हर एक
परिवार समूह से एक व्यक्ति तुम्हारी सहायता करेगा।
यह व्यक्ति अपने परिवार समूह का नेता होगा। 5तुम्हारे
साथ रहने और तुम्हारी सहायता करने वाले व्यक्तियों
के नाम ये हैं:

रूबेन परिवार समूह से-शदेऊर का पुत्र एलीसूर;
6 शिमोन परिवार समूह से–सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल;
7 यहूदा के परिवार समूह से-अम्मीनादाब का पुत्र
नहशोन;
8 इस्साकार के परिवार समूह से-सूआर का पुत्र नतनेल;
9 जबूलून के परिवार समूह से–हेलोन का पुत्र एलीआब;
10 यूसुफ के वंश से, एप्रैम के परिवार समूह से-
अम्मीहूद का पुत्र एप्रैम; मनश्शे के परिवार समूह
से- पदासूर का पुत्र गम्लीऐल;
11 बिन्यामीन के परिवार समूह से-गिदोनी का
पुत्र अबीदान;
12 दान के परिवार समूह से-अम्मीशद्दै का
पुत्र अहीएजेर ;
13 आशेर के परिवार समूह से-ओक्रान का
पुत्र पगीएल;
14 गाद के परिवार समूह से-दूएल* का
पुत्र एल्यासाप;
15 नप्ताली के परिवार समूह से-एनाम का
पुत्र अहीरा;

16ये सभी व्यक्ति अपने लोगों द्वारा अपने परिवार
समूह के नेता चुने गए। ये लोग अपने परिवार समूह के
नेता हैं। 17मूसा और हारून ने इन व्यक्तियों (और
इस्राएल के लोगों) को एक साथ लिया जो नेता होने के
लिये आये थे। 18मूसा और हारून ने इस्राएल के सभी
लोगों को बुलाया। तब लोगों की सूची उनके परिवार
और परिवार समूह के अनुसार बनी। बीस वर्ष या उससे
अधिक उम्र के सभी व्यक्तियों की सूची बनी। 19मूसा ने
ठीक वैसा ही किया जैसा यहोवा का आदेश था। मूसा ने
लोगों को तब गिना जब वे सीनै की मरुभूमि में थे।

20रूबेन के परिवार समूह को गिना गया। (रूबेन
इस्राएल का पहलौठा पुत्र था।) उन सभी पुरुषों की सूची
बनी जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे और सेना
में सेवा करने योग्य थे। उनकी सूची उनके परिवार
और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 21रूबेन के
परिवार समूह से गिने गए पुरुषों की संख्या छियालीस
हजार पाँच सौ थी।

22शिमोन के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी।
23शिमोन के परिवार समूह को गिनने पर सारे पुरुषों
की संख्या उनसठ हजार तीन सौ थी।

24गाद के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 25गाद
के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या
पैंतालीस हजार छः सौ पचास थी।

26यहूदा के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 27यहूदा
के परिवार समूह को गिनने पर सारी संख्या चौहत्तर
हजार छः सौ थी।

28इस्साकार के परिवार समूह को गिना गया। बीस
वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने
योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची

समुदाय या, “टुकड़ी”। यह सेना का पारिभाषिक शब्द है जो यह संकेत करता है कि इस्राएल एक सेना की तरह संगठित था।

दूएल या, “रूएल।”

उनके परिवार समूह के साथ बनी। 29इस्साकार के
परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या
चौवन हजार चार सौथी।

30जबूलून के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी।
31जबूलून के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की
सारी संख्या सत्तावन हजार चार सौ थी।

32एप्रैम के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार समूह के साथ बनी। 33एप्रैम के परिवार समूह
को गिनने पर सारी संख्या चालीस हजार पाँच सौ थी।

34मनश्शे के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार समूह के साथ बनी। 35मनश्शे के परिवार
समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या बत्तीस हजार
दो सौ थी।

36बिन्यामीन के परिवार समूह को गिना गया। बीस
वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने
योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची
उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ
बनी। 37बिन्यामिन के परिवार समूह को गिनने पर
पुरुषों की सारी संख्या पैंतीस हजार चार सौ थी।

38दान के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 39दान
के परिवार समूह को गिनने पर सारी संख्या बासठ
हजार सात सौ थी। 40आशेर के परिवार समूह को
गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में
सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी।
उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह
के साथ बनी। 41आशेर के परिवार समूह को गिनने
पर पुरुषों की सारी संख्या एकतालीस हजार पाँच सौ
थी।

42नप्ताली के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी।
43नप्ताली के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की
सारी संख्या तिरपन हजार चार सौ थी। 44मूसा, हारून
और इस्राएल के नेताओं ने इन सभी पुरुषों को
गिना। वहाँ बारह नेता थे। (हर परिवार समूह से एक
नेता था।) 45इस्राएल का हर एक पुरुष जो बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य था,
गिना गया। इन पुरुषों की सूची उनके परिवार समूह
के साथ बनी। 46पुरुषों की सारी संख्या छ: लाख तीन
हजार पाँच सौ पचास थी।

47लेवी के परिवार समूह से परिवारों की सूची इस्राएल
के अन्य पुरुषों के साथ नहीं बनी। 48यहोवा ने मूसा से
कहा था: 49"लेवी के परिवार समूह के पुरुषों को तुम्हें
नहीं गिनना चाहिए। इस्राएल के अन्य पुरुषों के एक
भाग के रूप में उनकी संख्या को मत जोड़ो। 50लेवीवंश
के पुरुषों से कहो कि वे साक्षीपत्र के पवित्र तम्बू के
लिए उत्तरदायी हैं। वे उसकी और उसमें जो चीज़ें हैं,
उनकी देखभाल करेंगे। वे मिलापवाले तम्बू और उसकी
सभी चीजें लेकर चलेंगे। वे अपना डेरा उसके चारों
ओर डालेंगे तथा उसकी देखभाल करेंगे। 51जब कभी
वह पवित्र तम्बू कहीं ले जाया जाएगा, तो लेवीवंश के
पुरुषों को ही उसे उतारना होगा। जब कभी मिलापवाला
तम्बू किसी स्थान पर लगाया जाएगा तो लेवीवंश के
पुरुषों को ही यह करना होगा। वे ही ऐसे पुरुष हैं जो
मिलापवाले तम्बू की देखभाल करते हैं। यदि कोई ऐसा
अन्य पुरुष तम्बू के निकट आना चाहता है जो लेवी के
परिवार समूह का नहीं है तो वह मार डाला जाएगा।
52इस्राएल के लोग अपने डेरे अलग अलग समूहों में
लगाएंगे। हर एक व्यक्ति को अपना डेरा अपने परिवार
के झण्डे के पास लगाना चाहिए। 53किन्तु लेवी के लोगों
को अपना डेरा पवित्र तम्बू के चारों ओर डालना चाहिए।
लेवीवंश के लोग साक्षीपत्र के पवित्र तम्बू की रक्षा
करेंगे। वे पवित्र तम्बू की रक्षा करेंगे जिससे इस्राएल के
लोगों का कुछ भी बुरा नहीं होगा।"

54इसलिए इस्राएल के लोगों ने उन सभी बातों को
माना जिसका आदेश यहोवा ने मूसा को दिया था।

डेरे की व्यवस्था

2 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा: 2"इस्राएल के
लोगों को मिलापवाले तम्बू के चारों ओर अपने
डेरे लगाने चाहिए। हर एक समुदाय का अपना विशेष
झण्डा होगा और हर एक व्यक्ति को अपने समूह के
झण्डे के पास अपना डेरा लगाना चाहिए।"

3यहूदा के डेरे का झण्डा पूर्व में होगा, जिधर सूरज
निकलता है। यहूदा के लोग वहीं डेरा लगाएंगे। यहूदा के
लोगों का नेता अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन है। 4इस
समूह में चौहत्तर हजार छ: सौ पुरुष थे।

5 इस्साकार का परिवार समूह यहूदा के लोगों के
ठीक बाद में होगा। इस्साकार के लोगों का नेता सूआर
का पुत्र नतनेल है। 6इस समूह में चौवन हजार चार सौ
पुरुष थे।

7जबूलून का परिवार समूह भी यहूदा के परिवार
समूह से ठीक बाद में अपना डेरा लगाएगा। जबूलून के

लोगों का नेता हेलोन का पुत्र एलीआब है। 8इस समूह में सत्तावन हजार चार सौ पुरुष थे। 9यहूदा के डेरे में एक लाख छियासी हजार चार सौ पुरुष थे। ये सभी अपने अलग अलग परिवार समूह में बंटे हुए हैं। यहूदा पहला समूह होगा जो उस समय आगे चलेगा जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे। 10रूबेन का झण्डा पवित्र तम्बू के दक्षिण में होगा। हर एक समूह अपने झण्डे के पास अपना डेरा लगाएगा। रूबेन के लोगों का नेता शदेऊर का पुत्र एलीसूर है। 11इस समूह में छियालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे। 12शिमोन का परिवार समूह रूबेन के परिवार समूह के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। शिमोन के लोगों का नेता सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल है। 13इस समूह में उनसठ हजार तीन सौ पुरुष थे।

14गाद का परिवार समूह भी रूबेन के लोगों के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। गाद के लोगों का नेता रूएल का पुत्र एल्यासाप है। 15इस समूह में पैंतालीस हजार चार सौ पचास पुरुष थे।

16रूबेन के डेरे में सभी समूहों के एक लाख इकयावन हजार चार सौ पचास पुरुष थे। रूबेन का डेरा दूसरा समूह होगा जो उस समय चलेगा जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे।

17जब लोग यात्रा करेंगे तो लेवी का डेरा ठीक उसके बाद चलेगा। मिलापवाला तम्बू दूसरे अन्य डेरों के बीच उनके साथ रहेगा। लोग अपने डेरे उसी क्रम में लगाएंगे जिस क्रम में वे चलेंगे। हर एक व्यक्ति अपने परिवार के झण्डे के साथ रहेगा।

18एप्रैम का झण्डा पश्चिम की ओर रहेगा। एप्रैम के परिवार के समूह वहीं डेरा लगाएंगे। एप्रैम के लोगों का नेता अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा है। 19इस समूह में चालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

20मनश्शे का परिवार समूह एप्रैम के परिवार के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। मनश्शे के लोगों का नेता पदासूर का पुत्र गम्लीएल है। 21इस समूह में बत्तीस हजार दो सौ पुरुष थे।

22बिन्यामीन का परिवार समूह भी एप्रैम के परिवार के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। बिन्यामीन के लोगों का नेता गिदोनी का पुत्र अबीदान है। 23इस समूह में पैंतीस हजार चार सौ पुरुष थे।

24एप्रैम के डेरे में एक लाख आठ हजार एक सौ पुरुष थे। यह तीसरा परिवार होगा जो तब चलेगा जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे।

25दान के डेरे का झण्डा उत्तर की ओर होगा। दान के परिवार का समूह वहीं डेरा लगाएगा। दान के लोगों का नेता अम्मीशद्दै का पुत्र अहीऐजेर है। 26इस समूह में बासठ हजार सात सौ पुरुष थे। 27आशेर का परिवार समूह दान के परिवार समूह के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। आशेर के लोगों का नेता ओक्रान का पुत्र पगीएल है। 28इस समूह मे इकतालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

29नप्ताली का परिवार समूह भी दान के परिवार समूह के ठीक बाद अपने डेरे लगाएगा। नप्ताली के लोगों का नेता एनान का पुत्र अहीरा है। 30इस समूह में तिरपन हजार चार सौ पुरुष थे।

31दान के डेरे में एक लाख सत्तावन हजार छ: सौ पुरुष थे। जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे तो यह चलने वाला आखिरी परिवार होगा। ये अपने झण्डे के नीचे अपना डेरा लगाएंगे।

32इस प्रकार ये इस्राएल के लोग थे। वे परिवार के अनुसार गिने गये थे। सभी डेरों में अलग-अलग समूहों के सभी परिवारों के पुरुषों की समूची संख्या थी छ: लाख तीन हजार पाँच सौ पचास। 33मूसा ने इस्राएल के अन्य लोगों में लेवीवंश के लोगों को नहीं गिना। यह यहोवा का आदेश था।

34यहोवा ने मूसा को जो कुछ करने को कहा उस सबका पालन इस्राएल के लोगों ने किया। हर एक समूहों ने अपने झण्डों के नीचे अपने डेरे लगाए और हर एक व्यक्ति अपने परिवार और अपने परिवार समूह के साथ रहा।

हारून का याजक परिवार

3 जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत पर मूसा से बात की, उस समय हारून और मूसा के परिवार का इतिहास यह है। 2हारून के चार पुत्र थे। नादाब पहलौठा पुत्र था। उसके बाद अबीहू, एलीआज़ार और ईतामार थे। 3ये पुत्र चुने हुए याजक थे।

इन्हें याजक के रूप में यहोवा की सेवा का विशेष कार्य सौंपा गया था। 4किन्तु नादाब और अबीहू यहोवा की सेवा करते समय पाप करने के कारण मर गए। उन्होंने यहोवा को भेंट चढ़ाई, किन्तु उन्होंने उस आग का उपयोग किया जिसके लिए यहोवा ने आज्ञा नहीं दी थी। इस प्रकार नादाब और अबीहू वहीं सीनै की मरुभूमि में मर गए। उनके पुत्र नहीं थे, अत: एलीआज़ार और ईतामार याजक बने और यहोवा की सेवा करने लगे। वे यह उस समय तक करते रहे जब तक उनका पिता हारून जीवित था।

लेवीवंशी-याजकों के सहायक

5यहोवा ने मूसा से कहा, "6लेवी के परिवार समूह के सभी लोगों को याजक हारून के सामने लाओ। वे लोग हारून के सहायक होंगे। 7लेवीवंशी हारून की उस समय सहायता करेंगे जब वह मिलापवाले तम्बू में सेवा करेगा और लेवीवंशी इस्राएल के सभी लोगों की उस समय सहायता करेंगे जिस समय वे पवित्र तम्बू में उपासना

करने आएंगे। 8इस्राएल के लोग मिलापवाले तम्बू की
हर एक चीज़ की रक्षा करेंगे, यह उनका कर्तव्य है।
किन्तु इन चीज़ों की देखभाल करके ही लेवीवंश के
लोग इस्राएल के लोगों की सेवा करेंगे। पवित्र तम्बू में
उपासना करने की उनकी यही पद्धति होगी।

9"इस्राएल के सभी लोगों में से लेवीवंशी चुने गए थे।
ये लेवी, हारून और उसके पुत्रों की सहायता के लिए
चुने गए थे।

10"तुम हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त
करोगे। वे अपना कर्तव्य पूरा करेंगे और याजक के
रूप में सेवा करेंगे। कोई अन्य व्यक्ति जो पवित्र चीज़ों
के समीप आने का प्रयत्न करता है,* मार दिया जाना
चाहिए।"

11यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 12"मैंने तुमसे कहा
कि इस्राएल का हर एक परिवार अपना पहलौठा पुत्र
मुझ को देगा, किन्तु अब मैं लेवीवंश को अपनी सेवा
के लिए चुन रहा हूँ। वे मेरे होंगे। अत: इस्राएल के सभी
अन्य लोगों को अपना पहलौठा पुत्र मुझको नहीं देना
पड़ेगा।

13"जब तुम मिस्र में थे, मैंने मिस्र के लोगों के पहलौठों
को मार डाला था। उस समय मैंने इस्राएल के सभी
पहलौठों को अपने लिए लिया। सभी पहलौठे बच्चे और
सभी पहलौठे जानवर मेरे हैं। किन्तु अब मैं तुम्हारे
पहलौठे बच्चों को तुम्हें वापस करता हूँ और लेवीवंश
को अपना बनाता हूँ। मैं यहोवा हूँ।"

14यहोवा ने फिर सीनै की मरुभूमि में मूसा से बात
की। यहोवा ने कहा, 15"लेवीवंश के सभी परिवार
समूहों और परिवारों को गिनो। प्रत्येक पुरुष या लड़कों
को जो एक महीने या उससे अधिक के हैं, उनको
गिनो।" 16अत: मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने
उन सभी को गिना।

17लेवी के तीन पुत्र थे: उनके नाम थे: गेर्शोन, कहात
और मरारी। 18हर एक पुत्र परिवार समूहों का नेता
था।

गेर्शोन के परिवार समूह थे: लिब्नी और शिमी।

19कहात के परिवार समूह थे: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन,
उज्जीएल।

20मरारी के परिवार समूह थे: महली और मूशी। ये
ही वे परिवार थे जो लेवी के परिवार समूह से सम्बन्धित
थे।

21लिब्नी और शिमियों के परिवार गेर्शोन के परिवार
समूह से सम्बन्धित थे। वे गेर्शोनवंशी परिवार समूह थे।
22इन दोनों परिवार समूहों में एक महीने से अधिक उम्र
के लड़के या पुरुष सात हजार पाँच सौ थे। 23गेर्शोन वंश
के परिवार समूहों को पश्चिम में डेरा लगाने के लिये
कहा गया। उन्होंने पवित्र तम्बू के पीछे अपना डेरा
लगाया। 24गेर्शोन वंश के परिवार समूहों का नेता लाएल
का पुत्र एल्यासाप था। 25मिलापवाले तम्बू में गेर्शोन
वंशी लोग पवित्र तम्बू, आच्छादन और बाहरी तम्बू की
देखभाल का कार्य करने वाले थे। वे मिलापवाले तम्बू
के प्रवेश द्वार के पर्दे की भी देखभाल करते थे। 26वे
आँगन के पर्दे की देखभाल करते थे। वे आँगन के द्वार
के पर्दे की भी देखभाल करते थे। यह आँगन पवित्र
तम्बू और वेदी के चारों ओर था। वे रस्सियों और पर्दे
के लिए काम में आने वाली हर एक चीज़ की देखभाल
करते थे।

27अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों और उज्जीएल के
परिवार कहात के परिवार से सम्बन्धित थे। वे कहात
परिवार समूह के थे। 28इस परिवार समूह में एक महीने
या उससे अधिक उम्र के लड़के और पुरुष आठ हजार
छ: सौ थे। कहात वंश के लोगों को पवित्र स्थान की
देखभाल का कार्य सौंपा गया। 29कहात के परिवार
समूहों को "पवित्र तम्बू" के दक्षिण का क्षेत्र दिया गया।
यह वह क्षेत्रथा जहाँ उन्होंने डेरे लगाए।30कहात के
परिवार समूह का नेता उज्जीएल का पुत्र एलीसापान था।
31उनका कार्य पवित्र सन्दूक, मेज, दीपाधार, वेदियों
और पवित्र स्थान के उपकरणों की देखभाल करना
था। वे पर्दे और उनके साथ उपयोग में आने वाली सभी
चीज़ों की भी देखभाल करते थे। 32लेवीवंश के प्रमुखों
का नेता हारून का पुत्र एलीआज़ार था। वह याजक
था। एलीआज़ार पवित्र चीज़ों की देखभाल करने वाले
सभी लोगों का अधीक्षक था।

33-34महली और मूशियों के परिवार समूह मरारी
परिवार से सम्बन्धित थे। एक महीने या उससे अधिक
उम्र के लड़के और पुरुष महली परिवार समूह में छ:
हजार दो सौ थे। 35मरारी समूह का नेता अबीहैल का
पुत्र सूरीएल था। इस परिवार समूह को पवित्र तम्बू के
उत्तर का क्षेत्र दिया गया था। यही वह क्षेत्र है जहाँ
उन्होंने डेरा लगाया। 36मरारी लोगों को पवित्र तम्बू के
ढाँचे की देखभाल का कार्य सौंपा गया। वे सभी छड़ों,
खम्बों, आधारों और पवित्र तम्बू के ढाँचे में जो कुछ
लगा था, उन सब की देखभाल करते थे। 37पवित्र तम्बू
के चारों ओर के आँगन के सभी खम्भों की भी देखभाल
किया करते थे। इनमें सभी आधार, तम्बू की खूँटियाँ
और रस्सियाँ शामिल थीं।

38मूसा, हारून और उसके पुत्रों ने मिलापवाले तम्बू
के सामने पवित्र तम्बू के पूर्व में अपने डेरे लगाए। उन्हें
पवित्र स्थान की देखभाल का काम सौंपा गया। उन्होंने
यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए किया। कोई दूसरा
व्यक्ति जो पवित्र स्थान के समीप आता, मार दिया जाता
था। 39यहोवा ने लेवी परिवार समूह के एक महीने या

कोई ... करता है या, "याजक के रूप में सेवा करना चाहता है।"

उससे अधिक उम्र के लड़कों और पुरुषों को गिनने का आदेश दिया। सारी संख्या बाइस हजार थी।

लेवीवंशी पहलौठे पुत्र का स्थान लेते हैं

40यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएल में सभी एक महीने या उससे अधिक उम्र के पहलौठे लड़के और पुरुषों को गिनो। उनके नामों की एक सूची बनाओ। 41अब मैं इस्राएल के सभी पहलौठे लड़कों और पुरुषों को नहीं लूँगा। अब मैं अर्थात् यहोवा लेवीवंशी को ही लूँगा। इस्राएल के अन्य सभी लोगों के पहलौठे जानवरों को लेने के स्थान पर अब मैं लेवीवंश के लोगों के पहलौठे जानवरों को ही लूँगा।"

42इस प्रकार मूसा ने वह किया जो यहोवा ने आदेश दिया। मूसा ने इस्राएल के पहलौठी सारी सन्तानों को गिना। 43मूसा ने सभी पहलौठे एक महीने या उससे अधिक उम्र के लड़कों और पुरुषों की सूची बनाई। उस सूची में बाइस हजार दो सौ तिहत्तर नाम थे।

44यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 45"मैं अर्थात् यहोवा यह आदेश देता हूँ: 'इस्राएल के अन्य परिवारों के पहलौठे पुरुषों के स्थान पर लेवीवंश के लोगों को लो और मैं अन्य लोगों के जानवरों के स्थान पर लेवीवंश के जानवरों को लूँगा। लेवीवंशी मेरे हैं। 46लेवीवंश के लोग बाइस हजार हैं और अन्य परिवारों के बाइस हजार दो सौ तिहत्तर पहलौठे पुत्र हैं। इस प्रकार केवल दो सौ तिहत्तर पहलौठे पुत्र लेवीवंश के लोगों से अधिक हैं। 47इसलिए पहलौठे दो सौ तिहत्तर पुत्रों में से हर एक के लिए पाँच शेकेल* चाँदी दो। यह चाँदी इस्राएल के लोगों से इकट्ठा करो। 48वह चाँदी हारून और उसके पुत्रों को दो। यह इस्राएल के दो सौ तिहत्तर लोगों के लिए भुगतान है।'"

49मूसा ने दो सौ तिहत्तर लोगों के लिए धन इकट्ठा किया। क्योंकि यहाँ इतने लेवी नहीं थे जो दूसरे परिवार समूह के दो सौ तिहत्तर पहलौठों की जगह ले सकें। 50मूसा ने इस्राएल के पहलौठे लोगों से चाँदी इकट्ठा की। उसने एक हजार तीन सौ पैंसठ शेकेल चाँदी "अधिकृत भार" का उपयोग करके इकट्ठा की। 51मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। मूसा ने यहोवा के आदेश के अनुसार वह चाँदी हारून और उसके पुत्रों को दी।

कहात परिवार के सेवा–कार्य

4 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा: 2"कहात परिवार समूह के पुरुषों को गिनो। (कहात परिवार समूह लेवी परिवार समूह का एक भाग है।) 3अपने सेवा कर्तव्य का निर्वाह करने वाले तीस से पचास वर्ष की उम्र वाले पुरुषों को गिनो। ये व्यक्ति मिलापवाले तम्बू में कार्य करेंगे। 4उनका कार्य मिलापवाले तम्बू के सर्वाधिक पवित्र स्थान की देखभाल करना है।

5"जब इस्राएल के लोग नए स्थान की यात्रा करें तो हारून और उसके पुत्रों को चाहिए कि वे पवित्र तम्बू में जाएँ और पर्दे को उतारें और साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक को उससे ढकें। 6तब वे इन सबको सुइसों के चमड़े से बने आवरण में ढकें। तब वे पवित्र सन्दूक पर बिछे चमड़े पर पूरी तरह से एक नीला वस्त्र फैलाएंगे और पवित्र सन्दूक में लगे कड़ों में डंडे डालेंगे।

7"तब वे एक नीला कपड़ा पवित्र मेज के ऊपर फैलाएंगे। तब वे उस पर थाली, चम्मच, कटोरे और पेय भेंट के कलश रखेंगे। वे विशेष रोटी भी मेज पर रखेंगे। 8तब तुम इन सभी चीज़ों के ऊपर एक लाल कपड़ा डालोगे। तब हर एक चीज़ को सुइसों के चमड़े से ढक दो। तब मेज के कड़ों में डंडे डालो।

9"तब दीपाधार और दीपकों को नीले कपड़े से ढको। दीपक जलने के लिए उपयोग में आनेवाली सभी चीज़ों और दीपक के लिए उपयोग में आने वाले तेल के सभी घड़ों को ढको। 10तब सभी चीज़ों को सुइसों के चमड़े में लपेटो और इन्हें ले जाने के लिये उपयोग में आने वाले डंडों पर इन्हें रखो।

11"सुनहरी वेदी पर एक नीला कपड़ा फैलाओ। उसे सुइसों के चमड़े से ढको। तब वेदी को ले जाने के लिए उसमें लगे हुए कड़ों में डंडे डालो।

12"पवित्र स्थान में उपासना के उपयोग में आने वाली सभी विशेष चीज़ों को एक साथ इकट्ठा करो। इन्हें एक साथ इकट्ठा करो और इनको नीले कपड़े में लपेटो। तब इसे सुइसों के चमड़े से ढको। इन चीज़ों को ले जाने के लिए इन्हें एक ढाँचे पर रखो।

13"काँसेवाली वेदी से राख को साफ कर दो और इसके ऊपर एक बैंगनी रंग का कपड़ा फैलाओ। 14तब वेदी पर उपासना के लिए उपयोग में आने वाली चीज़ों को इकट्ठा करो। आग के तसले, माँस के लिए काँटे, बेलचे और चिलमची हैं। इन चीज़ों को काँसे की वेदी पर रखो। तब वेदी के ऊपर सुइसों के चमड़े का आवरण फैलाओ। वेदी में लगे कड़ों में, इसे ले जाने वाले डंडेडालो।

15"जब हारून और उसके पुत्र पवित्र स्थान की सभी पवित्र चीज़ों को ढकना पूरा कर लें तब कहात परिवार के व्यक्ति अन्दर आ सकते हैं और उन चीज़ों को ले जाना आरम्भ कर सकते हैं। इस प्रकार वे इस पवित्र वस्तुओं को छुएंगे नहीं। सो वे मरेंगे नहीं। 16याजक हारून का पुत्र एलीआज़ार पवित्र तम्बू के लिए उत्तरदायी होगा। वह पवित्र स्थान और इसकी हर एक चीज़ के लिए उत्तरदायी होगा। वह दीपक के तेल, मधुर सुगन्धवाली सुगन्धि तथा दैनिक बलि और अभिषेक के तेल के लिये उत्तरदायी होगा।"

पाँच शेकेल या, "दो औंस"

17यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 18“सावधान
रहो! इन कहातवंशी व्यक्तियों को नष्ट मत होने दो।
19तुम्हें यह इसलिए करना चाहिए ताकि कहातवंशी
सर्वाधिक पवित्र स्थान तक जाएँ और मरें नहीं: हारून
और उसके पुत्रों को अन्दर जाना चाहिए और हर एक
कहातवंशी को बताना चाहिए कि वह क्या करे। उन्हें
हर एक व्यक्ति को वह चीज़ देनी चाहिए जो उसे ले
जानी है। 20यदि तुम ऐसा नहीं करते हो तो कहातवंशी
अन्दर जा सकते हैं और पवित्र चीज़ों को देख सकते हैं।
यदि वे एक क्षण के लिए भी उन पवित्र वस्तुओं की
ओर देखते हैं तो उन्हें मरना होगा।”

गेर्शोन परिवार के सेवा-कार्य

21यहोवा ने मूसा से कहा, 22“गेर्शोन परिवार के सभी
लोगों को गिनो। उनकी सूची परिवार और परिवार
समूह के अनुसार बनाओ। 23अपना सेवा कर्तव्य कर
चुकने वाले तीस वर्ष से पचास वर्ष तक के पुरुषों को
गिनो। ये लोग मिलापवाले तम्बू की देखभाल का
सेवा-कार्य करेंगे।

24“गेर्शोन परिवार को यही करना चाहिए और इन्हीं
चीजों को ले चलना चाहिए: 25इन्हें पवित्र तम्बू के पर्दे,
मिलापवाले तम्बू, इसके आवरण और सुइसों के चमड़े
से बना आवरण ले चलना चाहिए। उन्हें मिलापवाले
तम्बू के द्वार के पर्दे भी ले चलना चाहिए। 26उन्हें
आँगन के उन पर्दों को, जो पवित्र तम्बू और वेदी के
चारों ओर लगे हैं, ले चलना चाहिए। उन्हें आँगन के
प्रवेश द्वार का पर्दा भी ले चलना चाहिए। उन्हें सारी
रस्सियाँ और पर्दे के साथ उपयोग में आनेवाली सभी
चीज़ें ले चलनी चाहिए। गेर्शोन वंश के लोग उस किसी
भी चीज़ के लिए उत्तरदायी होंगे जो इन चीज़ों से की
जानी है। 27हारून और उसके पुत्र इन सभी किए गए
कार्यों की निगरानी करेंगे। गेर्शोन वंश के लोग जो कुछ
ले जाएंगे और जो दूसरे कार्य करेंगे उनकी निगरानी
हारून और उसके पुत्र करेंगे। तुम्हें उनको वे सभी
चीज़ें बतानी चाहिए जिनके ले जाने के लिये वे उत्तरदायी
हैं। 28यही काम है जिसे गेर्शोन वंश के परिवार समूह
के लोगों को मिलापवाले तम्बू के लिए करना है। हारून
का पुत्र ईतामार याजक उनके काम के लिए उत्तरदायी
होगा।”

मरारी परिवार के सेवा-कार्य

29“मरारी परिवार समूह के परिवार और परिवार
समूह के पुरुषों को गिनो। 30सेवा-कर्तव्य कर चुके
तीस से पचास वर्ष के सभी पुरुषों को गिनो। ये लोग
मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करेंगे। 31जब तुम
यात्रा करोगे तब उनका यह कार्य है कि वे मिलापवाले
तम्बू के तख्ते ले चलें। उन्हें तख़्ते, खम्भों और आधारों
को ले चलना चाहिए। 32उन्हें आँगन के चारों ओर के
खम्भों को भी ले चलना चाहिए। उन्हें उन तम्बू की
खूंटियों, रस्सियों और वे सभी चीज़ें जिनका उपयोग
आँगन के चारों ओर के खम्भों के लिए होता है, ले
चलना चाहिए। नामों की सूची बनाओ और हर एक
व्यक्ति को बताओ कि उसे क्या-क्या चीज़ें ले जाना है।
33यही बातें हैं जिसे मरारी वंश के लोग मिलापवाले तम्बू
के कार्यों में सेवा करने के लिए करेंगे। हारून का पुत्र
ईतामार याजक इनके कार्य के लिए उत्तरदायी होगा।”

लेवी परिवार

34मूसा, हारून और इस्राएल के लोगों के नेताओं ने
कहातवंश के लोगों को गिना। उन्होंने इनको परिवार
और परिवार समूह के अनुसार गिना। 35उन्होंने अपना
सेवा-कर्तव्य कर चुके तीस से पचास वर्ष के उम्र के
लोगों को गिना। इन लोगों को मिलापवाले तम्बू के लिए
विशेष कार्य करने को दिए गए।

36कहात परिवार समूह में जो इस कार्य को करने
की योग्यता रखते थे, दो हजार सात सौ पचास पुरुष थे।
37इस प्रकार कहात परिवार के इन लोगों को मिलापवाले
तम्बू के विशेष कार्य करने के लिए दिए गए। मूसा और
हारून ने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा से
करने को कहा था। 38गेर्शोन परिवार समूह को भी
गिना गया। 39सभी पुरुष जो अपना कर्तव्य सेवा कर
चुके थे और तीस से पचास वर्ष की उम्र के थे, गिने
गए। इन लोगों को मिलापवाले तम्बू में विशेष कार्य
करने का सेवा-कार्य दिया गया। 40गेर्शोन परिवार समूह
के परिवारों में जो योग्य थे, वे दो हजार छः सौ तीस
पुरुष थे। 41इस प्रकार इन पुरुषों को जो गेर्शोन परिवार
समूह के थे, मिलापवाले तम्बू में विशेष कार्य करने का
सेवा-कार्य सौंपा गया। मूसा और हारून ने इसे वैसे ही
किया जैसा यहोवा ने मूसा को करने को कहा था।

42मरारी के परिवार और परिवार समूह भी गिने
गए। 43सभी पुरुष जो अपना सेवा-कर्तव्य कर चुके थे
और तीस से पचास वर्ष की उम्र के थे, गिने गए। इन
व्यक्तियों को मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य
करने का सेवा-कार्य दिया गया। 44मरारी परिवार समूह
के परिवारों में जो लोग योग्य थे, वे तीन हजार दो सौ
व्यक्ति थे। 45इस प्रकार मरारी परिवार समूह के इन
लोगों को विशेष कार्य दिया गया। मूसा और हारून ने
इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा से करने को
कहा था।

46मूसा, हारून और इस्राएल के लोगों के नेताओं ने
लेवीवंश परिवार समूह के सभी सदस्यों को गिना।
उन्होंने प्रत्येक परिवार और प्रत्येक परिवार समूह को
गिना। 47सभी व्यक्ति जो अपने सेवा-कर्तव्य का निर्वाह
कर चुके थे और जो तीस वर्ष से पचास वर्ष उम्र के थे,

गिने गए। इन व्यक्तियों को मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करने का सेवा-कार्य दिया गया। उन्होंने मिलापवाले तम्बू को ले चलने का कार्य तब किया जब उन्होंने यात्रा की। 48पुरुषों की सारी संख्या आठ हजार पाँच सौ अस्सीथी।

49यहोवा ने यह आदेश मूसा को दिया था। हर एक पुरुष को अपना कार्य दिया गया था और हर एक पुरुष से कहा गया था कि उसे क्या-क्या ले चलना चाहिए। इसलिए यहोवा ने जो आदेश दिया था उन चीज़ों को पूरा किया गया। सभी पुरुषों को गिना गया।

शुद्धता सम्बन्धी नियम

5 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"मैं इस्राएल के लोगों को, उनके डेरे बीमारियों व रोगों से मुक्त रखने का आदेश देता हूँ। इस्राएल के लोगों से कहो कि हर उस व्यक्ति को जो बुरे चर्म रोगों, शरीर से निकलने वाले स्रावों या किसी शव को छूने के कारण अशुद्ध हो गये हैं, उन्हें डेरे से बाहर निकाल दें, 3चाहे वे पुरुष हो चाहे स्त्री। उन्हें डेरे से बाहर निकाल दें ताकि वे जिस डेरे में मेरा निवास है उसे वे अशुद्ध न कर दें। मैं तुम्हारे डेरे में तुम लोगों के बीच रह रहा हूँ।"

4अत: इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर का आदेश माना। उन्होंने उन लोगों को डेरे के बाहर भेज दिया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

अपराध के लिए अर्थ-दण्ड

5यहोवा ने मूसा से कहा, 6"इस्राएल के लोगों को यह बताओ: जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति का कुछ बुरा करता है तो वस्तुत: वह यहोवा के विरुद्ध पाप करता है। वह व्यक्ति अपराधी है। 7इसलिए वह व्यक्ति लोगों को अपने किए गए पाप को बताए। तब यह व्यक्ति अपने बुरे किए गए काम का पूरा भुगतान करे। वह भुगतान में पाँचवाँ हिस्सा जोड़े और उसका भुगतान उसे करे जिसका बुरा उसने किया है। 8किन्तु जिस व्यक्ति का उसने बुरा किया है, वह मर भी सकता है और सम्भव है उस मृतक का कोई नजदीकी सम्बन्धी न हो जिसे भुगतान किया जाए। उस स्थिति में, बुरा करने वाला व्यक्ति यहोवा को भुगतान करेगा। वह व्यक्ति पूरा भुगतान याजक को करेगा। याजक को क्षमादान रूपी मेढ़े की बलि देनी चाहिए। बुरा करने वाले व्यक्ति के पापों को ढकने के लिए इस मेढ़े की बलि दी जानी चाहिए किन्तु याजक बाकी बचे भुगतान को अपने पास रख सकता है।

9"यदि इस्राएल का कोई व्यक्ति यहोवा को विशेष भेंट देता है तो वह याजक जो उसे स्वीकार करता है उसे अपने पास रख सकता है। यह उसकी है। 10किसी व्यक्ति को ये विशेष भेंट देनी नहीं पड़ेगी। किन्तु यदि वह उनको देता है तो वह याजक की होगी।"

शंकालु पति

11तब यहोवा ने मूसा से कहा: 12"इस्राएल के लोगों से यह कहो, किसी व्यक्ति की पत्नी पतिव्रता नहीं भी हो सकती है। 13उस का किसी दूसरे व्यक्ति के साथ शारीरिक सम्बन्ध हो सकता है और वह इसे अपने पति से छिपा सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी नहीं होता जो कहे कि उसने यह पाप किया। उसका पति उसे कभी जान भी नहीं सकता जो बुराई उसने की है और वह स्त्री भी अपने पति से अपने पाप के बारे में नहीं कहेगी। 14किन्तु पति शंका करना आरम्भ कर सकता है कि उसकी पत्नी ने उसके विरुद्ध पाप किया है। वह उसके प्रति ईर्ष्या रख सकता है। चाहे वह सच्ची हो चाहे नहीं। 15यदि ऐसा होता है तो वह अपनी पत्नी को याजक के पास ले जाए। पति एक भेंट भी ले जाएगा। यह भेंट 1/10 एपा* जौ का आटा होगा। उसे जौ के आटे पर तेल या सुगन्धि नहीं डालनी चाहिये। यह जौ का आटा यहोवा को अन्नबलि है। यह इसलिए दिया जाता कि पति ईर्ष्यालु है। यह भेंट यह संकेत करेगी कि उसे विश्वास है कि उसकी पत्नी पतिव्रता नहीं है।

16"याजक स्त्री को यहोवा के सामने ले जाएगा और स्त्री यहोवा के सामने खड़ी होगी। 17तब याजक कुछ विशेष पानी लेगा और उसे मिट्टी के घड़े में डालेगा। याजक पवित्र तम्बू के फर्श से कुछ मिट्टी पानी में डालेगा। 18याजक स्त्री को यहोवा के सामने खड़ा रहने के लिए विवश करेगा। तब वह उसके बाल खोलेगा और उसके हाथ में अन्नबलि देगा। यह जौ का आटा होगा जिसे उसके पति ने ईर्ष्या के कारण उसे दिया था। उसी समय वह विशेष कड़वे जल वाले मिट्टी के घड़े को पकड़े रहेगा। यह विशेष कड़वा जल ही है जो स्त्री को परेशानी पैदा करता है।

19"तब याजक स्त्री से कहेगा कि उसे झूठ नहीं बोलना चाहिए। उसे सत्य बोलने का वचन देना चाहिए। याजक उससे कहेगा: 'यदि तुम दूसरे व्यक्ति के साथ नहीं सोई हो, और तुमने अपने पति के विरुद्ध पाप नहीं किया है, जबकि तुम्हारा विवाह उसके साथ हुआ है, तो यह कड़वा जल तुमको हानि नहीं पहुँचाएगा। 20किन्तु यदि तुमने अपने पति के विरुद्ध पाप किया है, यदि तुम किसी अन्य पुरुष के साथ सोई हो तो तुम शुद्ध नहीं हो। क्यों? क्योंकि जो तुम्हारे साथ सोया है तुम्हारा पति नहीं है और उसने तुम्हें अशुद्ध बनाया है। 21इसलिए जब तुम इस विशेष जल को पीओगी तो तुम्हें बहुत परेशानी होगी। तुम्हारा पेट फूल जाएगा* और तुम कोई बच्चा

1/10 एपा शाब्दिक आठ प्याला।

पेट फूल जायेगा शाब्दिक, "तुम्हारा गर्भपात होगा।"

उत्पन्न नहीं कर सकोगी। यदि तुम गर्भवती हो, तो तुम्हारा बच्चा मर जाएगा। तब तुम्हारे लोग तुम्हें छोड़ देंगे और वे तुम्हारे बारे में बुरी बातें कहेंगे।’

“तब याजक को स्त्री से यहोवा को विशेष वचन देने के लिए कहना चाहिए। स्त्री को स्वीकार करना चाहिए कि ये बुरी बातें उसे होगी, यदि वह झूठ बोलेगी। **22**याजक को कहना चाहिए, ‘तुम इस जल को लोगी जो तुम्हारे शरीर में परेशानी उत्पन्न करेगा। यदि तुमने पाप किया है तो तुम बच्चों को जन्म नहीं दे सकोगी और यदि तुम्हारा कोई बच्चा गर्भ में है तो वह जन्म लेने के पहले मर जाएगा।’ तब स्त्री को कहना चाहिए: ‘मैं वह स्वीकार करती हूँ जो आप कहते हैं।’

23“याजक को इन चेतावनियों को चर्म–पत्र पर लिखनी चाहिए। फिर उसे इस लिखावट को पानी में धो देना चाहिए। **24**तब स्त्री उस पानी को पीएगी जो कड़वा है। वह पानी उसमें जाएगा और यदि वह अपराधी है, तो उसे बहुत परेशानी उत्पन्न करेगा।

25“तब याजक उस अन्नबलि को उससे लेगा। ईर्ष्या के लिए भेंट और उसे यहोवा के सामने उठाएगा और उसे वेदी तक ले जाएगा।

26तब याजक अपनी अंजली में अन्न भरेगा और उसे वेदी पर रखेगा। तब वह उसे जलाएगा। उसके बाद, वह स्त्री से पानी पीने को कहेगा। **27**यदि स्त्री ने पति के विरुद्ध पाप किया होगा, तो पानी उसे परेशान करेगा। पानी उसके शरीर में जाएगा और उसे बहुत कष्ट देगा और कोई बच्चा जो उसके गर्भ में होगा, पैदा होने से पहले मर जाएगा और वह कभी बच्चे को जन्म नहीं दे सकेगी। सभी लोग उसके विरुद्ध हो जायेंगे। **28**किन्तु यदि स्त्री ने पति के विरुद्ध पाप नहीं किया है तो वह पवित्र है, फिर याजक घोषणा करेगा कि वह अपराधी नहीं है और बच्चों को जन्म देने के योग्य हो जाएगी।

29“इस प्रकार यह ईर्ष्या के विषय में नियम है। तुम्हें यही करना चाहिए यदि कोई विवाहित स्त्री अपने पति के विरुद्ध पाप करती है। **30**या यदि कोई व्यक्ति ईर्ष्या करता है और अपनी पत्नी के सम्बन्ध में शंका करता है कि उसने उसके विरुद्ध पाप किया है तो व्यक्ति को यही करना चाहिए। याजकको कहना चाहिए कि वह स्त्री यहोवा के सामने खड़ी हो। तब याजक इन सभी कार्यों को करेगा। यही नियम है। **31**पति कोई बुरा करने का अपराधी नहीं होगा। किन्तु स्त्री कष्ट उठाएगी, यदि उसने पाप किया है।”

नाज़ीरों का वंश

6 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**“ये बातें इस्राएल के लोगों से कहो: कोई पुरुष या स्त्री कुछ समय के लिए किन्हीं अन्य लोगों से अलग रहना चाह सकता है। इस अलगाव का उद्देश्य यह हो कि वह व्यक्ति पूरी तरह अपने को उस समय के लिए यहोवा को समर्पित कर सके। वह व्यक्ति नाज़ीर कहलाएगा। **3**उस काल में व्यक्ति को कोई दाखमधु या कोई अधिक नशीली चीज़ नहीं पीनी चाहिए। व्यक्ति को सिरका जो दाखमधु से बना हो या किसी अधिक नशीले पेय को नहीं पीना चाहिए। उस व्यक्ति को अंगूर का रस नहीं पीना चाहिए और न ही अंगूर या किशमिश खाने चाहिए। **4**उस अलगाव के विशेष काल में उस व्यक्ति को अंगूर से बनी कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए। उस व्यक्ति को अंगूर का बीज या छिलका भी नहीं खाना चाहिए।

5“उस अलगाव के काल में उस व्यक्ति को अपने बाल नहीं काटने चाहिए। उस व्यक्ति को उस समय तक पवित्र रहना चाहिए जब तक अलगाव का समय समाप्त न हो। उसे अपने बालों को लम्बे होने देना चाहिए। उस व्यक्ति के बाल, परमेश्वर को दिए गये उसके वचन का एक विशेष भाग है। वह उन बालों को परमेश्वर के लिए भेंट के रूप में देगा। इसलिए वह व्यक्ति अपने बालों को तब तक लम्बा होने देगा जब तक अलगाव का समय समाप्त न होगा।

6“इस अलगाव के काल में नाज़ीर को किसी शव के पास नहीं जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने अपने को पूरी तरह यहोवा को समर्पित कर दिया है। **7**यदि उसके अपने पिता, अपनी माता, अपने भाई या अपनी बहन भी मरें तो भी उसे उनको छूना नहीं चाहिए। यह उसे अपवित्र करेगा। उसे यह दिखाना चाहिए कि उसे अलग किया गया है और अपने को पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित कर चुका है। **8**जिस पूरे काल में वह अलग किया गया, वह पूरी तरह अपने को यहोवा को समर्पित किए हुए है।

9“यह संभव है कि नाज़ीर किसी दूसरे व्यक्ति के साथ हो और वह दूसरा व्यक्ति अचानक मर जाए। यदि नाज़ीर मरे व्यक्ति को छुएगा तो वह अपवित्र हो जाएगा। यदि ऐसा होता है तो नाज़ीर को सिर से अपने बाल कटवा लेना चाहिए। वे बाल उसके विशेष दिए गए वचन के भाग थे। उसे अपने बालों को सातवें दिन काटना चाहिए क्योंकि उस दिन वह पवित्र किया जाता है। **10**तब आठवें दिन उसे दो फ़ाख्ते या कबूतर के दो बच्चे याजक के पास लाने चाहिए। उसे याजक को उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर देना चाहिए। **11**तब याजक एक को पापबलि के रूप में भेंट करेगा। वह दूसरे को होमबलि के रूप में भेंट करेगा। यह होमबलि उस व्यक्ति द्वारा किये गये पाप के लिए भुगतान होगी। उसने पाप किया क्योंकि वह शव के पास था। उस समय वह व्यक्ति फिर वचन देगा कि सिर के बालों को परमेश्वर को भेंट करेगा। **12**इसका यह तात्पर्य हुआ कि उस व्यक्ति को फिर अलगाव के दूसरे समय के लिए अपने

आपको यहोवा को समर्पित कर देना चाहिए। उस व्यक्ति को एक वर्ष का एक मेढ़ा लाना चाहिए। वह इसे पाप के लिए भेंट के रूप में देगा। उसके अलगाव के सभी दिन भुला दिये जाते हैं। उस व्यक्ति को नये अलगाव के समय का आरम्भ करना होगा। यह अवश्य किया जाना चाहिए क्योंकि उसने अलगाव के प्रथम काल में एक शव का स्पर्श किया। 13जब व्यक्ति के अलगाव का समय पूरा हो तो उसे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाना चाहिए। 14वहाँ वह अपनी भेंट यहोवा को देगा। उसकी भेंट होनी चाहिए:

होमबलि के लिए बिना दोष का एक वर्ष का एक मेढ़ा; पापबलि के लिए बिना दोष की एक वर्ष की एक मादा भेड़; मेलबलि के लिए बिना दोष का एक नर भेड़;

15अखमीरी रोटियों की एक टोकरी, (तेल से मिश्रित अच्छे आटे के फुलके इन "फुलकों" पर तेल लगाना चाहिए।) अन्य भेंट तथा पेय भेंट जो इन भेंटों का एक भाग है।

16"तब याजक इन चीज़ों को यहोवा को देगा। याजक पापबलि और होमबलि चढ़ाएगा। 17याजक रोटियों की टोकरी यहोवा को देगा। तब वह यहोवा की मेलबलि के रूप में नर भेड़ को मारेगा। वह यहोवा को अन्नबलि और पेय भेंट के साथ इसे देगा। 18नाज़ीर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाना चाहिए। वहाँ उसे अपने बाल कटवाने चाहिए जिन्हें उसने यहोवा के लिए बढ़ाया था। उन बालों को मेलबलि के रूप में दी गई बलि के नीचे जल रही आग में डाला जाना चाहिए।

19"जब नाज़ीर अपने बालों को काट चुकेगा तो याजक उसे नर मेढ़ का एक पका हुआ कंधा और टोकरी से एक बड़ा और एक छोटा "फुलका" देगा। ये दोनों अख़मीरी फुलके होंगे।20तब याजक इन चीज़ों को यहोवा के सामने उत्तोलित करेगा। यह एक उत्तोलन भेंट हैं। ये चीज़ें पवित्र हैं और याजक की हैं। नर भेड़ की छाती और जांघ भी यहोवा के सामने उत्तोलित किये जाएंगे। ये चीज़ें भी याजक की हैं। इसके बाद नाज़ीर दाखमधु पी सकता है।

21"यह नियम उन व्यक्तियों के लिए है जो नाज़ीर होने का वचन लेते हैं। उस व्यक्ति को यहोवा को ये सभी भेंटे देनी चाहिए यदि कोई व्यक्ति अधिक देने का वचन देता है तो उसे अपने वचन का पालन करना चाहिए। लेकिन उसे कम से कम वह सभी चीज़ें देनी चाहिए जो नाज़ीर के नियम में लिखी हैं।

याजक का आशीर्वाद

22यहोवा ने मूसा से कहा, 23"हारून और उसके पुत्रों से कहो। इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद देने का ढंग यह है। उन्हें कहना चाहिए:

24यहोवा तुम पर कृपा करे और तुम्हारी रक्षा करे।

25यहोवा की कृपादृष्टि तुम पर प्रकाशित हो। वह तुमसे प्रेम करे।

26 यहोवा की दृष्टि तुम पर हो। वह तुम्हें शान्ति दे।"

27तब यहोवा ने कहा, "इस प्रकार हारून और उसके पुत्र इस्राएल के लोगों के सामने मेरा नाम लेंगे और मैं उन्हें आशीर्वाद दूँगा।"

पवित्र तम्बू का समर्पण

7 जिस दिन मूसा ने पवित्र तम्बू का लगाना पूरा किया, उसने इसे यहोवा को समर्पित किया। मूसा ने तम्बू और इसमें उपयोग आने वाली चीज़ों को अभिषिक्त किया। मूसा ने वेदी और इसके साथ उपयोग में आने वाली चीज़ों को भी अभिषिक्त किया। ये दिखाती थी कि ये सभी वस्तुएं केवल यहोवा की उपासना के लिये प्रयोग की जानी चाहिए।

2तब इस्राएल के नेताओं ने भेंटे चढ़ाई। ये अपने-अपने परिवारों के मुखिया थे जो अपने परिवार समूह के नेता थे। इन्हीं नेताओं ने लोगों को गिना था। 3ये नेता यहोवा के लिये भेंटे लाए। वे चारों ओर से ढकी छ: गाड़ियाँ और बारह गायें लाए। (हर एक नेता द्वारा एक गाय दी गई थी। हर नेता ने दूसरे नेता से चारों ओर से ढकी गाड़ी को देने में साझा किया।) नेताओं ने पवित्र तम्बू पर यहोवा को ये चीज़ें दीं।

4यहोवा ने मूसा से कहा, 5"नेताओं की इन भेंटों को स्वीकार करो। ये भेंटें मिलापवाले तम्बू के काम में उपयोग की जा सकती हैं। इन चीज़ों को लेवीवंश के लोगों को दो। यह उन्हें अपने काम करने में सहायक होंगी।"

6इसलिए मूसा ने चारों ओर से ढकी गाड़ियों और गायों को लिया। उसने इन चीज़ों को लेवीवंश के लोगों को दिया। 7उसने दो गाड़ियाँ और चार गायें गेर्शोन वंशियों को दीं। उन्हें अपने काम के लिए उन गाड़ियों और गायों की आवश्यकता थी। 8तब मूसा ने चार गाड़ियों और आठ गायें मरारी वंश को दीं। उन्हें अपने काम के लिए गाड़ियों और गायों की आवश्यकता थी। याजक हारून का पुत्र ईतामार इन सभी व्यक्तियों के कार्य के लिए उत्तरदायी था। 9मूसा ने कहात वंशियों को कोई गाय या कोई गाड़ी नहीं दी। इन व्यक्तियों को पवित्र चीज़ें अपने कंधों पर ले जानी थीं। यही कार्य उनको करने के लिए सौंपा गया था।

10उस दिन के अभिषेक के पश्चात नेता अपनी भेंटे वेदी पर समर्पण के लिए लाए। उन्होंने अपनी भेंटे वेदी के सामने यहोवा को अर्पित कीं। 11यहोवा ने पहले से ही मूसा से कह रखा था, "वेदी को समर्पण के रूप में दी जाने वाली अपनी भेंट का भाग हर एक नेता एक एक दिन लाएगा।"

12-83 *बारह नेताओं में से प्रत्येक नेता अपनी-अपनी भेंटे लाया। वे भेंटे ये हैं: प्रत्येक नेता चाँदी की एक थाली लाया जिसका वजन था एक सौ तीस शेकेल।* प्रत्येक नेता चाँदी का एक कटोरा लाया जिसका वजन सत्तर शेकेल।* इन दोनों ही उपहारों को पवित्र अधिकृत भार से तोला गया था। हर कटोरे और हर थाली में तेल मिला बारीक आटा भरा हुआ था। यह अन्नबलि के रूप में प्रयोग में लाया जाना था। प्रत्येक नेता सोने की एक बड़ी करछी भी लेकर आया जिसका भार दस शेकेल* था। इस करछी में धूप भरी हुई थी। प्रत्येक नेता एक बछड़ा, एक मेढ़ा और एक वर्ष का एक मेमना भी लाया। ये पशु होमबलि के लिए थे। प्रत्येक नेता पापबलि के रूप में इस्तेमाल किये जाने के लिए एक बकरा भी लाया। प्रत्येक नेता दो गाय, पाँच मेढ़े, पाँच बकरे और एक-एक वर्ष के पाँच मेमने लाया। इन सभी की मेलबलि दी गयी।

अम्मीनादाब का पुत्र नहशोम, जो यहूदा के परिवार समूह से था, पहले दिन अपनी भेंटे लाया।

दूसरे दिन सूआर का पुत्र नतनेल जो इस्साकार का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

तीसरे दिन हेलोन का पुत्र एलीआब जो जबूलूनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

चौथे दिन शदेऊर का पुत्र एलीसूर जो रूबेनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

पाँचवे दिन सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल जो शिमौनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

छठे दिन दूएल का पुत्र एल्यासाप जो गादियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

सातवें दिन अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा जो एप्रैम के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

आठवें दिन पदासूर का पुत्र गम्लीएल जो मनश्शे के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

नवें दिन गिदोनी का पुत्र अबीदान जो बिन्यामिन के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

दसवें दिन अम्मीशद्दै का पुत्र अखीआजर जो दान के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

ग्यारहवें दिन ओक्रान का पुत्र पजीएल जो आशेर के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

और फिर बारहवें दिन एनान का पुत्र अहीरा जो नप्ताली के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लेकर आया।

84इस प्रकार ये सभी चीज़ें इस्राएल के लोगों के नेताओं की भेंटें थी। ये चीज़ें तब लाई गई जब मूसा ने वेदी को विशेष तेल डालकर समर्पित किया। वे बारह चाँदी की तश्तरियाँ, बारह चाँदी के कटोरे और बारह सोने के चम्मच लाए। 85चाँदी की हर एक तश्तरी का वजन लगभग सवा तीन पौंड़ था और हर एक कटोरे का वजन लगभग पौने दो पौंड़ था। चाँदी की तश्तरियों और चाँदी के कटोरों का कुल अधिकृत भार साठ पौंड़ था। 86सुगन्धि से भरे सोने के चम्मचों में से प्रत्येक का अधिकृत भार दस शेकेल था। बारह सोने के चम्मचों का कुल वजन लगभग तीन पौंड़ था।

87होमबलि के लिए जानवरों की कुल संख्या बारह बैल, बारह मेढ़े और बारह एक वर्ष के मेमने थे। वहाँ अन्नबलि भी थी। यहोवा को पापबलि के रूप में उपयोग में आने वाले बारह बकरे भी थे। 88नेताओं ने मेलबलि के रूप में उपयोग और मारे जाने के लिए भी जानवर दिए। इन जानवरों की संख्या थी चौबीस बैल, साठ मेढ़े, साठ बकरे और साठ एक वर्ष के मेमने थे। वेदी के समर्पण काल में ये चीज़ें भेंट के रूप में दी गई। यह मूसा द्वारा अभिषेक का तेल उन पर डालने के बाद हुआ।

89मूसा मिलापवाले तम्बू में यहोवा से बात करने गया। उस समय उसने अपने से बात करती हुई यहोवा की वाणी सुनी। वह वाणी साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर के विशेष ढक्कन पर के दोनों करूबों के मध्य से आ रही थी। इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा से बातें की।

दीपाधार

8 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून से बात करो और उससे कहो, उन स्थानों पर सात दीपकों को रखो जिन्हें मैंने तुम्हें दिखाया था। वे दीपक दीपाधार के सामने के क्षेत्र को प्रकाशित करेंगे।"

3हारून ने यह किया। हारून ने दीपकों को उचित स्थान पर रखा और उनका रुख ऐसा कर दिया कि उससे दीपाधार के सामने का क्षेत्र प्रकाशित हो सके। उसने मूसा को दिये गए यहोवा के आदेश का पालन किया। 4दीपाधार सोने की पट्टियों से बना था। सोने का उपयोग आधार से आरम्भ हुआ था और ऊपर सुनहरे फूलों तक पहुँचा हुआ था। यह सब उसी प्रकार बना था जैसा कि यहोवा ने मूसा को दिखाया था।

लेवीवंशियों का समर्पण

5यहोवा ने मूसा से कहा, 6"लेवीवंश के लोगों को इस्राएल के अन्य लोगों से अलग ले जाओ। उन लेवीवंशी लोगों को शुद्ध करो। 7यह तुम्हें पवित्र बनाने के लिए

पद 12-83 मूल में प्रत्येक नेता की भेंटों की सूची अलग-अलग दी गई है। किन्तु प्रत्येक भेंट का लिखित पाठ एक जैसा ही है। इसलिए पाठ-सुविधा को ध्यान में रखते हुए पद संख्या 12 से 83 तक को यहाँ एक साथ मिलाकर अनुवादित किया गया है।

एक सौ तीस शेकेल अर्थात् 3 1/4 पौंड।

सत्तर शेकेल अर्थात् 1 3/4 पौंड।

दस शेकेल अर्थात् चार औंस।

करना होगा। पापबलि से विशेष पानी* उन पर छिड़को।
यह पानी उन्हें पवित्र करेगा। तब वे अपने शरीर के
बाल कटवायेंगे तथा अपने कपड़ों को धोएंगे। यह उनके
शरीर को शुद्ध करेगा।

8“तब वे एक नया बैल और उसके साथ उपयोग में
आने वाली अन्नबलि लेंगे। यह अन्नबलि, तेल मिला
हुआ आटा होगा। तब अन्य बैल को पापबलि के रूप में
लो। **9**लेवीवंश के लोगों को मिलापवाले तम्बू के सामने
के क्षेत्र में लाओ। तब इस्राएल के सभी लोगों को चारों
ओर से इकट्ठा करो। **10**तब तुम्हें लेवीवंश के लोगों
को यहोवा के सामने लाना चाहिए और इस्राएल के लोग
अपना हाथ उन पर रखेंगे।* **11**तब हारून लेवीवंश के
लोगों को यहोवा के सामने लाएगा-वे परमेश्वर के लिए
भेंट के रूप में होंगे। इस ढंग से लेवीवंश के लोग यहोवा
का विशेष कार्य करने के लिए तैयार होंगे।

12“लेवीवंश के लोगों से कहो कि वे अपना हाथ बैलों
के सिर पर रखें। एक बैल यहोवा को पापबलि के रूप
में होगा। दूसरा बैल यहोवा को होमबलि के रूप में
काम आएगा। ये भेंटे लेवीवंश के लोगों को शुद्ध करेंगी।
13लेवीवंश के लोगों से कहो कि वे हारून और उसके
पुत्रों के सामने खड़े हों। तब यहोवा के सामने लेवीवंश
के लोगों को उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत करो। **14**यह
लेवीवंश के लोगों को पवित्र बनायेगा। यह दिखायेगा कि
वे परमेश्वर के लिये विशेष रीति से इस्तेमाल होंगे। वे
इस्राएल के अन्य लोगों से भिन्न होगें और लेवीवंश के
लोग मेरे होंगे।

15“इसलिए लेवीवंश के लोगों को शुद्ध करो और
उन्हें यहोवा के सामने उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत
करो। जब यह पूरा हो जाए तब वे आ सकते हैं और
मिलापवाले तम्बू में अपना काम कर सकते हैं। **16**ये
लेवीवंशी इस्राएल के वे लोग हैं जो मुझको दिये गए हैं।
मैंने उन्हें अपने लोगों के रूप में स्वीकार किया है। बीते
समय में हर एक इस्राएल के परिवार में पहलौठा पुत्र
मुझे दिया जाता था किन्तु मैंने लेवीवंश के लोगों को
इस्राएल के अन्य परिवारों के पहलौठे पुत्रों के स्थान पर
स्वीकार किया है। **17**इस्राएल का हर पुरुष जो हर एक
परिवार में पहलौठा है, मेरा है। यदि यह पुरुष या
जानवर है तो भी मेरा है। मैंने मिस्र में सभी पहलौठे
बच्चों और जानवरों को मार डाला था। इसलिए मैंने
पहलौठे पुत्रों को अलग किया जिससे वे मेरे हो सकें।
18अब मैंने लेवीवंशी लोगों को ले लिया है। मैंने इस्राएल
के अन्य लोगों के परिवारों में पहलौठे बच्चों के स्थान
पर इनको स्वीकार किया है। **19**मैंने इस्राएल के सभी
लोगों में से लेवीवंश के लोगों को चुना है। मैंने उन्हें
हारून और उसके पुत्रों को इन्हें भेंट के रूप में दिया है।
मैं चाहता हूँ कि वे मिलापवाले तम्बू में काम करें। वे
इस्राएल के सभी लोगों के लिए सेवा करेंगे और वे उन
बलिदानों को करने में सहायता करेंगे जो इस्राएल के
लोगों के पापों को ढकने में सहायता करेंगी। तब कोई
बड़ा रोग या कष्ट इस्राएल के लोगों को नहीं होगा जब
वे पवित्र स्थान के पास आएंगे।”

20इसलिए मूसा, हारून और इस्राएल के सभी लोगों ने
यहोवा का आदेश माना। उन्होंने लेवीवंशियों के प्रति
वैसा ही किया जैसा उनके प्रति करने का यहोवा ने
मूसा को आदेश दिया था। **21**लेवीयों ने अपने को शुद्ध
किया और अपने वस्त्रों को धोया। तब हारून ने उन्हें
यहोवा के सामने उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत किया।
हारून ने वे भेंटें भी चढ़ाई जिन्होंने उनके पापों को नष्ट
करके उन्हें शुद्ध किया था। **22**उसके बाद लेवीवंश के
लोग अपना काम करने के लिए मिलापवाले तम्बू में
आए। हारून और उसके पुत्रों ने उनकी देखभाल की।
वे लेवीवंश के लोगों के कार्य के लिए उत्तरदायी थे।
हारून और उसके पुत्रों ने उन आदेशों का पालन किया
जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया था।

23यहोवा ने मूसा से कहा, **24**“लेवीवंश के लोगों के
लिए यह विशेष आदेश है: हर एक लेवीवंशी पुरुष को,
जो पच्चीस वर्ष या उससे अधिक उम्र का है, अवश्य
आना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के कामों में हाथ
बटाना चाहिए। **25**जब कोई व्यक्ति पचास वर्ष का हो
जाए तो उसे नित्य के कामों से छुट्टी लेनी चाहिए। उसे
पुन: काम करने की आवश्यकता नहीं है। **26**पचास वर्ष
या उससे अधिक उम्र के लोग मिलापवाले तम्बू में
अपने भाईयों को उनके काम में सहायता दे सकते हैं।
किन्तु वे लोग स्वयं काम नहीं करेंगे। उन्हें सेवा–निवृत्त
होने की स्वीकृति दी जाएगी। इसलिए उस समय लेवीवंश
के लोगों से यह कहना याद रखो जब तुम उन्हें उनका
सेवा–कार्य सौंपो।”

फसह पर्व

9 यहोवा ने मूसा को सीनै की मरुभूमि में कहा। उस
समय से एक वर्ष और एक महीना हो गया जब
इस्राएल के लोग मिस्र से निकले थे। यहोवा ने मूसा से
कहा, **2**“इस्राएल के लोगों से कहो कि वे निश्चित समय
पर फसह पर्व की दावत को खाना याद रखें। **3**वह
निश्चित समय इस महीने का चौदहवाँ दिन है। उन्हें
सन्ध्या के समय दावत खानी चाहिए और दावत के बारे
में मैंने जो नियम दिए हैं उनको उन्हें याद रखना चाहिए।”

4इसलिए मूसा ने इस्राएल के लोगों से फसह पर्व की
दावत खाने को याद रखने के लिए कहा **5**और लोगों ने

विशेष पानी इस पानी में लाल गायों की राख थी जिन्हें पापबलि के रूप में वेदी पर जलाया गया था।

हाथ उन पर रखेंगे यह संकेत करता था कि लोग सम्मिलित रूप से लेवीवंश के लोगों को उनके विशेष कार्य के लिये नियुक्त करते थे।

चौदहवें दिन सन्ध्या के समय सीनै की मरुभूमि में वैसा
ही किया। यह पहले महीने में था। इस्राएल के लोगों ने
हर एक काम वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को
आदेश दिया था। 6किन्तु कुछ लोग फसह पर्व की दावत
उसी दिन नहीं खा सके। वे एक शव के कारण शुद्ध
नहीं थे। इसलिए वे उस दिन मूसा और हारून के पास
गए। 7उन लोगों ने मूसा से कहा, "हम लोग एक शव
को छूने के कारण अशुद्ध हुए हैं। याजकों ने हमें
निश्चित समय पर यहोवा को चढ़ाई जाने वाली भेंट देने
से रोक दिया है। अत: हम फसह पर्व को अन्य इस्राएली
लोगों के साथ नहीं मना सकते। हमें क्या करना चाहिए?"

8मूसा ने उनसे कहा, "मैं यहोवा से पूछूँगा कि वह इस
सम्बन्ध में क्या कहता है।"

9तब यहोवा ने मूसा से कहा, 10"इस्राएल के लोगों से
ये बातें कहो: यह हो सकता है कि तुम ठीक समय पर
फसह पर्व न मना सको क्योंकि तुम या तुम्हारे परिवार
का कोई व्यक्ति शव को स्पर्श करने के कारण अशुद्ध
हो या संभव है कि तुम किसी यात्रा पर गए हुए हो।"
11तो भी तुम फसह पर्व मना सकते हो। तुम फसह पर्व
को दूसरे महीने के चौदहवें दिन सन्ध्या के समय मनाओगे।
उस समय तुम मेमना, अख़मीरी रोटी और कड़वा
सागपात खाओगे। 12अगली सुबह तक के लिए तुम्हें
उसमें से कोई भी भोजन नहीं छोड़ना चाहिए। तुम्हें
मेमने की किसी हड्डी को भी नहीं तोड़ना चाहिए। उस
व्यक्ति को फसह पर्व के सभी नियमों का पालन करना
चाहिए। 13किन्तु कोई भी व्यक्ति जो समर्थ है, फसह पर्व
की दावत को ठीक समय पर ही खाये। यदि वह शुद्ध है
और किसी यात्रा पर नहीं गया है तो उसके लिये कोई
बहाना नहीं है। यदि वह व्यक्ति फसह पर्व को ठीक
समय पर नहीं खाता है तो उसे अपने लोगों से अलग
भेज दिया जायेगा। वह अपराधी है! क्योंकि उसने यहोवा
को ठीक समय पर अपनी भेंट नहीं चढ़ाई सो उसे दण्ड
अवश्य दिया जाना चाहिए।"

14"तुम लोगों के साथ रहने वाला कोई भी व्यक्ति जो
इस्राएली लोगों का सदस्य नहीं है, यहोवा के फसह पर्व
में तुम्हारे साथ भाग लेना चाह सकता है। यह स्वीकृत
है, किन्तु उस व्यक्ति को उन नियमों का पालन करना
होगा जो तुम्हें दिए गए हैं। तुम्हें अन्य लोगों के लिए भी
वे ही नियम रखने होंगे जो तुम्हारे लिए हैं।"

बादल और अग्नि

15जिस दिन पवित्र साक्षीपत्र का तम्बू लगाया गया,
एक बादल इसके ऊपर रूक गया। रात को बादल
अग्नि की तरह दिखाई पड़ता था। 16बादल तम्बू के
ऊपर निरन्तर ठहरा रहा और रात को बादल अग्नि
की तरह दिखाई दिया। 17जब बादल तम्बू के ऊपर
अपने स्थान से चलता था, इस्राएली इसका अनुसरण
करते थे। जब बादल रूक जाता था तब इस्राएल के लोग
वहीं अपना डेरा डालते थे। 18यही ढंग था जिससे यहोवा
इस्राएल के लोगों को यात्रा करने का आदेश देता था,
और यही उसका उस स्थान के लिए आदेश था जहाँ
उन्हें डेरा लगाना चाहिए था और जब तक बादल तम्बू
के ऊपर ठहरता था, लोग उसी स्थान पर डेरा डाले
रहते थे। 19कभी-कभी बादल तम्बू के ऊपर लम्बे
समय तक ठहरता था। इस्राएली यहोवा का आदेश
मानते थे और यात्रा नहीं करते थे। 20कभी-कभी
बादल तम्बू के ऊपर कुछ ही दिनों के लिए रहता था
और लोग यहोवा के आदेश का पालन करते थे। वे
बादल का अनुसरण तब करते जब वह चलता था।
21कभी-कभी बादल केवल रात में ही ठहरता था और
जब बादल अगली सुबह चलता था तब लोग अपनी चीजें
इकट्ठी करते थे और उसका अनुसरण करते थे, रात
में या दिन में, यदि बादल चलता था तो लोग उसका
अनुसरण करते थे। 22यदि बादल तम्बू के ऊपर दो दिन
या एक महीना या एक वर्ष ठहरता था तो लोग यहोवा
के आदेश का पालन करते रहते थे। वे उसी डेरे में
ठहरते थे और तब तक नहीं चलते थे, जब तक बादल
नहीं चलता था। जब बादल अपने स्थान से उठता और
चलता तब लोग भी चलते थे। 23इस प्रकार लोग यहोवा
के आदेश का पालन करते थे। वे वहाँ डेरा डालते थे
जिस स्थान को यहोवा दिखाता था और जब यहोवा
उन्हें स्थान छोड़ने के लिए आदेश देता था तब लोग
बादल का अनुसरण करते हुए स्थान छोड़ते थे। लोग
यहोवा के आदेश का पालन करते थे। यह आदेश था
जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उन्हें दिया।

चाँदी का बिगुल

10 यहोवा ने मूसा से कहा: 2"बिगुल बनाने के
लिये चाँदी का उपयोग करो। चाँदी का पतरा
बना कर उससे दो बिगुल बनाओ। ये बिगुल लोगों को
एक साथ बुलाने और यह बताने के लिए होंगी कि डेरे
को कब चलाना है। 3जब तुम इन दोनों बिगुलों को
बजाओगे, तो सभी लोगों को मिलापवाले तम्बू के सामने
तुम्हारे आगे इकट्ठा हो जाना चाहिए। 4यदि तुम केवल
एक बिगुल बजाते हो, तो नेता (इस्राएल के बारह परिवारों
के मुखिया) तुम्हारे सामने इकट्ठे होंगे।

5"जब तुम बिगुल को पहली बार कम बजाओ, तब
पूर्व में डेरा लगाए हुए परिवारों के समूहों को चलना
आरम्भ कर देना चाहिए। 6जब तुम बिगुल को दूसरी
बार कम बजाओगे तो दक्षिण के डेरे को चलना आरम्भ
कर देना चाहिए। बिगुल की ध्वनि यह घोषणा करेगी
कि लोग चलें। 7जब तुम सभी लोगों को इकट्ठा करना
चाहते हो तो बिगुल को दूसरे ढंग से लम्बी स्थिर ध्वनि
निकालते हुए बजाओ। 8केवल हारून के याजक पुत्रों

को बिगुल बजाना चाहिए। यह तुम लोगों के लिए नियम
है जो भविष्य में माना जाता रहेगा।
9"यदि तुम अपने देश में किसी शत्रु से लड़ रहे हो तो,
तुम उनके विरुद्ध जाने के पहले बिगुल को जोर से
बजाओ। तब तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी बात सुनेगा,
और वह तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं से बचाएगा। 10अपनी
विशेष प्रसन्नता के समय में भी तुम्हें अपना बिगुल
बजाना चाहिए। अपने विशेष पवित्र दिनों और नये चाँद
की दावतों में बिगुल बजाओ और तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा को तुम्हें याद करने का यह विशेष तरीका
होगा। मैं तुम्हें यह करने का आदेश देता हूँ; मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ।"

इस्राएल के लोग अपने डेरे को ले चलते हैं

11दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में इस्राएल के लोगों द्वारा
मिस्र छोड़ने के बीसवें दिन के बाद साक्षीपत्र के तम्बू के
ऊपर से बादल उठा। 12इसलिए इस्राएल के सभी लोगों
ने सीनै की मरुभूमि से यात्रा करनी आरम्भ की। वे
एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा तब तक करते रहे
जब तक बादल पारान की मरुभूमि में नहीं रूका।
13यह पहला समय था कि लोगों ने अपने डेरों को वैसे
चलाया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।
14यहूदा के डेरे से तीन दल पहले गए। उन्होंने अपने
झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल यहूदा के परिवार
समूह का था। अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन उस दल
का नेता था। 15उसके ठीक बाद इस्साकार का परिवार
समूह आया। सूआर का पुत्र नतनेल उस दल का नेता
था 16और तब जबूलून का परिवार समूह आया। हेलोन
का पुत्र एलीआब उस दल का नेता था। 17तब मिलापवाले
तम्बू उतारे गए और गेर्शोन तथा मरारी परिवार के
लोग पवित्र तम्बू को लेकर चले। इसलिए इन परिवारों
के लोग पंक्ति में ठीक बाद में थे।
18तब रूबेन के डेरे के तीन दल आए। उन्होंने अपने
झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल रूबेन परिवार समूह
का था। शदेऊर का पुत्र एलीआज़र इस दल का नेता
था। 19इसके ठीक बाद शिमोन का परिवार समूह आया।
सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल उस दल का नेता था।
20और तब गाद का परिवार समूह आया। दूएल का पुत्र
एल्यासाप उस दल का नेता था। 21तब कहात परिवार
के लोग आए। वे उन पवित्र चीज़ों को ले जा रहे थे जो
पवित्र तम्बू में थीं। ये लोग इस समय इसलिए आए ताकि
इन लोगों के पहुँचने के पहले पवित्र तम्बू लगा दिया
जाए और तैयार कर दिया जाए।
22इसके ठीक बाद एप्रैम के डेरे के तीन दल आए।
उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल एप्रैम
के परिवार समूह का था। अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा
उस दल का नेता था। 23ठीक उसके बाद मनश्शे का
परिवार समूह आया। पदासूर का पुत्र गम्लीएल उस दल
का नेता था। 24तब बिन्यामीन का परिवार समूह आया।
गिदोनी का पुत्र अबीदान उस दल का नेता था।
25पंक्ति में आखिरी तीन परिवार समूह अन्य सभी
परिवार समूहों के लिए पृष्ठ रक्षक थे। ये दल दान के
डेरे मे से थे। उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की।
पहला दल दान के परिवार समूह का था। अम्मीशद्दै का
पुत्र अहीएज़ेर उस दल का नेता था। 26उसके ठीक बाद
आशेर का परिवार समूह आया। ओक्रान का पुत्र पजीएल
उस दल का नेता था। 27तब नप्ताली का परिवार समूह
आया। एनान का पुत्र अहीरा उस दल का नेता था।
28जब इस्राएल के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की
यात्रा करते थे तब उनका यही ढंग था।
29रूएल का पुत्र होबाब मिद्यानी था। रूएल मूसा का
ससुर था। मूसा ने होबाब से कहा, "हम लोग उस देश
की यात्रा कर रहे हैं जिसे परमेश्वर ने हम लोगों को
देने का वचन दिया है। इसलिए हम लोगों के साथ
आओ, हम लोग तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।
परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को अच्छी चीज़ें देने का
वचन दिया है।"
30किन्तु होबाब ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं तुम्हारे साथ
नहीं जाऊँगा। मैं अपने देश और अपने लोगों के पास
लौटूँगा।"
31तब मूसा ने कहा, "हमें छोड़ो मत। तुम रेगिस्तान
के बारे में हम लोगों से अधिक जानते हो। तुम हमारे
पथ पदर्शक हो सकते हो। 32यदि तुम हम लोगों के साथ
आते हो तो यहोवा जो कुछ अच्छी चीज़ें देगा उसमें
तुम्हारे साथ हम हिस्सा बटाएंगे।"
33इसलिए होबाब मान गया और उन्होंने यहोवा के
पर्वत से यात्रा आरम्भ की। याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र
के पवित्र सन्दूक को लिया और लोगों के आगे चले। वे
डेरा डालने के स्थान की खोज में तीन दिन तक पवित्र
सन्दूक ढोते रहे। 34यहोवा का बादल हर एक दिन
उनके ऊपर था और हर एक सुबह जब वे अपने डेरे
को छोड़ते थे तो उनको रास्ता दिखाने के लिए बादल
वहाँ रहता था। 35जब लोग पवित्र सन्दूक के साथ यात्रा
आरम्भ करते थे और पवित्र सन्दूक डेरे से बाहर ले
जाया जाता था, मूसा सदा कहता था,
"यहोवा, उठ! तेरे शत्रु सभी दिशाओं में भागें। जो
लोग तेरे विरुद्ध हों तेरे सामने से भागें।"
36और जब पवित्र सन्दूक अपनी जगह पर रखा जाता
था तब मूसा सदा यह कहता था,
"यहोवा, वापस आ, इस्राएल के लाखों लोगों के पास।"

लोग फिर शिकायत करते हैं

11 इस समय लोगों ने अपने कष्टों के लिए शिकायत
की। यहोवा ने उनकी शिकायतें सुनी। जब

यहोवा ने ये बातें सुनी तो वह क्रोधित हुआ। यहोवा की
तरफ से डेरे में आग लग गई। आग ने डेरे के छोर पर
के कुछ हिस्से को जला दिया। 2इसलिए लोगों ने मूसा
को सहायता के लिये पुकारा। मूसा ने यहोवा से प्रार्थना
की और आग का जलना बन्द हो गया। 3इसलिए उस
स्थान को तबेरा कहा गया। लोगों ने उस स्थान को यही
नाम दिया क्योंकि यहोवा ने उनके बीच आग जला दी
थी।

सत्तर अग्रज नेता

4इस्राएल के लोगों के साथ जो विदेशी मिल गए थे
अन्य चीज़ें खाने की इच्छा करने लगे। शीघ्र ही इस्राएल
के लोगों ने फिर शिकायत करनी आरम्भ की। लोगों
ने कहा, "हम माँस खाना चाहते हैं! 5हम लोग मिस्र में
खायी गई मछलियों को याद करते हैं। उन मछलियों का
कोई मूल्य नहीं देना पड़ता था। हम लोगों के पास बहुत
सी सब्जियाँ थीं जैसे ककड़ियाँ, खरबूजे, गन्दने, प्याज
और लहसुन। 6किन्तु अब हम अपनी शक्ति खो चुके हैं
हम और कुछ भी नहीं खाते, इस मन्ने के अतिरिक्त!"
7(मन्ना धनियाँ के बीज के समान था, वह गूगुल के
पारदर्शी पीले गोंद के समान दिखता था। 8लोग इसे
इकट्ठा करते थे और तब इसे पीसकर आटा बनाते थे
या वे इसे कुचलने के लिए चट्टान का उपयोग करते
थे। तब वे इसे बर्तन में पकाते थे अथवा इसके "फुलके"
बनाते थे। "फुलके" का स्वाद जैतून के तेल से पकी
रोटी के समान होता था। 9हर रात को जब भूमि ओस
से गीली होती थी तो मन्ना भूमि पर गिरता था।)

10मूसा ने हर एक परिवार के लोगों को अपने खेमों
के द्वारों पर खड़े शिकायत करते सुना। यहोवा बहुत
क्रोधित हुआ। इससे मूसा बहुत परेशान हो गया। 11मूसा
ने यहोवा से पूछा, "यहोवा, तूने अपने सेवक मुझ पर
यह आपत्ति क्यों डाली है? मैंने क्या किया है? जो बुरा
है। मैंने तुझे अप्रसन्न करने के लिए क्या किया है? तूने
मेरे ऊपर इन सभी लोगों का उत्तरदायित्व क्यों सौंपा है?
12तू जानता है कि मैं इन सभी लोगों का पिता नहीं हूँ। तू
जानता है कि मैंने इनको पैदा नहीं किया है। किन्तु यह
तो ऐसे हैं कि मैं इन्हें अपनी गोद में वैसे ही ले चलूँ जैसे
कोई धाय बच्चे को ले चलती है। तू हमें ऐसा करने को
विवश क्यों करता है? तू मुझे क्यों विवश करता है कि
मैं इन्हें उस देश को ले जाऊँ जिसे देने का वचन तूने
उनके पूर्वजों को दिया है? 13मेरे पास इन लोगों के लिए
पर्याप्त माँस नहीं है। किन्तु वे लगातार मुझसे शिकायत
कर रहे हैं। वे कहते हैं, 'हमें खाने के लिए माँस दो!'
14मैं अकेले इन सभी लोगों की देखभाल नहीं कर
सकता। यह बोझ मेरी बरदाश्त के बाहर है। 15यदि तू
उनके कष्ट को मुझे देकर चलाते रहना चाहता है तो
तू मुझे अभी मार डाल। यदि तू मुझे अपना सेवक
मानता है तो अभी मुझे मर जाने दे। तब मेरे सभी कष्ट
समाप्त हो जाएंगे।"

16यहोवा ने मूसा से कहा, "मेरे पास इस्राएल के ऐसे
सत्तर अग्रजों को लाओ, जो लोगों के अग्रज और अधिकारी
हों। इन्हें मिलापवाले तम्बू में लाओ। वहाँ उन्हें अपने
साथ खड़ा करो। 17तब मैं आऊँगा और तुमसे बातें
करूँगा। अब तुम पर आत्मा आई है। किन्तु मैं उन्हें भी
आत्मा का कुछ अंश दूँगा। तब वे लोगों की देखभाल
करने में तुम्हारी सहायता करेंगे। इस प्रकार, तुमको
अकेले इन लोगों के लिए उत्तरदायी नहीं होना पड़ेगा।
18लोगों से कहो: कल के लिए अपने को तैयार करो।
कल तुम लोग माँस खाओगे। यहोवा ने सुना है जब तुम
लोग रोए-चिल्लाए। यहोवा ने तुम लोगों की बातें सुनीं
जब तुम लोगों ने कहा, 'हमें खाने के लिए माँस चाहिए!
हम लोगों के लिए मिस्र में अच्छा था।" अब यहोवा तुम
लोगों को माँस देगा और तुम लोग उसे खाओगे। 19तुम
लोग उसे केवल एक दिन नहीं, दो, पाँच, दस या बीस
दिन भी खा सकोगे। 20तुम लोग वह माँस महीने भर
खाओगे। तुम लोग वह माँस तब तक खाओगे जब तक
उससे ऊब नहीं जाओगे। यह होगा, क्योंकि तुम लोगों ने
यहोवा के विरुद्ध शिकायत की है। यहोवा तुम लोगों में
घूमता है और तुम्हारी आवश्यकताओं को समझता है।
किन्तु तुम लोग उसके सामने रोए-चिल्लाए और शिकायत
की है! तुम लोगों ने कहा, 'हम लोगों ने आखिर मिस्र
छोड़ा ही क्यों?'"

21मूसा ने कहा, "यहोवा, यहाँ छ: लाख पुरुष साथ
चल रहे हैं और तू कहता है, 'मैं उन्हें पूरे महीने खाने
के लिए पर्याप्त माँस दूँगा!' 22यदि हमें सभी भेड़ें और
मवेशी मारने पड़े तो भी इतनी बड़ी संख्या में लोगों के
महीने भर खाने के लिए वह पर्याप्त नहीं होगा और
यदि हम समुद्र की सारी मछलियाँ पकड़ लें तो भी
उनके लिए वे पर्याप्त नहीं होंगी।"

23 किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "यहोवा की शक्ति
को सीमित न करो। तुम देखोगे कि यदि मैं कहता हूँ
कि मैं कुछ करूँगा तो उसे मैं कर सकता हूँ।"

24इसलिए मूसा लोगों से बात करने बाहर गया। मूसा
ने उन्हें वह बताया जो यहोवा ने कहा था। तब मूसा ने
सत्तर अग्रज नेताओं को इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे
तम्बू के चारों ओर खड़ा रहने को कहा। 25तब यहोवा
एक बादल में उतरा और उसने मूसा से बातें की।
आत्मा मूसा पर थी। यहोवा ने उसी आत्मा को सत्तर
अग्रज नेताओं पर भेजा। जब उन में आत्मा आई तो वे
भविष्यवाणी करने लगे। किन्तु यह केवल उसी समय
हुआ जब उन्होंने ऐसा किया।

26अग्रजों में से दो एलदाद और मेदाद तम्बू में नहीं
गए। उनके नाम अग्रज नेताओं की सूची में थे। किन्तु
वे डेरे में रहे किन्तु आत्मा उन पर भी आई और वे भी

डेरे में भविष्यवाणी करने लगे। 27एक युवक दौड़ा और मूसा से बोला। उस पुरुष ने कहा, "एलदाद और मेदाद डेरे में भविष्यवाणी कर रहे हैं।"

28किन्तु नून के पुत्र यहोशू ने मूसा से कहा, "मूसा, तुम्हें उन्हें रोकना चाहिए!" (यहोशू मूसा का तब से सहायक था जब वह किशोर था।)

29किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "क्या तुम्हें डर है कि लोग सोचेंगे कि अब मैं नेता नहीं हूँ? मैं चाहता हूँ कि यहोवा के सभी लोग भविष्यवाणी करने योग्य हों। मैं चाहता हूँ कि यहोवा अपनी आत्मा उन सभी पर भेजे।" 30तब मूसा और इस्राएल के नेता डेरे में लौट गए।

बटेरें आई

31तब यहोवा ने समुद्र की ओर से भारी आंधी चलाई। आंधी ने उस क्षेत्र में बटेरों को पहुँचाया। बटेरें डेरों के चारों ओर उड़ने लगीं। वहाँ इतनी बटेरें थीं कि भूमि ढक गई। भूमि पर बटेरों की तीन फीट ऊँची परत जम गई थी। कोई व्यक्ति एक दिन में जितनी दूर जा सकता था उतनी दूर तक चारों ओर बटेरें थीं। 32लोग बाहर निकले और पूरे दिन और पूरी रात बटेरों को इकट्ठा किया और फिर पूरे अगले दिन भी उन्होंने बटेरें इकट्ठी कीं। हर एक आदमी ने साठ बुशेल* या उससे अधिक बटेरें इकट्ठी की। तब लोगों ने बटेरों को अपने डेरे के चारों ओर फैलाया। 33लोगों ने माँस खाना आरम्भ किया, किन्तु यहोवा बहुत क्रोधित हुआ। जब माँस उनके मुँह में था और लोग जब तक इसको खाना खत्म करें इसके पहले ही, यहोवा ने एक बीमारी लोगों में फैला दी। 34इसलिए लोगों ने उस स्थान का नाम किब्रोथत्तावा रखा। उन्होंने उस स्थान को वह नाम इसलिए दिया कि यह वही स्थान है जहाँ उन्होंने उन लोगों को दफनाया था जो स्वादिष्ट भोजन की प्रबल इच्छा रखते थे। 35किब्रोथत्तावा से लोगों ने हसेरोत की यात्रा की और वे वहीं ठहरे।

मरियम और हारून मूसा की पत्नी के विरुद्ध कहते हैं

12 मरियम और हारून मूसा के विरुद्ध बात करने लगे। उन्होंने उसकी आलोचना की, क्योंकि उसकी पत्नी कूशी थी। उन्होंने सोचा कि यह अच्छा नहीं कि मूसा ने कूशी लोगों में से एक के साथ विवाह किया। 2उन्होंने आपस में कहा, "यहोवा ने लोगों से बात करने के लिए मूसा का उपयोग किया है। किन्तु मूसा ही एकमात्र नहीं है। यहोवा ने हम लोगों के द्वारा भी कहाहै।" यहोवा ने यह सुना। 3(मूसा बहुत विनम्र व्यक्ति था। वह न डींग हाँकता था, न शेखी बघारता था। वह धरती पर के किसी व्यक्ति से अधिक विनम्र था।) 4इसलिये यहोवा अचानक आया और मूसा, हारून और मरियम से बोला। यहोवा ने कहा, "तुम तीनों को अब मिलापवाले तम्बू में आना चाहिए।"

इसलिए मूसा, हारून और मरियम तम्बू में गए। 5तब यहोवा बादल में उतरा। यहोवा तम्बू के द्वार पर खड़ा हुआ। यहोवा ने "हारून और मरियम" को अपने पास आने के लिए कहा! जब दोनों उसके समीप आए, तो, 6यहोवा ने कहा, "मेरी बात सुनो जब मैं तुम लोगों में नबी भेजूँगा, तब मैं अर्थात् यहोवा अपने आपको उसके दर्शन में दिखाऊँगा और मैं उससे उसके सपने में बात करूँगा। 7किन्तु मैंने अपने सेवक मूसा के साथ ऐसा नहीं किया। मैंने उसे अपने सभी लोगों के ऊपर शक्ति दी है। 8जब मैं उससे बात करता हूँ तो मैं उसके आमने-सामने बात करता हूँ। मैं जो बात कहना चाहता हूँ उसे साफ-साफ कहता हूँ। मैं छिपे अर्थ वाले विचित्र विचारों को उसके सामने नहीं रखता और मूसा यहोवा के स्वरूप को देख सकता है। इसलिए तुमने मेरे सेवक मूसा के विरुद्ध बोलने का साहस कैसे किया?"

9तब यहोवा उनके पास से गया। किन्तु वह उनसे बहुत क्रोधित था। 10बादल तम्बू से उठा। तब हारून मुड़ा और उसने मरियम को देखा और उसे दिखाई पड़ा कि उसे भयंकर चर्मरोग हो गया है। उसकी त्वचा बर्फ की तरह सफेद थी! 11तब हारून ने मूसा से कहा, "महोदय, कृपा करके जो मूर्खता भरा पाप हम लोगों ने किया है, उसके लिए क्षमा करें। 12उसकी त्वचा का रंग उस प्रकार न उड़ने दे जैसा मरे हुए उत्पन्न बच्चे का होता है।" (कभी–कभी इस प्रकार का बच्चा आधी गली हुई त्वचा के साथ उत्पन्न होता है।)

13इसलिए मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, "परमेश्वर, कृपा करके इस बीमारी से उसे स्वस्थ कर!"

14यहोवा ने मूसा को उत्तर दिया, "यदि उसका पिता उसके मुँह पर थूके, तो वह सात दिन तक लज्जित रहेगी। इसलिए उसे सात दिन तक डेरे से बाहर रखो। उस समय के बाद वह ठीक हो जायेगी। तब वह डेरे में वापस आ सकती है।"

15इसलिए मरियम सात दिन के लिए डेरे से बाहर ले जाई गई और तब तक वे वहाँ से नहीं चले जब तक वह फिर वापस नहीं लाई गई। 16उसके बाद लोगों ने हसेरोत को छोड़ा और पारान मरुभूमि की उन्होंने यात्रा की। लोगों ने उस मरुभूमि में डेरे लगाए।

जासूस कनान को गए

13 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"कुछ व्यक्तियों को कनान देश का अध्ययन करने के लिए भेजो।

साठ बुशेल एक बुशल बराबर हुआ करता था लगभग छत्तीस लिटर के।

यही वह देश है जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दूँगा। हर
एक बारह परिवार समूह से एक नेता को भेजो।"
3इसलिए मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने परान
के रेगिस्तान से नेताओं को भेजा। 4ये उनके नाम हैं:

जककूर का पुत्र शम्मू–रूबेन के
परिवार समूह से;
5 होरी का पुत्र शापात–शिमोन के
परिवार समूह से;
6 यपुन्ने का पुत्र कालेब–यहूदा के
परिवार समूह से;
7 योसेप का पुत्र यिगास–इस्साकार के
परिवार समूह से;
8 नून का पुत्र होशे–एप्रैम के
परिवार समूह से;
9 रापू का पुत्र पलती–बिन्यामीन के
परिवार समूह से;
10 सोदी का पुत्र गद्दीएल–जबूलून के
परिवार समूह से;
11 सूसी का पुत्र गद्दी–मनश्शे के
परिवार समूह से;
12 गमल्ली का पुत्र अम्मीएल–दान के
परिवार समूह से;
13 मीकाएल का पुत्र सतूर–आशेर के
परिवार समूह से;
14 वोप्सी का पुत्र नहूबी–नप्ताली
परिवार समूह से;
15 माकी का पुत्र गूएल–गाद के
परिवार समूह से;

16ये उन व्यक्तियों के नाम हैं जिन्हें मूसा ने प्रदेश को
देखने और जाँच करने के लिए भेजा। मूसा से नून के
पुत्र होशे को दूसरे नाम से पुकारा। मूसा ने उसे यहोशू
कहा।

17मूसा जब उन्हें कनान की छानबीन के लिए भेज
रहा था, तब उसने कहा, "नेगेव घाटी से होकर पहाड़ी
प्रदेश में जाओ। 18यह देखो कि देश कैसा दिखाई देता है
और उन लोगों की जानकारी प्राप्त करो जो वहाँ रहते
हैं। वे शक्तिशाली हैं या कमजोर हैं? वे थोड़े हैं या
अधिक संख्या में हैं? 19उस प्रदेश के बारे में जानकारी
करो जिसमें वे रहते हैं। क्या यह अच्छा प्रदेश है या
बुरा? किस प्रकार के नगरों में वे रहते हैं? क्या उन
नगरों के परकोटे हैं? क्या नगर शक्तिशाली ढंग से
सुरक्षित है? 20और प्रदेश के बारे में अन्य बातों की
जानकारी प्राप्त करो। क्या भूमि उपज के लिए उपजाऊ
है या ऊसर है? क्या जमीन पर पेड़ उगे हैं? और उस
भूमि से कुछ फल लाने का प्रयत्न करो।" (यह उस
समय की बात है जब अंगूर की पहली फसल पकी हो।)

21तब उन्होंने प्रदेश की छानबीन की। वे जिन मरुभूमि
से रहोब और लेबो हमात तक गए। 22वे नेगेव से होकर
तब तक यात्रा करते रहे जब तक वे हेब्रोन नगर को
पहुँचे। हेब्रोन मिस्र में सोअन नगर के बसने के सात वर्ष
पहले बना था। अहीमन, शेशै और तल्मै वहाँ रहते थे।
ये लोग अनाक के वंशज थे। 23तब वे लोग एश्कोल की
घाटी में आये उन व्यक्तियों ने अंगूर की बेल की एक
शाखा काटी। उस शाखा में अंगूर का एक गुच्छा था।
लोगों में से दो व्यक्ति अपने बीच एक डंडे पर उसे रख
कर लाए। वे कुछ अनार और अंजीर भी लाए। 24उस
स्थान का नाम एश्कोल की घाटी था। क्योंकि यह वही
स्थान है जहाँ इस्राएल के आदमियों ने अंगूर के गुच्छे
काटे थे। 25उन व्यक्तियों ने उस प्रदेश की छानबीन
चालीस दिन तक की। तब वे डेरे को लौटे। 26वे व्यक्ति
मूसा, हारून और अन्य इस्राएल के लोगों के पास कादेश
में लौटे। यह पारान मरुभूमि में था। तब उन्होंने मूसा,
हारून और सभी लोगों को, जो कुछ देखा, सब कुछ
सुनाया और उन्होंने उन्हें उस प्रदेश के फलों को दिखाया।
27उन लोगों ने मूसा से यह कहा, "हम लोग उस प्रदेश
में गए जहाँ आपने हमें भेजा। वह प्रदेश अत्यधिक
अच्छा है-यहाँ दूध और मधु की नदियाँ बह रही हैं! ये वे
कुछ फल हैं जिन्हें हम लोगों ने वहाँ पाया। 28किन्तु वहाँ
जो लोग रहते हैं, वे बहुत शक्तिशाली और मजबूत हैं।
उनके नगर मजबूती के साथ सुरक्षित हैं और उनके
नगर बहुत विशाल हैं। हम लोगों ने वहाँ उनके परिवार
के कुछ लोगों को देखा भी। 29अमालेकी लोग नेगेव की
घाटी में रहते हैं। हित्ती, यबूसी और एमोरी पहाड़ी प्रदेशों
में रहते हैं। कनानी लोग समुद्र के किनारे और यरदन
नदी के किनारे रहतेहैं।"

30तब कालेब ने मूसा के समीप के लोगों को शान्त
होने को कहा। कालेब ने कहा, "हम लोगों को वहाँ
जाना चाहिए और उस प्रदेश को अपने लिए लेना चाहिए।
हम लोग उस प्रदेश को सरलता से ले सकते हैं।"

31किन्तु जो व्यक्ति उसके साथ गया था, वह बोला,
"हम लोग उन लोगों के विरुद्ध लड़ नहीं सकते। वे हम
लोगों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं" 32और उन
लोगों ने सभी इस्राएली लोगों से कहा कि उस प्रदेश के
लोगों को पराजित करने के लिए वे पर्याप्त शक्तिशाली
नहीं हैं। उन्होंने कहा, "जिस प्रदेश को हम लोगों ने
देखा, वह शक्तिशाली लोगों से भरा है। वे लोग इतने
अधिक शक्तिशाली हैं कि जो कोई व्यक्ति वहाँ जाएगा
उसे वे सरलता से हरा सकते हैं। 33हम लोगों ने वहाँ
नपीलियों को देखा! अनाक के परिवार के लोग जो
नपीलों के वंश के थे, उनके सामने खड़े होने पर हम
लोगों ने अपने आपको टिड्डा अनुभव किया। उन
लोगों ने हम लोगों को ऐसे देखा मानो हम टिड्डे के
समान छोटे हों।"

लोग फिर शिकायत करते हैं

14 उस रात डेरे के सब लोगों ने जोर से रोना आरम्भ किया। 2इस्राएल के सभी लोगों ने हारून और मूसा के विरुद्ध फिर शिकायत की। सभी लोग एक साथ आए और मूसा तथा हारून से उन्होंने कहा, "हम लोगों को मिस्र या मरुभूमि में मर जाना चाहिए था, अपने नए प्रदेश में तलवार से मरने की अपेक्षा यह बहुत अच्छा रहा होता। 3क्या यहोवा हम लोगों को इस नये प्रदेश में मरने के लिए लाया है? हमारी पत्नियाँ और हमारे बच्चे हमसे छीन लिए जाएंगे और हम तलवार से मार डाले जाएंगे। यह हम लोगों के लिए अच्छा होगा कि हम लोग मिस्र को लौट जाएं।"

4तब लोगों ने एक दूसरे से कहा, "हम लोगों को दूसरा नेता चुनना चाहिए और मिस्र लौट चलना चाहिए।"

5तब मूसा और हारून वहाँ इकट्ठे सारे इस्राएल के लोगों के सामने भूमि पर झुक गए। 6उस प्रदेश की छानबीन करने वाले लोगों में से दो व्यक्ति बहुत परेशान हो गए। वे दोनों नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब थे। 7इन दोनों ने वहाँ इकट्ठे इस्राएल के सभी लोगों से कहा, "जिस प्रदेश को हम लोगों ने देखा है वह बहुत अच्छा है 8और यदि यहोवा हम लोगों से प्रसन्न है तो वह हम लोगों को उस प्रदेश में ले चलेगा। वह प्रदेश सम्पन्न है, ऐसा है जैसे वहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती हो और यहोवा उस प्रदेश को हम लोगों को देने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करेगा। 9किन्तु हम लोगों को यहोवा के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए। हम लोगों को उस प्रदेश के लोगों से डरना नहीं चाहिए। हम लोग उन्हें सरलता से हरा देंगे। उनके पास कोई सुरक्षा नहीं है, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उनके पास कुछ नहीं है। किन्तु हम लोगों के साथ यहोवा है। इसलिए इन लोगों से डरो मत!"

10तब इस्राएल के सभी लोग उन दोनों व्यक्तियों को पत्थरों से मार देने की बातें करने लगे। किन्तु यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू पर आया। इस्राएल के सभी लोग इसे देख सकते थे। 11यहोवा ने मूसा से कहा, "ये लोग इस प्रकार मुझसे कब तक घृणा करते रहेंगे? वे प्रकट कर रहे हैं कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। वे दिखाते हैं कि उन्हें मेरी शक्ति पर विश्वास नहीं। वे मुझ पर विश्वास करने से तब भी इन्कार करते हैं जबकि मैंने उन्हें बहुत से शक्तिशाली चिन्ह दिखाये हैं। मैंने उनके बीच अनेक बड़ी चीज़ें की हैं। 12मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा और तुम्हारा उपयोग दूसरा राष्ट्र बनाने के लिए करूँगा और तुम्हारा राष्ट्र इन लोगों से अधिक बड़ा और अधिक शक्तिशाली होगा।"

13तब मूसा ने यहोवा से कहा, "यदि तू ऐसा करता है तो मिस्र में लोग यह सुनेंगे कि तूने अपने सभी लोगों को मार डाला। तूने अपनी बड़ी शक्ति का उपयोग उन लोगों को मिस्र से बाहर लाने के लिए किया 14और मिस्र के लोगों ने इसके बारे में कनान के लोगों को बताया है। वे पहले से ही जानते हैं कि तू यहोवा है। वे जानते हैं कि तू अपने लोगों के साथ है और वे जानते हैं कि तू प्रत्यक्ष है। इस देश में रहने वाले लोग उस बादल के बारे में जानेंगे जो लोगों के ऊपर ठहरता है तूने उस बादल का उपयोग दिन में अपने लोगों को रास्ता दिखाने के लिए किया और रात को वह बादल लोगों को रास्ता दिखाने के लिए आग बन जाता है। 15इसलिए तुझे अब लोगों को मारना नहीं चाहिए। यदि तू उन्हें मारता है तो सभी राष्ट्र, जो तेरी शक्ति के बारे में सुन चुके हैं, कहेंगे, 16'यहोवा इन लोगों को उस प्रदेश में ले जाने में समर्थी नहीं था जिस प्रदेश को उसने उन्हें देने का वचन दिया था। इसलिए यहोवा ने उन्हें मरुभूमि में मार दिया।'

17"इसलिए तुझे अपनी शक्ति दिखानी चाहिए। तुझे इसे वैसे ही दिखाना चाहिए जैसा दिखाने की घोषणा तूने की है। 18तूने कहा था, 'यहोवा क्रोधित होने में सहनशील है। यहोवा प्रेम से परिपूर्ण है। यहोवा पाप को क्षमा करता है और उन लोगों को क्षमा करता है जो उसके विरुद्ध भी हो जाते हैं। किन्तु यहोवा उन लोगों को अवश्य दण्ड देगा जो अपराधी हैं। यहोवा तो बच्चों को, उनके पितामह और प्रपितामह के पापों के लिए भी दण्ड देता है!' 19इसलिए इन लोगों को अपना महान प्रेम दिखा। उनके पाप को क्षमा कर। उनको उसी प्रकार क्षमा कर जिस प्रकार तू उनको मिस्र छोड़ने के समय से अब तक क्षमा करता रहा है।"

20यहोवा ने उत्तर दिया, "मैंने लोगों को तुम्हारे कहे अनुसार क्षमा कर दिया है। 21किन्तु मैं तुमसे यह सत्य कहता हूँ, क्योंकि मैं शाश्वत हूँ और मेरी शक्ति इस सारी पृथ्वी पर फैली है। अत: मैं तुमको यह वचन दूँगा। 22उन लोगों में से कोई भी व्यक्ति जिसे मैं मिस्र से बाहर लाया, उस देश को कभी नहीं देखेगा। उन लोगों ने मिस्र में मेरे तेज और मेरे महान संकेतों को देखा है और उन लोगों ने उन महान कार्यों को देखा जो मैंने मरुभूमि में किए। किन्तु उन्होंने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया और दस बार मेरी परीक्षा ली। 23मैंने उनके पूर्वजों को वचन दिया था। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं उनको एक महान देश दूँगा। किन्तु उनमें से कोई भी व्यक्ति जो मेरे विरुद्ध में हो चुका है उस देश में प्रवेश नहीं करेगा। 24किन्तु मेरा सेवक कालेब इनसे भिन्न है। वह पूरी तरह मेरा अनुसरण करता है। इसलिए मैं उसे उस देश में ले जाऊँगा जिसे उसने पहले देखा है और उसके लोग यह प्रदेश प्राप्त करेंगे। 25अमालेकियों और कनानी लोग घाटी में रह रहें हैं इसलिये तुम्हारे जाने के लिए कोई जगह नहीं है। कल इस स्थान को छोड़ो और रेगिस्तान की ओर लालसागर से होकर लौट जाओ।"

यहोवा लोगों को दण्ड देता है

26यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 27“ये लोग
कब तक मेरे विरुद्ध शिकायत करते रहेंगे? मैं इन
लोगों की शिकायत और पीड़ा को सुन चुका हूँ। 28इसलिए
इनसे कहो, “यहोवा कहता है कि वह निश्चय ही सभी
काम करेगा जिनके बारे में तुम लोगों की शिकायत है।
29तुम लोगों को यह सब होगा: तुम लोगों के शरीर इस
मरुभूमि में मरे हुए गिरेंगे। हर एक व्यक्ति जो बीस वर्ष
या अधिक उम्र का था हमारे लोगों के सदस्य के रूप
में गिना गया और तुम लोगों में से हर एक ने मेरे
अर्थात् यहोवा के विरुद्ध शिकायत की। इसलिए तुम
लोगों में से हर एक मरुभूमि में मरेगा। 30तुम लोगों में से
कोई भी कभी उस देश में प्रवेश नहीं करेगा जिसे मैंने
तुमको देने का वचन दिया था। केवल यपुन्ने का पुत्र
कालेब और नून का पुत्र यहोशू उस देश में प्रवेश
करेंगे। 31तुम लोग डर गए थे और तुम लोगों ने शिकायत
की कि उस नये देश में तुम्हारे शत्रु तुम्हारे बच्चों को
तुमसे छीन लेंगे। किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उन
बच्चों को उस देश में ले जाऊँगा। वे उन चीज़ों का भोग
करेंगे जिनका भोग करना तुमने स्वीकार नहीं किया।
32जहाँ तक तुम लोगों की बात है, तुम्हारे शरीर इस
मरुभूमि में गिर जाएंगे।

33“तुम्हारे बच्चे यहाँ मरुभूमि में चालीस वर्ष तक
गड़ेंरिए रहेंगे। उनको यह कष्ट होगा क्योंकि तुम लोगों
ने विश्वास नहीं किया। वे इस मरुभूमि में तब तक
रहेंगे जब तक तुम सभी यहाँ मर नहीं जाओगे। तब तुम
सबके शरीर इस मरुभूमि में दफन हो जाएंगे। 34तुम
लोग अपने पाप के लिए चालीस वर्ष तक कष्ट भोगोगे।
(तुम लोगों ने इस देश की छानबीन में जो चालीस दिन
लगाए उसके प्रत्येक दिन के लिए एक वर्ष होगा।) तुम
लोग जानोगे कि मेरा तुम लोगों के विरुद्ध होना कितना
भयानक है।

35“मैं यहोवा हूँ और मैंने यह कहा है। मैं वचन देता
हूँ कि मैं इन सभी बुरे लोगों के लिए यह करूँगा। ये
लोग मेरे विरुद्ध एक साथ आए इसलिए वे सभी यहाँ
मरुभूमि में मरेंगे।”

36जिन लोगों को मूसा ने नये प्रदेश की छानबीन के
लिए भेजा, वे ऐसे थे जो लौट आए और जो सभी
इस्राएलियों में शिकायत करते हुए फैल गए। उन लोगों
ने कहा कि लोग उस प्रदेश में प्रवेश करने के लिए
पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हैं। 37वे लोग इस्राएली लोगों में
परेशानी फैलाने के लिए उत्तरदायी थे। इसलिए यहोवा
ने एक बीमारी उत्पन्न करके उन सभी को मर जाने
दिया।

38किन्तु नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र
कालेब उन लोगों में थे जिन्हें देश की छानबीन करने
के लिए भेजा गया था और यहोवा ने उन दोनों आदमियों
को बचाया। उनको वह बीमारी नहीं हुई जिसने अन्य
लोगों को मार डाला।

लोग कनान में जाने का प्रयत्न करते हैं

39मूसा ने ये सभी बातें इस्राएल के लोगों से कहीं।
लोग बहुत अधिक दुःखी हुए। 40अगले दिन बहुत सवेरे
लोगों ने ऊँचे पहाड़ी प्रदेश की ओर बढ़ना आरम्भ
किया। लोगों ने कहा, “हम लोगों ने पाप किया है। हम
लोगों को दुःख है कि हम लोगों ने यहोवा पर विश्वास
नहीं किया। हम लोग उस स्थान पर जाएंगे जिसे यहोवा
ने देने का वचन दिया है।”

41किन्तु मूसा ने कहा, “तुम लोग यहोवा के आदेश
का पालन क्यों नहीं कर रहे हो? तुम लोग सफल नहीं
हो सकोगे। 42उस देश में प्रवेश न करो। यहोवा तुम
लोगों के साथ नहीं है। तुम लोग सरलता से अपने
शत्रुओं से हार जाओगे। 43अमालेकी और कनानी लोग
वहाँ तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे। तुम लोग यहोवा से विमुख हुए
हो। इसलिए वह तुम लोगों के साथ नहीं होगा जब तुम
लोग उनसे लड़ोगे और तुम सभी उनकी तलवार से मारे
जाओगे।”

44किन्तु लोगों ने मूसा पर विश्वास नहीं किया। वे
ऊँचे पहाड़ी प्रदेश की ओर गए। किन्तु मूसा और यहोवा
का साक्षीपत्र का सन्दूक लोगों के साथ नहीं गया।

45तब अमालेकी और कनानी लोग जो पहाड़ी प्रदेशों
में रहते थे, आए और उन्होंने इस्राएली लोगों पर आक्रमण
कर दिया। अमालेकी और कनानी लोगों ने उनको
सरलता से हरा दिया और होर्मा तक उनका पीछा
किया।

बलि के नियम

15 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“इस्राएल के लोगों से
बातें करो और उनसे कहो: तुम लोग ऐसे
प्रदेश में प्रवेश करोगे जिसे मैं तुम लोगों को तुम्हारे घर
के रूप में दे रहा हूँ। 3जब तुम उस प्रदेश में पहुँचोगे तब
तुम्हें यहोवा को आग द्वारा विशेष भेंट देनी चाहिए।
इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी। तुम अपनी
गायें, भेड़ें और बकरियों का इस्तेमाल होमबलि, बलिदानों,
विशेष मनौतियों, मेलबलि, शान्ति भेंट या विशेष पर्वों में
करोगे।

4“और उस समय जो अपनी भेंट लाएगा उसे यहोवा
को अन्नबलि भी देनी होगी। यह अन्नबलि एक क्वार्ट
जैतून के तेल में मिली हुई दो क्वार्ट* अच्छे आटे की
होगी। 5हर एक बार जब तुम एक मेमना होमबलि के
रूप में दो तो तुम्हें एक क्वार्ट दाखमधु पेय भेंट के रूप
में तैयार करनी चाहिए।

दो क्वार्ट या “1/2 हिन।”

6“यदि तुम एक मेढ़ा दे रहे हो तो तुम्हें अन्नबलि भी
तैयार करनी चाहिए। यह अन्नबलि एक चौथाई क्वार्ट
जैतून के तेल में मिली हुई चार क्वार्ट अच्छे आटे की
होनी चाहिए 7और तुम्हें एक चौथाई क्वार्ट दाखमधु पेय
भेंट के रूप में तैयार करनी चाहिए। इसे यहोवा को भेंट
करो। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

8“होमबलि, शान्ति भेंट अथवा किसी मनौती के लिए
यहोवा को भेंट के रूप में तुम एक बछड़े को तैयार कर
सकते हो। 9इसलिए तुम्हें बैल के साथ अन्नबलि भी
लानी चाहिए। अन्नबिल दो क्वार्ट जैतून के तेल में मिली
हुई छ: क्वार्ट अच्छे आटे की होनी चाहिए। 10दो क्वार्ट
दाखमधु भी पेय भेंट के रूप में लाओ। आग में जलाई
गई यह भेंट यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। 11प्रत्येक
बैल या मेढ़ा या मेमना या बकरी का बच्चा, जिसे तुम
यहोवा को भेंट करो, उसी प्रकार तैयार होना चाहिए।
12जो जानवर तुम भेंट करो उनमें से हर एक के लिए
यह करो।

13“इसलिए जब लोग यह होमबलि देंगे तो यहोवा को
यह सुगन्ध प्रसन्न करेगी। किन्तु इस्राएल के हर एक
नागरिक को इसे वैसे ही करना चाहिए जिस प्रकार मैंने
बताया है। 14और भविष्य के सभी दिनों में, यदि कोई
व्यक्ति जो इस्राएल के परिवार में उत्पन्न नहीं है और
तुम्हारे बीच रह रहा है तो उसे भी इन सब चीज़ों का
पालन करना चाहिए। उसे ये वैसे ही करना होगा जैसा
मैंने तुमको बताया है। 15इस्राएल के परिवार में उत्पन्न
लोगों के लिये जो नियम होगें वही नियम उन अन्य
लोगों के लिये भी होंगे जो तुम्हारे बीच रहते हैं। यह
नियम अब से भविष्य में लागू रहेगा। तुम और तुम्हारे
बीच रहने वाले लोग यहोवा के सामने समान होंगे।
16इसका यह तात्पर्य है कि तुम्हें एक ही विधि और
नियम का पालन करना चाहिए। वे नियम इस्राएल के
परिवार में उत्पन्न तुम्हारे लिए और अन्य लोगों के लिए
भी है जो तुम्हारे बीच रहते हैं।”

17यहोवा ने मूसा से कहा, 18“इस्राएल के लोगों से यह
कहो: मैं तुम्हें दूसरे देश में ले जा रहा हूँ। 19जब तुम वह
भोजन करो जो उस प्रदेश में उत्पन्न हो तो भोजन का
कुछ अंश यहोवा को भेंट के रूप में दो। 20तुम अन्न
इकट्ठा करोगे और इसे आटे के रूप में पीसोगे और
उसे रोटी बनाने के लिए गूँदोगे। फिर उस आटे की
पहली रोटी को यहोवा को अर्पित करोगे। वह ऐसी
अन्नबलि होगी जो खलिहान से आती है। 21यह नियम
सदा सर्वदा के लिए है। इसका तात्पर्य है कि जिस अन्न
को तुम आटे के रूप में माढ़ते हो, उसकी पहली रोटी
यहोवा को अर्पित की जानी चाहिए।

22“यदि तुम यहोवा द्वारा मूसा को दिये गए आदेशों में
से किसी का पालन करना भूल जाओ तो तुम क्या
करोगे? 23ये आदेश उसी दिन से आरम्भ हो गए थे
जिस दिन यहोवा ने इन्हें तुमको दिया था और ये आदेश
भविष्य में भी लागू रहेंगे। 24इसलिये यदि तुम कोई
गलती करते हो और इन सभी आज्ञाओं का पालन
करना भूल जाते हो तो तुम क्या करोगे? यदि इस्राएल
के सभी लोग गलती करते हैं, तो सभी लोगों को मिलकर
एक बछड़ा यहोवा को भेंट चढ़ाना चाहिए। यह होमबलि
होगी और इसकी यह सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।
बैल के साथ अन्नबलि और पेय भेंट भी याद रखो और
तुम्हें एक बकरा भी पापबलि के रूप में देना चाहिए।

25“याजक लोगों को पापों से शुद्ध करने के लिये ऐसा
करेगा। वह इस्राएल के सभी लोगों के लिए ऐसा करेगा।
लोगों ने नहीं जाना था कि वे पाप कर रहे हैं। किन्तु
जब उन्होंने यह जाना तब वे यहोवा के पास भेंट लाए।
वे एक भेंट अपने पाप के लिए देने आए और एक
होमबलि के लिये जिसे आग में जलाया जाना था। इस
प्रकार लोग क्षमा किये जाएंगे। 26इस्राएल के सभी लोग
और उनके बीच रहने वाले सभी अन्य लोग क्षमा कर
दिये जाएंगे। वे इसलिए क्षमा किये जाएंगे क्योंकि वे नहीं
जानते थे कि वे बुरा कर रहे हैं।

27“किन्तु यदि एक व्यक्ति आदेश का पालन करना
भूल जाता है तो उसे एक वर्ष की बकरी पापबलि के
रूप में लानी चाहिए। 28याजक इसे उस व्यक्ति के पापों
के लिए यहोवा को अर्पित करेगा और उस व्यक्ति को
क्षमा कर दिया जाएगा क्योंकि याजक ने उसके लिए
भुगतान कर दिया है। 29यही हर उस व्यक्ति के लिए
नियम है जो पाप करता है, किन्तु जानता नहीं कि बुरा
किया है। यही नियम इस्राएल के परिवार में उत्पन्न
लोगों के लिए है या अन्य लोगों के लिए भी जो तुम्हारे
बीच में रहते हैं।

30“किन्तु कोई व्यक्ति जो पाप करता है और जानता
है कि वह बुरा कर रहा है, वह यहोवा का अपमान
करता है। उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग भेज
देना चाहिए। यह इस्राएल के परिवार में उत्पन्न व्यक्ति
तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए, जो तुम्हारे बीच
रहता है, समान है। 31वह व्यक्ति यहोवा के आदेश के
विरुद्ध गया है। उसने यहोवा के आदेश का पालन नहीं
किया है। उस व्यक्ति को तुम्हारे समूह से अलग कर
दिया जाना चाहिए। वह व्यक्ति अपराधी ही रहेगा और
दण्ड का भागी होगा।”

एक व्यक्ति विश्राम के दिन काम करता है

32इस समय, इस्राएल के लोग अभी तक मरुभूमि में
ही थे। ऐसा हुआ कि एक व्यक्ति को जलाने के लिए
कुछ लकड़ी मिली। इसलिए वह व्यक्ति लकड़ियाँ इकट्ठी
करता रहा। किन्तु वह सब्त (विश्राम) का दिन था।
कुछ अन्य लोगों ने उसे यह करते देखा। 33जिन लोगों ने
उसे लकड़ी इकट्ठी करते देखा, वे उसे मूसा और

हारून के पास लाए और सभी लोग चारों ओर इकट्ठे
हो गए। 34उन्होंने उस व्यक्ति को वहाँ रखा क्योंकि वे
नहीं जानते थे कि उसे कैसे दण्ड दें।
35तब यहोवा ने मूसा से कहा, "इस व्यक्ति को मरना
चाहिए। सभी लोग डेरे के बाहर इसे पत्थर से मारेंगे।"
36इसलिए लोग उसे डेरे से बाहर ले गए और उसे पत्थरों
से मार डाला। उन्होंने यह वैसे ही किया जैसा मूसा को
यहोवा ने आदेश दिया था।

परमेश्वर नियमों को याद रखने में लोगों की सहायता करता है

37यहोवा ने मूसा से कहा, 38"इस्राएल के लोगों से बातें
करो और उनसे यह कहो: मैं तुम लोगों को कुछ अपने
आदेशों को याद रखने के लिए दूँगा। धागे के कई
टुकड़ों को एक साथ बांधकर उन्हें अपने वस्त्रों के
कोने पर बांधो। एक नीले रंग का धागा हर एक ऐसी
गुच्छियों में डालो। तुम इन्हें अब से हमेशा के लिये
पहनोगे। 39तुम लोग इन गुच्छियों को देखते रहोगे और
यहोवा ने जो आदेश तुम्हें दिये हैं, उन्हें याद रखोगे। तब
तुम आदेशों का पालन करोगे। तुम लोग आदेशों को
नहीं भूलोगे और आँखों तथा शरीर की आवश्यकताओं
से प्रेरित हो कर कोई पाप नहीं करोगे। 40तुम हमारे
सभी आदेशों के पालन की बात याद रखोगे। तब तुम
यहोवा के विशेष लोग बनोगे। 41मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ। वह मैं हूँ जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। मैंने
यह किया अत: मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा। मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ।"

कोरह, दातान और अबीराम मूसा के विरुद्ध हो जाते हैं

16 कोरह, दातान, अबीराम और ओन मूसा के
विरुद्ध हो गए। (कोरह यिसहार का पुत्र था।
यिसहार कहात का पुत्र था, और कहात लेवी का पुत्र
था। एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम भाई थे और
ओन पेलेत का पुत्र था। दातान, अबीराम और ओन
रूबेन के वंशज थे।) 2इन चार व्यक्तियों ने इस्राएल के
दो सौ पचास व्यक्तियों को एक साथ इकट्ठा किया
और ये मूसा के विरुद्ध आए। ये दो सौ पचास इस्राएली
व्यक्ति लोगों में आदरणीय नेता थे। वे समिति के सदस्य
चुने गए थे। 3वे एक समूह के रूप में मूसा और हारून
के विरुद्ध बात करने आए। इन व्यक्तियों ने मूसा और
हारून से कहा, "हम उससे सहमत नहीं जो तुमने किया
है। इस्राएली समूह के सभी लोग पवित्र हैं। यहोवा उनके
साथ है। तुम अपने को सभी लोगों से ऊँचे स्थान पर
क्यों रख रहेहो?"
4जब मूसा ने यह बात सुना तो वह भूमि पर गिर
गया। 5तब मूसा ने कोरह और उसके अनुयायियों से
कहा, "कल सवेरे यहोवा दिखाएगा कि कौन व्यक्ति
सचमुच उसका है। यहोवा दिखाएगा कि कौन व्यक्ति
सचमुच पवित्र है और यहोवा उसे अपने समीप ले
जाएगा। यहोवा उस व्यक्ति को चुनेगा और यहोवा उस
व्यक्ति को अपने निकट लेगा। 6इसलिए कोरह, तुम्हें
और तुम्हारे सभी अनुयायियों को यह करना चाहिए:
7किसी विशेष अग्निपात्र में आग और सुगन्धित धूप
रखो। तब उन पात्रों को यहोवा के सामने लाओ। यहोवा
एक पुरुष को चुनेगा जो सचमुच पवित्र होगा। किन्तु
मुझे डर है कि तुमने और तुम्हारे लेवीवंशी भाईयों ने
सीमा का अतिक्रमण किया है।"
8मूसा ने कोरह से यह भी कहा, "लेवीवंशियों! मेरी
बात सुनो। 9तुम लोगों को प्रसन्न होना चाहिए कि इस्राएल
के परमेश्वर ने तुम लोगों को अलग और विशेष बनाया
है। तुम लोग बाकी इस्राएली लोगों से भिन्न हो। यहोवा ने
तुम्हें अपने समीप लिया जिससे तुम यहोवा की उपासना
में इस्राएल के लोगों की सहायता के लिए यहोवा के
पवित्र तम्बू में विशेष कार्य कर सको। क्या यह पर्याप्त
नहीं है? 10यहोवा ने तुम्हें और अन्य सभी लेवीवंश के
लोगों को अपने समीप लिया है। किन्तु अब तुम याजक
भी बनना चाहते हो। 11तुम और तुम्हारे अनुयायी परस्पर
एकत्र होकर यहोवा के विरोध में आए हो। क्या हारून
ने कुछ बुरा किया है? नहीं। तो फिर उसके विरुद्ध
शिकायत करने क्यों आए हो?"
12तब मूसा ने एलीआब के पुत्रों दातान और अबीराम
को बुलाया। किन्तु दोनों आदमियों ने कहा, "हम लोग
नहीं आएंगे! 13तुम हमें उस देश से बाहर निकाल लाए
हो जो सम्पन्न था और जहाँ दूध और मधु की नदियाँ
बहती थीं। तुम हम लोगों को यहाँ मरुभूमि में मारने के
लिए लाए हो और अब तुम दिखाना चाहते हो कि तुम
हम लोगों पर अधिक अधिकार भी रखते हो। 14हम
लोग तुम्हारा अनुसरण क्यों करें? तुम हम लोगों को
उस नये देश में नहीं लाए हो जो सम्पन्न है और जिसमें
दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं। तुमने हम लोगों को
वह देश नहीं दिया है जिसे देने का वचन यहोवा ने दिया
था। तुमने हम लोगों को खेत या अंगूर के बाग नहीं दिये
हैं। क्या तुम इन लोगों को अपना गुलाम बनाओगे?
नहीं! हम लोग नहीं आएंगे।"
15इसलिए मूसा बहुत क्रोधित हो गया। उसने यहोवा
से कहा, "इनकी भेंटें स्वीकार न कर! मैंने इनसे कुछ
नहीं लिया है-एक गधा तक नहीं और मैंने इनमें से
किसी का बुरा नहीं किया है।"
16तब मूसा ने कोरह से कहा, "तुम्हें और तुम्हारे
अनुयायियों को कल यहोवा के सामने खड़ा होना चाहिए।
हारून तुम्हारे साथ यहोवा के सामने खड़ा होगा। 17तुम
में से हर एक को एक अग्निपात्र लेना चाहिए और
उसमें धूप रखनी चाहिए। ये दो सौ पचास अग्निपात्र

प्रमुखों के लिये होंगे। हर एक अग्निपात्र को यहोवा के सामने ले जाओ। तुम्हें और हारून को अपने अग्निपात्रों को यहोवा के सामने ले जाना चाहिए।" **18**इसलिए हर एक व्यक्ति ने एक अग्निपात्र लिया और उसमें जलती हुई धूप रखी। तब वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े हुए। मूसा और हारून भी वहाँ खड़े हुए। **19**कोरह ने अपने सभी अनुयायियों को एक साथ इकट्ठा किया। ये वे व्यक्ति हैं जो मूसा और हारून के विरुद्ध हो गए थे। कोरह ने उन सभी को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा किया। तब यहोवा का तेज वहाँ हर एक व्यक्ति पर प्रकट हुआ।

20यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, **21**"इन पुरुषों से दूर हटो! मैं अब उन्हें नष्ट करना चाहता हूँ!"

22किन्तु मूसा और हारून भूमि पर गिर पड़े और चिल्लाए, "हे परमेश्वर, तू जानता है कि लोग क्या सोच रहे हैं। कृपा करके इस पूरे समूह पर क्रोधित न हो। एक ही व्यक्ति ने सचमुच पाप किया है।"

23तब यहोवा ने मूसा से कहा, **24**"लोगों से कहो कि वे कोरह, दातान और अबीराम के डेरों से दूर हट जाए।"

25मूसा खड़ा हुआ और दातान और अबीराम के पास गया। इस्राएल के सभी अग्रज (नेता) उसके पीछे चले। **26**मूसा ने लोगों को चेतावनी दी, "इन बुरे आदमियों के डेरों से दूर हट जाओ। इनकी किसी चीज़ को न छुओ! यदि तुम लोग छूओगे तो इनके पापों के कारण नष्ट हो जाओगे।"

27इसलिए लोग कोरह, दातान और अबीराम के तम्बुओं से दूर हट गए। दातान और अबीराम अपने डेरे के बाहर अपनी पत्नी, बच्चे और छोटे शिशुओं के साथ खड़े थे। **28**तब मूसा ने कहा, "मैं प्रमाण प्रस्तुत करूँगा कि यहोवा ने मुझे उन चीज़ों को करने के लिए भेजा है जो मैंने तुमको कहा है। मैं दिखाऊँगा कि वे सभी मेरे विचार नहीं थे। **29**ये पुरुष यहाँ मरेंगे। किन्तु यदि ये सामान्य ढंग से मरते हैं अर्थात् जिस प्रकार आदमी सदा मरते हैं तो यह प्रकट करेगा कि यहोवा ने वस्तुत: मुझे नहीं भेजा है। **30**किन्तु यदि यहोवा इन्हें दूसरे ढंग अर्थात् कुछ नये ढंग से मरने देता है तो तुम लोग जानोगे कि इन व्यक्तियों ने सचमुच यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। पृथ्वी फटेगी और इन व्यक्तियों को निगल लेगी। वे अपनी कब्रों में जीवित ही जाएंगे और इनकी हर एक चीज़ इनके साथ नीचे चली जाएगी।"

31जब मूसा ने इन बातों का कहना समाप्त किया, व्यक्तियों के पैरों के नीचे पृथ्वी फटी। **32**यह ऐसा था मानों पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और इन्हें खा गई और उनके सारे परिवार और कोरह के सभी व्यक्ति तथा उनकी सभी चीज़ें पृथ्वी में चली गई। **33**वे जीवित ही कब्र में चले गए। उनकी हर एक चीज़ उनके साथ गई। तब पृथ्वी उनके ऊपर से बन्द हो गई। वे नष्ट हो गए और वे उस डेरे से लुप्त हो गए। **34**इस्राएल के लोगों ने नष्ट किये जाते हुए लोगों का रोना चिल्लाना सुना। इसलिए वे चारों ओर दौड़ पड़े और कहने लगे, "पृथ्वी हम लोगों को भी निगल जाएगी।"

35तब यहोवा से आग आई और उसने दो सौ पचास पुरुषों को, जो सुगन्धि भेंट कर रहे थे, नष्ट कर दिया।

36यहोवा ने मूसा से कहा, **37-38**"हारून के पुत्र याजक एलीआज़ार से कहो कि वह आग में से सुगन्धि के पात्रों को एकत्र करे। डेरे से दूर के क्षेत्र में उन कोयलों को फैलाओ। सुगन्धि के बर्तन अब भी पवित्र हैं। ये वे पात्र हैं जो उन व्यक्तियों के हैं जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया था। उनके पाप का मूल्य उनका जीवन हुआ। बर्तनों को पीट कर पत्तरों में बदलो। इन धातुओं के पत्तरों का उपयोग वेदी को ढकने के लिए करो। वे पवित्र थे क्योंकि उन्हें यहोवा के सामने प्रस्तुत किया गया था। उन चपटे बर्तनों को इस्राएल के सभी लोगों के लिए चेतावनी बनने दो।"

39तब याजक एलीआज़ार ने काँसे के उन सभी बर्तनों को इकट्ठा किया जिन्हें वे लोग लाए थे। वे सभी व्यक्ति जल गए थे, किन्तु बर्तन तब भी वहाँ थे। तब एलीआज़ार ने कुछ व्यक्तियों को बर्तनों को, चपटी धातु के रूप में पीटने को कहा। तब उसने धातु की चपटी चादरों को वेदी पर रखा। **40**उसने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा के द्वारा आदेश दिया था। यह संकेत था कि जिससे इस्राएल के लोग याद रख सकें कि केवल हारून के परिवार के व्यक्ति को यहोवा के सामने सुगन्धि भेंट करने का अधिकार है। यदि कोई अन्य व्यक्ति यहोवा के सामने सुगन्धि जलाता है तो वह व्यक्ति कोरह और उसके अनुयायियों की तरह हो जाएगा।

हारून लोगों की रक्षा करता है

41अगले दिन इस्राएल के लोगों ने मूसा और हारून के विरुद्ध शिकायत की। उन्होंने कहा, "तुमने यहोवा के लोगों को मारा है।"

42मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े थे। लोग उस स्थान पर मूसा और हारून की शिकायत करने के लिए इकट्ठा हुए। किन्तु जब उन्होंने मिलापवाले तम्बू को देखा तो बादल ने उसे ढक लिया और वहाँ यहोवा का तेज प्रकट हुआ। **43**तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के सामने गए। **44**तब यहोवा ने मूसा से कहा, **45**"उन लोगों से दूर हट जाओ जिससे मैं उन्हें अब नष्ट कर दूँ।" मूसा और हारून धरती पर गिर पड़े।

46तब मूसा ने हारून से कहा, "वेदी की आग और अपने काँसे के बर्तन को लो। तब इसमें सुगन्धि डालो। लोगों के समूह के पास शीघ्र जाओ और उनके पाप के लिए भुगतान करो। यहोवा उन पर क्रोधित है। परेशानी आरम्भ हो चुकी है।"

47इसलिए, हारून ने मूसा के कथनानुसार काम किया।
सुगन्धि और आग को लेने के बाद वह लोगों के बीच
दौड़कर पहुँचा। किन्तु लोगों में बीमारी पहले ही आरम्भ
हो चुकी थी। हारून ने लोगों के भुगतान के लिए
सुगन्धि की भेंट दी। 48हारून मरे हुए और जीवित लोगों
में खड़ा हुआ और तब बीमारी रूक गई।
49किन्तु इसके पहले कि हारून उनके पापों के लिए
भुगतान करे, चौदह हजार सात सौ लोग उस बीमारी से
मर गए। तब यहोवा ने इसे रोका। वहाँ ऐसे लोग भी थे
जो कोरह के कारण मरे। 50 तब हारून मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौटा। लोगों की भयंकर
बीमारी रोक दी गई।

परमेश्वर प्रमाणित करता है कि हारून महायाजक है

17 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 "इस्राएल के लोगों से
कहो। अपने लोगों से बारह लकड़ी की
छड़ियाँ लें। बारह परिवार समूहों में हर एक के नेता से
एक छड़ी लो। हर एक व्यक्ति की छड़ी पर उसका नाम
लिख दो। 3लेवी की छड़ी पर हारून का नाम लिखो।
बारह परिवार समूहों के हर एक मुखिया की छड़ी होनी
चाहिए। 4इन छड़ियों को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने
मिलापवाले तम्बू में रखो। यही वह स्थान है जहाँ मैं
तुमसे मिलता हूँ। 5मैं एक व्यक्ति को चुनूँगा। तुम जान
जाओगे कि किस व्यक्ति को मैंने चुना है। क्योंकि उस
छड़ी में नयी पत्तियाँ उगनी आरम्भ होंगी। इस प्रकार,
मैं लोगों को अपने और तुम्हारे विरुद्ध सदा शिकायत
करने से रोक दूँगा।"
6इसलिए मूसा ने इस्राएली लोगों से बातें कीं। प्रत्येक
नेता ने उसे एक छड़ी दी। सारी छड़ियों की संख्या बारह
थी। हर एक परिवार समूह के नेता की एक छड़ी उसमें
थी। हारून की छड़ी उनमें थी। 7मूसा ने साक्षी के
मिलापवाले तम्बू में यहोवा के सामने छड़ियों को रखा।
8अगले दिन मूसा ने तम्बू में प्रवेश किया। उसने देखा
कि हारून की वह छड़ी, जो लेवीवंश की थी, एक मात्र
ऐसी थी जिससे नयी पत्तियाँ उगनी आरम्भ हुई थीं। उस
छड़ी में कलियाँ, फूल और बादाम भी लग गए थे।
9इसलिए मूसा यहोवा के स्थान से सभी छड़ियों को
लाया। मूसा ने इस्राएल के लोगों को छड़ियाँ दिखाई। उन
सभी ने छड़ियों को देखा और हर एक पुरुष ने अपनी
छड़ी वापस ली।
10तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून की छड़ी को
तम्बू में रख दो। यह उन लोगों के लिए चेतावनी होगी
जो सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं। यह उनकी मेरे विरुद्ध
शिकायतों को रोकेगा। इस प्रकार वे नहीं मरेंगे।" 11मूसा
ने उन आदेशों का पालन किया जो यहोवा ने दिए थे।
12इस्राएल के लोगों ने मूसा से कहा, "हम जानते हैं
कि हम मरेंगे! हमें नष्ट होना ही है! हम सभी को
नष्ट होना ही हैं! 13कोई व्यक्ति यहोवा के पवित्र
तम्बू के निकट आने पर भी मरेगा। क्या हम सभी
मर जाएंगे?"

याजकों और लेवीवंशियों के कार्य

18 यहोवा ने हारून से कहा, "तुम, तुम्हारे पुत्र
और तुम्हारे पिता का परिवार अब किसी भी
बुराई के लिए उत्तरदायी है जो पवित्र स्थान के विरुद्ध
की जाएंगी। तुम और तुम्हारे पुत्र उन बुराइयों के लिए
उत्तरदायी होंगे जो याजकों के विरुद्ध होंगी। 2अन्य लेवीवंशी
लोगों को अपना साथ देने के लिए अपने परिवार समूह
से लाओ। वे तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की सहायता
साक्षी के पवित्र तम्बू के कार्यों को करने में करेंगे।
3लेवी परिवार के वे लोग तुम्हारे अधीन हैं। वे उन सभी
कार्यों को करेंगे जिन्हें तम्बू में किया जाना है। किन्तु
उन्हें वेदी या पवित्र स्थान की चीज़ों के पास नहीं जाना
चाहिए। यदि वे ऐसा करेंगे तो वे मर जायेंगे और तुम भी
मर जाओगे। 4वे तुम्हारे साथ होंगे और तुम्हारे साथ
काम करेंगे। वे मिलापवाले तम्बू की देखभाल करने
के उत्तरदायी होंगे। सभी कार्य, जिन्हें तम्बू में किया
जाना चाहिए, वे करेंगे। अन्य कोई भी उस स्थान के
निकट नहीं आएगा जहाँ तुम हो।
5"पवित्र स्थान और वेदी की देखभाल करने के
उत्तरदायी तुम हो। मैं इस्राएल के लोगों पर फिर क्रोधित
होना नहीं चाहता। 6मैंने तुम्हारे लोगों अर्थात् लेवीवंश
के लोगों को स्वयं इस्राएल के सभी लोगों में से चुना है।
वे तुमको भेंट की तरह हैं। उनका एकमात्र उपयोग
परमेश्वर की सेवा और मिलापवाले तम्बू के काम को
करने में है। 7किन्तु केवल तुम और तुम्हारे पुत्र याजक
के रूप में सेवा कर सकते हो। एक मात्र तुम्हीं वेदी के
पास जा सकते हो। केवल तुम्हीं पर्दे के भीतर अति
पवित्र स्थान में जा सकते हो। मैं याजक के रूप में
तुम्हारी सेवा को तुम्हें एक भेंट के रूप में दे रहा हूँ।
कोई भी अन्य, जो पवित्र स्थान के पास आएगा, मार
डाला जाएगा।"
8तब यहोवा ने हारून से कहा, "मैंने अपने लिए
चढ़ाई गई भेटों का उत्तरदायित्व तुमको दिया है। इस्राएल
के लोग जो सारी भेंट मुझको देंगे, वह मैं तुमको देता हूँ।
तुम और तुम्हारे पुत्र इन पवित्र भेंटों को आपस में बाँट
सकते हैं। यह सदा तुम्हारी होंगी। 9उन सभी पवित्र भेंटों
में तुम्हारा अपना भाग होगा जो जलाई नहीं जाएंगी। लोग
मेरे पास भेंटे सर्वाधिक पवित्र भेंट के रूप में लाते हैं। ये
अन्नबलि, या पापबलि या दोषबलि है। किन्तु ये सभी
चीजें तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की होंगी। 10इन सबको
सर्वाधिक पवित्र चीज़ों के रूप में खाओ। तुम्हारे परिवार
का हर एक पुरुष इसे खाएगा। तुम्हें इसको पवित्र
मानना चाहिए। 11और वे सभी भी जो इस्राएल के लोगों

द्वारा उत्तोलन-भेंट के रूप में दी जाएंगी, तुम्हारी ही होंगी। मैं इसे तुमको, तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को देता हूँ। यह तुम्हारा भाग है। तुम्हारे परिवार का हर एक व्यक्ति जो पवित्र होगा, इसे खा सकेगा।

12"और मैं सारा अच्छा जैतून का तेल, सारी सर्वोत्तम नयी दाखमधु और अन्न तुम्हें देता हूँ। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें इस्राएल के लोग मुझे अर्थात् अपने यहोवा को देते हैं। ये वे पहली चीज़ें हैं जिन्हें वे अपनी फसल पकने पर इकट्ठी करते हैं। 13जब लोग अपनी फसलें इकट्ठी करते हैं तब लोग पहली चीज़ यहोवा के पास लाते हैं। अत: ये चीज़ें मैं तुमको दूँगा और हर एक व्यक्ति जो तुम्हारे परिवार में पवित्र है, इसे खा सकेगा। 14और इस्राएल में हर एक चीज़ जो यहोवा को दी जाती है, तुम्हारी है।

15"किसी भी परिवार में पहलौठा बालक या जानवर यहोवा की भेंट होगा और वह तुम्हारा होगा। किन्तु तुम्हें प्रत्येक पहलौठे बच्चे और हर एक पहलौठे अशुद्ध पशु को फिर से खरीदने के लिए स्वीकार करना चाहिए। तब पहलौठा बच्चा फिर उस परिवार का हो जाएगा। 16जब वे एक महीने के हो जाए तब तुम्हें उनके लिए भुगतान ले लेना चाहिए। उसका मूल्य दो औंस चाँदी होगी।

17"किन्तु तुम्हें पहलौठे गाय, भेड़ या बकरे के लिए भुगतान नहीं लेना चाहिए। वे पशु पवित्र हैं-वे शुद्ध हैं। उनका खून वेदी पर छिड़को और उनकी चर्बी जलाओ। यह भेंट अग्नि द्वारा समर्पित है। इस भेंट की सुगन्ध मेरे लिए अर्थात् यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। 18किन्तु इन पशुओं का माँस तुम्हारा होगा। और उत्तोलन भेंट की छाती भी तुम्हारी होगी। अन्य भेंटों की दायीं जांघ तुम्हारी होगी। 19कोई भी चीज़, जिसे लोग पवित्र भेंट के रूप में मुझे चढ़ाते हैं, मैं यहोवा उसे तुमको देता हूँ। यह तुम्हारा हिस्सा है। मैं इसे तुमको और तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को देता हूँ। यह यहोवा के साथ की गयी वाचा है जो सदा बनी रहेगी। मैं यह वचन तुमको और तुम्हारे वंशजों को देता हूँ।"

20यहोवा ने हारून से यह भी कहा, "तुम कोई भूमि नहीं प्राप्त करोगे और ऐसी कोई चीज़ नहीं रखोगे जैसी अन्य लोग रखते हैं। मैं, यहोवा, तुम्हारा रहूँगा। इस्राएल के लोग वह देश प्राप्त करेंगे जिसके लिए मैंने वचन दिया है। किन्तु तुम्हारे लिए अपना उपहार मैं स्वयं होऊँगा।

21"इस्राएल के लोग उनके पास जो कुछ होगा उसका दसवाँ भाग देंगे। इस प्रकार मैं लेवीवंश के लोगों को दसवाँ भाग देता हूँ। यह उनके उस कार्य के लिए भुगतान है जो वे मिलापवाले तम्बू में सेवा करते हुए करते हैं। 22किन्तु इस्राएल के अन्य लोगों को मिलापवाले तम्बू के निकट कभी नहीं जाना चाहिए। यदि वे ऐसा करते हैं तो उन्हें अपने पाप के लिए भुगतान करना पड़ेगा और वे मर जाएंगे! 23जो लेवीवंशी मिलापवाले तम्बू में काम कर रहे हैं वे इसके विरुद्ध किये गए पापों के लिए उत्तरदायी हैं। यह नियम भविष्य के दिनों के लिए भी रहेगा। लेवीवंशी लोग उस भूमि को नहीं लेंगे जिसे मैंने इस्राएल के अन्य लोगों को दिया है। 24किन्तु इस्राएल के लोगों के पास जो कुछ होगा उसका दसवाँ हिस्सा मुझको देंगे। इस तरह मैं लेवीवंशी लोगों को दसवाँ हिस्सा दूँगा। यही कारण है कि मैंने लेवीवंशियों के लिये कहा है: वे लोग उस भूमि को नहीं पाएंगे जिसे मैंने इस्राएल के लोगों को देने का वचन दिया है।"

25यहोवा ने मूसा से कहा, 26"लेवीवंशी लोगों से बातें करो और उनसे कहो: इस्राएल के लोग अपनी हर एक चीज का दसवाँ भाग यहोवा को देंगे। वह दसवाँ भाग लेवीवंशियों का होगा। किन्तु तुम्हें उसका दसवाँ भाग यहोवा को उनकी भेंट के रूप में देना चाहिए। 27फसल कटने के बाद तुम लोग खलिहानों से अन्न और दाखमधुशाला से रस प्राप्त करोगे। तब वह भी यहोवा को तुम्हारी भेंट होगी। 28इस प्रकार, तुम यहोवा को वैसे ही भेंट दोगे जिस प्रकार इस्राएल के अन्य लोग देते हैं। तुम इस्राएल के लोगों का दिया हुआ दसवाँ भाग प्राप्त करोगे और तब तुम उसका दसवाँ भाग याजक हारून को दोगे। 29जब इस्राएल के लोग अपनी हर एक चीज़ का दसवाँ भाग दें तो तुम्हें उनमें से सर्वोत्तम और पवित्रतम भाग चुनना चाहिए। वही दसवाँ भाग है जिसे तुम्हें यहोवा को देना चाहिए।

30 "मूसा, लेवियों से यह कहो: इस्राएल के लोग तुम लोगों को अपनी फसल या अपनी दाखमधु का दसवाँ भाग देंगे। तब तुम लोग उसका सर्वोत्तम भाग यहोवा को दोगे। 31जो बचेगा उसे तुम और तुम्हारे परिवार के व्यक्ति खा सकते हैं। यह तुम लोगों के उस काम के लिए भुगतान है जो तुम लोग मिलापवाले तम्बू में करते हो। 32और यदि तुम सदा इसका सर्वोत्तम भाग यहोवा को देते रहोगे तो तुम कभी दोषी नहीं होगे। तुम इस्राएल के लोगों की पवित्र भेंट के प्रति पाप नहीं करोगे और तुम मरोगे नहीं।"

लाल गाय की राख

19 यहोवा ने मूसा और हारून से बात की। उसने कहा, 2"ये नियम और उपदेश हैं जिन्हें यहोवा इस्राएल के लोगों को देता है। उन्हें दोष से रहित एक लाल गाय लेनी चाहिए और उसे तुम्हारे पास लाना चाहिए। उस गाय को कोई खरोंच भी न लगी हो और उस गाय के कंधे पर कभी जुआ* नहीं रखा गया हो।

जुआ एक डंडा जो किसी व्यक्ति या जानवर को भारी बोझ ढोने या गाड़ी खींचने में सहायक होता है।

3इस गाय को याजक एलीआज़ार को दो। एलीआज़ार गाय को डेरे से बाहर ले जाएगा और वह वहाँ गाय को मारेगा। 4तब याजक एलीआज़ार को इसका कुछ खून अपनी उंगलियों पर लगाना चाहिए और उसे कुछ खून पवित्र तम्बू की दिशा में छिड़कना चाहिए। उसे यह सात बार करना चाहिए। 5तब पूरी गाय को उसके सामने जलाना चाहिए। चमड़ा, माँस, खून और आतें सभी जला डालनी चाहिए।

6तब याजक को एक देवदारु की लकड़ी, एक जूफा की शाखा और लाल रंग का कपड़ा लेना चाहिए। याजक को इन चीज़ों को उस आग में डालना चाहिए जिसमें गाय जल रही हो। 7तब याजक को, अपने को तथा अपने कपड़ों को पानी से धोना चाहिए। तब उसे डेरे में लौटना चाहिए। याजक सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 8जो व्यक्ति गाय को जलाए उसे अपने को तथा अपने वस्त्रों को पानी से धोना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

9"तब एक पुरुष जो शुद्ध होगा, गाय की राख को इकट्ठा करेगा। वह इस राख को डेरे के बाहर एक शुद्ध स्थान पर रखेगा। यह राख उस समय उपयोग में आएगी जब लोग शुद्ध होने के लिए विशेष संस्कार करेंगे। यह राख व्यक्ति के पाप को दूर करने के लिए उपयोग में आएगी।

10"वह व्यक्ति, जिसने गाय की राख को इकट्ठा किया, अपने कपड़े धोएगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

"यह नियम सदा चलता रहेगा। यह नियम इस्राएल के नागरिकों के लिए है और यह उन विदेशियों के लिए भी है जो तुम्हारे बीच रहते हैं। 11यदि कोई व्यक्ति एक मरे व्यक्ति को छूता है, तो वह सात दिन के लिए अशुद्ध हो जाएगा। 12उसे अपने को तीसरे दिन तथा फिर सातवें दिन विशेष पानी से धोना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करता, तो वह अशुद्ध रह जाएगा। 13यदि कोई व्यक्ति किसी शव को छूता है, तो वह व्यक्ति अशुद्ध है। यदि वह व्यक्ति अशुद्ध रहता है और तब पवित्र तम्बू में जाता है तो पवित्र तम्बू अशुद्ध हो जाती है। इसलिए उस व्यक्ति को इस्राएल के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए। यदि अशुद्ध व्यक्ति पर विशेष जल नहीं डाला जाता तो वह व्यक्ति अशुद्ध रहेगा।

14"यह नियम उन लोगों से सम्बन्धित है जो अपने खेमों में मरते हैं। यदि कोई व्यक्ति खेमें में मरता है तो उस खेमे का हर एक व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा। वे सात दिन तक अशुद्ध रहेंगे 15और हर एक ढक्कन रहित बर्तन और घड़ा अशुद्ध हो जाता है। 16यदि कोई शव को छूता है, तो वह व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। यह तब भी सत्य होगा जब व्यक्ति बाहर देश में मरा हो या युद्ध में मारा गया हो। यदि कोई व्यक्ति मरे व्यक्ति की हड्डी या किसी कब्र को छूता है तो वह व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है।

17"इसलिए तुम्हें दग्ध गाय की राख का उपयोग उस व्यक्ति को पुन: शुद्ध करने के लिए करना चाहिए। स्वच्छ पानी* घड़े में रखी हुई राख पर डालो। 18शुद्ध व्यक्ति को एक जूफा की शाखा लेनी चाहिए और इसे पानी में डुबाना चाहिए। तब उसे तम्बू, बर्तनों तथा डेरे में जो व्यक्ति हैं उन पर यह जल छिड़कना चाहिए। तुम्हें यह उन सभी व्यक्तियों के साथ करना चाहिए जो शव को छुएंगे। तुम्हें यह उस के साथ भी करना चाहिए जो युद्ध में मरे व्यक्ति के शव को छूता है या उस किसी के साथ भी जो किसी मरे व्यक्ति की हड्डियों या कब्र को छूता है।

19"तब कोई शुद्ध व्यक्ति इस जल को अशुद्ध व्यक्ति पर तीसरे दिन और फिर सातवें दिन छिड़के। सातवें दिन वह व्यक्ति शुद्ध हो जाता है। उसे अपने कपड़ों को पानी में धोना चाहिए। वह सन्ध्या के समय पवित्र हो जाता है।

20"यदि कोई व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है और शुद्ध नहीं होता तो उसे इस्राएल के लोगों से अलग कर देना चाहिए। उस व्यक्ति पर विशेष पानी नहीं छिड़का गया। वह शुद्ध नहीं हुआ। तो वह पवित्र तम्बू को अशुद्ध कर सकता है। 21यह नियम तुम्हारे लिए सदा के लिए होगा। जो व्यक्ति इस विशेष जल को छिड़कता है, उसे भी अपने कपड़े अवश्य धो लेने चाहिए। कोई व्यक्ति जो इस विशेष जल को छुएगा, वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 22यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति किसी अन्य को छूए, तो वह व्यक्ति भी अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।"

मरियम मरी

20 इस्राएल के लोग सीन मरुभूमि में पहले महीने में पहुँचे। लोग कादेश में ठहरे। मरियम की मृत्यु हो गई और वह वहाँ दफनाई गई।

मूसा की गलती

2उस स्थान पर लोगों के लिये पर्याप्त पानी नहीं था। इसलिए लोग मूसा और हारून के विरुद्ध शिकायत करने के लिए इकट्ठे हुए। 3लोगों ने मूसा से बहस की। उन्होंने कहा, "क्या ही अच्छा होता हम अपने भाइयों की तरह यहोवा के सामने मर गए होते। 4तुम यहोवा के लोगों को इस मरुभूमि में क्यों लाए? क्या तुम चाहते हो कि हम और हमारे जानवर यहाँ मर जाए? तुम हम लोगों को मिस्र से क्यों लाए? 5तुम हम लोगों को इस बुरे

स्वच्छ पानी शाब्दिक, "जीवन–जल" इसका अर्थ संभवत: ताजा बहता पानी है।

स्थान पर क्यों लाए? यहाँ कोई अन्न नहीं है, कोई
अंजीर, अंगूर या अनार नहीं है और यहाँ पीने के लिये
पानी नहीं है।" 6इसलिए मूसा और हारून ने लोगों को
छोड़ा और वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पहुँचे। उन्होंने
दण्डवत् (प्रणाम) किया और उन पर यहोवा का तेज
प्रकाशित हुआ।

7यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 8"अपने
भाई हारून और लोगों की भीड़ को साथ लो और उस
चट्टान तक जाओ। अपनी छड़ी को भी लो। लोगों के
सामने चट्टान से बातें करो। तब चट्टान से पानी बहेगा
और तुम वह पानी अपने लोगों और जानवरों को दे
सकते हो।"

9छड़ी यहोवा के सामने पवित्र तम्बू में थी। मूसा ने
यहोवा के कहने के अनुसार छड़ी ली। 10तब उसने
तथा हारून ने लोगों को चट्टान के सामने इकट्ठा
होने को कहा। तब मूसा ने कहा, "तुम लोग सदा
शिकायत करते हो। अब मेरी बात सुनो। हम इस चट्टान
से पानी बहायेंगे।" 11मूसा ने अपनी भुजा उठाई और दो
बार चट्टान पर चोट की। चट्टान से पानी बहने लगा
और लोगों तथा जानवरों ने पानी पिया।

12किन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "इस्राएल
के सभी लोग चारों ओर इकट्ठे थे। किन्तु तुमने मुझको
सम्मान नहीं दिया। तुमने लोगों को नहीं दिखाया कि
पानी निकालने की शक्ति मुझसे तुममें आई। तुमने
लोगों को यह नहीं बताया कि तुमने मुझ पर विश्वास
किया। मैं उन लोगों को वह देश दूँगा मैंने जिसे देने का
वचन दिया है। लेकिन तुम उस देश में उनको पहुँचाने
वाले नहीं रहोगे।"

13इस स्थान को मरीबा का पानी कहा जाता था। यही
वह स्थान था जहाँ इस्राएल के लोगों ने यहोवा के साथ
बहस की और यह वह स्थान था जहाँ यहोवा ने यह
दिखाया कि वह पवित्र था।

एदोम ने इस्राएल को पार नहीं होने दिया

14जब मूसा कादेश में था, उसने कुछ व्यक्तियों को
एदोम के राजा के पास एक संदेश के साथ भेजा।
सन्देश यह था: "तुम्हारे भाई इस्राएल के लोग तुमसे यह
कहते हैं: तुम जानते हो कि हम लोगों ने कितनी
कठिनाइयाँ सही हैं। 15अनेक वर्ष पहले हमारे पूर्वज
मिस्र चले गये थे और हम लोग वहाँ अनेक वर्ष रहे।
मिस्र के लोग हम लोगों के प्रति क्रूर थे। 16किन्तु हम
लोगों ने यहोवा से सहायता के लिए प्रार्थना की।" यहोवा
ने हम लोगों की प्रार्थना सुनी और उन्होंने हम लोगों की
सहायता के लिए एक दूत भेजा। यहोवा हम लोगों को
मिस्र से बाहर लाया है।

"अब हम लोग यहाँ कादेश में हैं जहाँ से तुम्हारा
प्रदेश आरम्भ होता है। 17कृपया अपने देश से हम लोगों
को यात्रा करने दें। हम लोग किसी खेत या अंगूर के
बाग से यात्रा नहीं करेंगे। हम लोग तुम्हारे किसी कुएँ से
पानी नहीं पीएंगे। हम लोग केवल राजपथ से यात्रा
करेंगे। हम राजपथ को छोड़कर दायें या बायें नहीं
बढ़ेंगे। हम लोग तब तक राजपथ पर ही ठहरेंगे जब
तक तुम्हारे देश को पार नहीं कर जाते।"

18किन्तु एदोम के राजा ने उत्तर दिया, "तुम हमारे
देश से होकर यात्रा नहीं कर सकते। यदि तुम हमारे
देश से होकर यात्रा करने का प्रयत्न करते हो तो हम
लोग आएंगे और तुमसे तलवारों से लड़ेंगे।"

19इस्राएल के लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोग मुख्य
सड़क से यात्रा करेंगे। यदि हमारे जानवर तुम्हारा कुछ
पानी पीएंगे, तो हम लोग उसके मूल्य का भुगतान
करेंगे। हम लोग तुम्हारे देश से केवल चलकर पार
जाना चाहते हैं। हम लोग इसे अपने लिए लेना नहीं
चाहते।"

20किन्तु एदोम ने फिर उत्तर दिया, "हम अपने देश से
होकर तुम्हें जाने नहीं देंगे।"

तब एदोम के राजा ने एक विशाल और शक्तिशाली
सेना इकट्ठी की और इस्राएल के लोगों से लड़ने के
लिए निकल पड़ा। 21एदोम के राजा ने इस्राएल के लोगों
को अपने देश से यात्रा करने से मना कर दिया और
इस्राएल के लोग मुड़े और दूसरे रास्ते से चल पड़े।

हारून मर जाता है

22इस्राएल के सभी लोगों ने कादेश से होर पर्वत तक
यात्रा की। 23होर पर्वत एदोम की सीमा पर था। यहोवा
ने मूसा और हारून से कहा, 24"हारून को अपने पूर्वजों
के साथ जाना होगा। यह उस प्रदेश में नहीं जाएगा जिसे
देने के लिए मैंने इस्राएल के लोगों को वचन दिया है।
मूसा, मैं तुमसे यह कहता हूँ क्योंकि तुमने और हारून
ने मरीबा के पानी के विषय में मेरे दिये आदेश का पूरी
तरह पालन नहीं किया। 25हारून और उसके पुत्र
एलीआज़ार को होर पर्वत पर लाओ।

26हारून के विशेष वस्त्रों को उससे लो और उन
वस्त्रों को उसके पुत्र एलीआज़ार को पहनाओ। हारून
वहाँ पर्वत पर मरेगा और वह अपने पूर्वजों के साथ हो
जाएगा।"

27मूसा ने यहोवा के आदेश का पालन किया। मूसा,
हारून और एलीआज़ार होर पर्वत पर गए। इस्राएल के
सभी लोगों ने उन्हें जाते देखा। 28मूसा ने हारून के वस्त्र
उतार लिए और उन वस्त्रों को हारून के पुत्र
एलीआज़ार को पहनाया। तब हारून पर्वत की चोटी
पर मर गया। मूसा और एलीआज़ार पर्वत से उतर
आए। 29तब इस्राएल के सभी लोगों ने जाना कि हारून
मर गया। इसलिए इस्राएल के हर व्यक्ति ने तीस दिन
तक शोक मनाया।

कनानियों से युद्ध

21 अराद का कनानी राजा नेगेव मरुभूमि में
रहता था। उस ने सुना कि इस्राएल के लोग
अथारीम को जाने वाली सड़क से आ रहे हैं। इसलिए
राजा बाहर निकला और उसने इस्राएल के लोगों पर
आक्रमण कर दिया। उसने उनमें से कुछ को पकड़
लिया और उन्हें बन्दी बनाया। 2तब इस्राएल के लोगों ने
यहोवा को यह वचन दिया: "हे यहोवा, इन लोगों को
पराजित करने में हमारी मदद करो। उन्हें हमारे अधीन
कर दो। यदि तू ऐसा करेगा, तो हम लोग उनके नगरों
को पूरी तरह नष्ट कर देंगे।" 3यहोवा ने इस्राएल के
लोगों की प्रार्थना सुनी और यहोवा ने इस्राएल के लोगों
से कनानी लोगों को हरवा दिया। इस्राएल के लोगों ने
कनानी लोगों तथा उनके नगरों को पूरी तरह नष्ट
कर दिया। इसलिए उस स्थान का नाम होर्मा पड़ा।

काँसे* का साँप

4इस्राएल के लोगों ने होर पर्वत को छोड़ा और लाल
सागर के किनारे-किनारे चले। उन्होंने ऐसा इसलिए
किया जिससे वे एदोम कहे जाने वाले स्थान के चारों
ओर जा सकें। किन्तु लोगों को धीरज नहीं था। जिस
समय वे चल रहे थे उसी समय उन्होंने लम्बी यात्रा के
विरुद्ध शिकायत करनी आरम्भ की। 5लोगों ने परमेश्वर
और मूसा के विरुद्ध बातें की। लोगों ने कहा, "तुम हमें
मिस्र से बाहर क्यों लाए हो? हम लोग यहाँ मरुभूमि में
मर जाएंगे! यहाँ रोटी नहीं मिलती! यहाँ पानी नहीं है
और हम लोग इस खराब भोजन से घृणा करते हैं।"
6इसलिए यहोवा ने लोगों के बीच जहरीले साँप भेजे।
साँपों ने उन लोगों को डसा और बहुत से लोग मर गए।
7लोग मूसा के पास आए और उससे कहा, "हम जानते
हैं कि जब हमने यहोवा और तुम्हारे विरुद्ध शिकायत
की तो हमने पाप किया। यहोवा से प्रार्थना करो। उनसे
कहो कि इन साँपों को दूर करे।" इसलिए मूसा ने लोगों
के लिए प्रार्थना की।
8यहोवा ने मूसा से कहा, "एक काँसे का साँप बनाओ
और उसे एक ऊँचे डंडे पर रखो। यदि किसी व्यक्ति को
साँप काटे, तो उस व्यक्ति को डंडे के ऊपर काँसे के
साँप को देखना चाहिए। तब वह व्यक्ति मरेगा नहीं।"
9इसलिए मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी और एक काँसे
का साँप बनाया तथा उसे एक डंडे के ऊपर रखा। तब
जब किसी व्यक्ति को साँप काटता था तो वह डंडे के
ऊपर के साँप को देखता था और जीवित रहता था।

होर पर्वत से मोआब घाटी को

10इस्राएल के लोग यात्रा करते रहे। उन्होंने ओबोत
नामक स्थान पर डेरा डाला। 11तब लोगों ने ओबोत से
ईय्ये अबीराम तक की यात्रा की और वहाँ डेरा डाला।
यह मोआब के पूर्व में मरुभूमि में था। 12तब लोगों ने
उस स्थान को छोड़ा और जेरेद की यात्रा की। उन्होंने
वहाँ डेरा डाला। 13तब लोगों ने अर्नोन घाटी की यात्रा
की। उन्होंने उस क्षेत्र के समीप डेरा डाला। यह एमोरियों
के प्रदेश के पास मरुभूमि में था। अर्नोन घाटी मोआब
और एमोरी लोगों के बीच की सीमा है। 14यही कारण है
कि यहोवा के युद्धों की पुस्तक में निम्न विवरण प्राप्त
है:

"...और सूपा में वाहेब, अर्नोन की घाटी 15और आर
की बस्ती तक पहुँचाने वाली घाटी के किनारे की
पहाड़ियाँ। ये स्थान मोआब की सीमा पर हैं।"

16इस्राएल के लोगों ने उस स्थान को छोड़ा और
उन्होंने बैर की यात्रा की। इस स्थान पर एक कुँआ था।
यहोवा ने मूसा से कहा, "यहाँ सभी लोगों को इकट्ठा
करो और मैं उन्हें पानी दूँगा।" 17तब इस्राएल के लोगों
ने यह गीत गाया:

"कुएँ! पानी से उमड़ बहो! इसका गीत गाओ!
18महापुरुषों ने इस कुएँ को खोदा। महान नेताओं ने
इस कुएँ को खोदा। अपनी छड़ों और. डण्डों से इसे
खोदा। यह मरुभूमि में एक भेंट* है।"

लोग "मत्ताना" नाम के कुएँ पर थे। 19तब लोगों ने
मत्ताना से नहलीएल की यात्रा की। तब उन्होंने नहलीएल
से बामोत की यात्रा की। 20लोगों ने बामोत घाटी की
यात्रा की। इस स्थान पर पिसगा पर्वत की चोटी मरुभूमि
के ऊपर दिखाई पड़ती है।

सीहोन और ओग

21इस्राएल के लोगों ने कुछ व्यक्तियों को एमोरी लोगों
के राजा सीहोन के पास भेजा। इन लोगों ने राजा से
कहा, 22"अपने देश से होकर हमें यात्रा करने दो। हम
लोग किसी खेत या अंगूर के बाग से होकर नहीं जाएंगे।
हम तुम्हारे किसी कुएँ से पानी नहीं पीएंगे। हम लोग
केवल राजपथ से यात्रा करेंगे। हम लोग तब तक उस
सड़क पर ही ठहरेंगे जब तक हम लोग तुम्हारे देश से
होकर यात्रा पूरी नहीं कर लेते।"
23किन्तु राजा सीहोन इस्राएल के लोगों को अपने देश
से होकर यात्रा करने की अनुमति नहीं दी। राजा ने
अपनी सेना इकट्ठी की और मरुभूमि की ओर चल
पड़ा। वह इस्राएल के लोगों के विरुद्ध आक्रमण कर
रहा था। यहस नाम के एक स्थान पर राजा की सेना ने
इस्राएल के लोगों के साथ युद्ध किया।

24किन्तु इस्राएल के लोगों ने राजा को मार डाला।
तब उन्होंने अर्नोन घाटी से लेकर यब्बोक क्षेत्र तक के

काँसा हिब्रू में इसे 'तांबा' भी कहा जाता हैं।

मरुभूमि में एक भेंट हिब्रू में यह उस नाम की तरह है जिसका अर्थ "मत्ताना" होता है।

उसके प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस्राएल के लोगों ने अम्मोनी लोगों की सीमा तक के प्रदेश पर अधिकार किया। उन्होंने और अधिक क्षेत्र पर अधिकार नहीं जमाया क्योंकि वह सीमा अम्मोनी लोगों द्वारा दृढ़ता से सुरक्षित थी। 25किन्तु इस्राएल ने अम्मोनी लोगों के सभी नगरों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने हेशबोन नगर तक को और उसके चारों ओर के छोटे नगरों को भी हराया। 26हेशबोन वह नगर था जिसमें राजा सीहोन रहता था। इसके पहले सीहोन ने मोआब के राजा को हराया था और सीहोन ने अर्नोन घाटी तक के सारे प्रदेश पर अधिकार कर लिया था। 27यही कारण है कि गायक यह गीत गाते हैं:

"आओ हेशबोन को, इसे फिर से बसाना है। सीहोन के नगर को फिर से बनने दो।

28हेशबोन में आग लग गई थी। वह आग सीहोन के नगर में लगी थी। आग ने आर (मोआब) को नष्ट किया इसने ऊपरी अर्नोन की पहाड़ियों को जलाया।

29ऐ मोआब! यह तुम्हारे लिए बुरा है, कमोश के लोग नष्ट कर दिए गए हैं। उसके पुत्र भाग खड़े हुए। उसकी पुत्रियाँ बन्दी बनीं- एमोरी लोगों के राजा सीहोन द्वारा।

30किन्तु हमने उन एमोरियों को हराया, हमने उनके हेशबोन से दीबोन तक नगरों को मिटाया मेदबा के निकट नशिम से नोपह तक।"

31इसलिए इस्राएल के लोगों ने एमोरियों के देश में अपना डेरा लगाया।

32मूसा ने गुप्तचरों को याजेर नगर पर निगरानी के लिए भेजा। मूसा के ऐसा करने के बाद, इस्राएल के लोगों ने उस नगर पर अधिकार कर लिया। उन्होंने उसके चारों ओर के छोटे नगर पर भी अधिकार जमाया। इस्राएल के लोगों ने उस स्थान पर रहने वाले एमोरियों को वह स्थान छोड़ने को विवश किया।

33तब इस्राएल के लोगों ने बाशान की ओर जाने वाली सड़क पर यात्रा की। बाशान के राजा ओग ने अपनी सेना ली और इस्राएल के लोगों का सामना करने निकला। वह एद्रेई नाम के क्षेत्र में उनके विरुद्ध लड़ा।

34किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "उस राजा से मत डरो। मैं तुम्हें उसको हराने दूँगा। तुम उसकी पूरी सेना और प्रदेश को प्राप्त करोगे। तुम उसके साथ वही करो जो तुमने एमोरी लोगों के राजा सीहोन के साथ किया।"

35अत: इस्राएल के लोगों ने ओग और उसकी सेना को हराया। उन्होंने उसे, उसके पुत्रों और उसकी सारी सेना को हराया। तब इस्राएल के लोगों ने उसके पूरे देश पर अधिकार कर लिया।

बिलाम और मोआब का राजा

22 तब इस्राएल के लोगों ने मोआब के मैदान की यात्रा की। उन्होंने यरीहो के उस पार यरदन नदी के निकट डेरा डाला। 2-3सिप्पोर के पुत्र बालाक ने एमोरी लोगों के साथ इस्राएल के लोगों ने जो कुछ किया था, उसे देखा था और मोआब बहुत अधिक भयभीत था क्योंकि वहाँ इस्राएल के बहुत लोग थे। मोआब इस्राएल के लोगों से बहुत आतंकित था। 4मोआब के नेताओं ने मिद्यान के अग्रजों से कहा, "लोगों का यह विशाल समूह हमारे चारों ओर की सभी चीज़ों को वैसे ही नष्ट कर देगा जैसे कोई गाय मैदान की घास चर जाती है।"

इस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था। 5उसने कुछ व्यक्तियों को बोर के पुत्र बिलाम को बुलाने के लिए भेजा। बिलाम नदी के निकट पतोर नाम के क्षेत्र में था। बालाक ने कहा, "लोगों का एक नया राष्ट्र मिस्र से आया है। वे इतने अधिक हैं कि पूरे प्रदेश में फैल सकते हैं। उन्होंने ठीक हमारे पास डेरा डाला है। 6आओ और इन लोगों के साथ निपटने में मेरी सहायता करो। वे मेरी शक्ति से बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। संभव है कि तब इनको मैं हरा सकूँ। तब मैं उन्हें अपना देश छोड़ने को विवश कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम बड़ी शक्ति रखते हो। यदि तुम किसी व्यक्ति को आशीर्वाद देते हो तो उसका भला हो जाता है। यदि तुम किसी व्यक्ति के विरुद्ध कहते हो तो उसका बुरा हो जाता है। इसलिए आओ और इन लोगों के विरुद्ध कुछ कहो।"

7मोआब और मिद्यान के अग्रज चले। वे बिलाम से बातचीत करने गए। वे उसकी सेवाओं के लिए धन देने को ले गए। तब उन्होंने, बालाक ने जो कुछ कहा था, उससे कहा। 8बिलाम ने उनसे कहा, "यहाँ रात में रुको। मैं यहोवा से बातें करूँगा और जो उत्तर, वह मुझे देगा, वह तुमसे कहूँगा।" इसलिए उस रात मोआबी लोगों के नेता उसके साथ ठहरे।

9परमेश्वर बिलाम के पास आया और उसने पूछा, "तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?"

10बिलाम ने परमेश्वर से कहा,"मोआब के राजा सिप्पोर के पुत्र बालाक ने उन्हें मुझको एक सन्देश देने को भेजा है। 11सन्देश यह है: लोगों का एक नया राष्ट्र मिस्र से आया है। वे इतने अधिक हैं कि सारे देश में फैल सकते हैं। इसलिए आओ और इन लोगों के विरुद्ध कुछ कहो। तब सम्भव है कि उनसे लड़ने में मैं समर्थ हो सकूँ और अपने देश को छोड़ने के लिए उन्हें विवश कर सकूँ।"

12किन्तु परमेश्वर ने बिलाम से कहा, "उनके साथ मत जाओ। तुम्हें उन लोगों के विरुद्ध कुछ नहीं कहना चाहिए। उन्हें यहोवा से वरदान प्राप्त है।"

13दूसरे दिन सवेरे बिलाम उठा और बालाक के नेताओं से कहा, "अपने देश को लौट जाओ। यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देगा।"

14इसलिए मोआबी नेता बालाक के पास लौटे और
उससे उन्होंने ये बातें कहीं। उन्होंने कहा, "बिलाम ने
हम लोगों के साथ आने से इन्कार कर दिया।"
15इसलिए बालाक ने दूसरे नेताओं को बिलाम के
पास भेजा। इस बार उसने पहली बार की अपेक्षा बहुत
अधिक आदमी भेजे और ये नेता पहली बार के नेताओं
की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण थे। 16वे बिलाम के पास
गए और उन्होंने उससे कहा, "सिप्पोर का पुत्र बालाक
तुमसे कहता है: कृपया अपने को यहाँ आने से किसी
को रोकने न दें। 17जो मैं तुमसे माँगता हूँ यदि तुम वह
करोगे तो मैं तुम्हें बहुत अधिक भुगतान करूँगा। आओ
और इन लोगों के विरुद्ध मेरे लिए कुछ कहो।"
18किन्तु बिलाम ने उन लोगों को उत्तर दिया। उसने
कहा, "मुझे यहोवा मेरे परमेश्वर की आज्ञा माननी
चाहिए। मैं उसके आदेश के विरुद्ध कुछ नहीं कर
सकता। मैं बड़ा-छोटा कुछ भी तब तक नहीं कर सकता
जब तक यहोवा नहीं कहता कि मैं उसे कर सकता हूँ।
यदि राजा बालाक अपने सोने-चाँदी भरे सुन्दर घर को
दे तो भी मैं अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश के
विरुद्ध कुछ नहीं करूँगा। 19किन्तु तुम भी उन दूसरे
लोगों की तरह आज की रात यहाँ ठहर सकते हो और
रात में मैं जान जाऊँगा कि यहोवा मुझसे क्या कहलवाना
चाहता है।"
20उस रात परमेश्वर बिलाम के पास आया। परमेश्वर
ने कहा, "ये लोग अपने साथ ले जाने के लिए कहने
को फिर आ गए हैं। इसलिए तुम उनके साथ जा सकते
हो। किन्तु केवल वही करो जो मैं तुमसे करने को
कहूँ।"

बिलाम और उसका गधा

21अगली सुबह, बिलाम उठा और अपने गधे पर
काठी रखी। तब वह मोआबी नेताओं के साथ गया।
22बिलाम अपने गधे पर सवार था। उसके सेवकों में से
दो उसके साथ थे। जब बिलाम यात्रा कर रहा था,
परमेश्वर उस पर क्रोधित हो गया। इसलिए यहोवा का
दूत बिलाम के सामने सड़क पर खड़ा हो गया। दूत
बिलाम को रोकने जा रहा था।* 23 बिलाम के गधे ने
यहोवा के दूत को सड़क पर खड़ा देखा। दूत के हाथ में
एक तलवार थी। इसलिए गधा सड़क से मुड़ा और खेत
में चला गया। बिलाम दूत को नहीं देख सकता था।
इसलिए वह गधे पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने गधे को
मारा और उसे सड़क पर लौटने को विवश किया।
24बाद में, यहोवा का दूत ऐसी जगह पर खड़ा हुआ
जहाँ सड़क सँकरी हो गई थी। यह दो अंगूर के बागों के
बीच का स्थान था। वहाँ सड़क के दोनों ओर दीवारें

रोकने ... रहा था शाब्दिक "उसका विरोध करने।"

थीं। 25गधे ने यहोवा के दूत को फिर देखा। इसलिए
गधा एक दीवार से सटकर निकला। इससे बिलाम का
पैर दीवार से छिल गया। इसलिए बिलाम ने अपने गधे
को फिर मारा।
26इसके बाद, यहोवा का दूत दूसरे स्थान पर खड़ा
हुआ। यह दूसरी जगह थी जहाँ सड़क सँकरी हो गई थी।
वहाँ कोई ऐसी जगह नहीं थी जहाँ गधा मुड़ सके। गधा
दायें या बायें नहीं मुड़ सकता था। 27गधे ने यहोवा के
दूत को देखा इसलिए गधा बिलाम को अपनी पीठ पर
लिए हुए जमीन पर बैठ गया। बिलाम गधे पर बहुत
क्रोधित था। इसलिए उसने उसे अपने डंडे से पीटा।
28तब यहोवा ने गधे को बोलने वाला बनाया। गधे ने
बिलाम से कहा, "तुम मुझ पर क्यों क्रोधित हो? मैंने
तुम्हारे साथ क्या किया है? तुमने मुझे तीन बार मारा
है!"
29बिलाम ने गधे को उत्तर दिया, "तुमने दूसरों की
नजर में मुझे मूर्ख बनाया है यदि मेरे हाथ में तलवार
होती तो मैं अभी तुम्हें मार डालता।"
30किन्तु गधे ने बिलाम से कहा, "मैं तुम्हारा अपना
गधा हूँ जिस पर तुम अनेक वर्ष से सवार हुए हो और
तुम जानते हो कि मैंने ऐसा इसके पहले कभी नहीं
किया है।"
"यह सही है।" बिलाम ने कहा।
31तब यहोवा ने बिलाम को सड़क पर खड़े दूत को
देखने दिया। बिलाम ने दूत और उसकी तलवार को
देखा। तब बिलाम ने झुक कर प्रणाम किया।
32यहोवा के दूत ने बिलाम से पूछा, "तुमने अपने गधे
को तीन बार क्यों मारा? तुम्हें मुझ पर क्रोध से पागल
होना चाहिए। मैं तुमको रोकने के लिए यहाँ आया हूँ।
तुम्हें कुछ अधिक सावधान रहना चाहिए।* 33गधे ने
मुझे देखा और वह तीन बार मुझसे मुड़ा। यदि गधा मुड़ा
न होता तो मैंने तुमको मार डाला होता। किन्तु मुझे
तुम्हारे गधे को नहीं मारना था।"
34तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, "मैंने पाप
किया है। मैं यह नहीं जानता था कि तुम सड़क पर खड़े
हो। यदि मैं बुरा कर रहा हूँ तो मैं घर लौट जाऊँगा।"
35यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, "नहीं, तुम इन
लोगों के साथ जा सकते हो। किन्तु सावधान रहो। वही
बातें कहो जो मैं तुमसे कहने के लिए कहूँगा।" इसलिए
बिलाम बालाक द्वारा भेजे गए नेताओं के साथ गया।
36बालाक ने सुना कि बिलाम आ रहा है। इसलिए
बालाक उससे मिलने के लिए अर्नोन सीमा पर मोआबी
नगर को गया। यह उसके देश की छोर थी। 37जब
बालाक ने बिलाम को देखा तो उसने बिलाम से कहा,

सावधान रहना चाहिये शाब्दिक "जैसे कि मेरे सामने से मार्ग हट गया है" या "क्योंकि तुम उचित नहीं कर रहे हो..." यहाँ हिब्रू पाठ समझना कठिन है।

"मैंने इसके पहले तुमसे आने के लिए कहा था और यह भी बताया था कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तुम हमारे पास क्यों नहीं आए? क्या यह सच है कि तुम मुझसे कोई भी पुरस्कार या भुगतान नहीं पाना चाहते?"

38किन्तु बिलाम ने उत्तर दिया, "मैं अब तुम्हारे पास आया हूँ।" लेकिन मैं, जो तुमने करने को कहा था उनमें से, शायद कुछ भी न कर सकूँ। मैं केवल वही बातें तुमसे कह सकता हूँ जो परमेश्वर मुझसे कहने को कहता है।"

39तब बिलाम बालाक के साथ किर्यथूसोत गया।
40बालाक ने कुछ मवेशी तथा कुछ भेड़ें उसकी भेंट के रूप मे मारीं। उसने कुछ माँस बिलाम तथा कुछ उसके साथ के नेताओं को दिया।

41अगली सुबह बालाक को बमोथ बाल नगर को ले गया। उस नगर से वे इस्राएली लोगों के कुछ डेरों को देख सकते थे।

बिलाम की पहली भविष्यवाणी

23 बिलाम ने कहा, "यहाँ सात वेदियाँ बनाओ और मेरे लिए सात बैल और सात मेढ़े तैयार करो।" 2बालाक ने वह सब किया जो बिलाम ने कहा। तब बिलाम ने हर एक वेदी पर एक बैल और एक मेढ़े को मारा।

3तब बिलाम ने बालाक से कहा, "इस वेदी के समीप ठहरो। मैं दूसरी जगह जाऊँगा। तब कदाचित यहोवा मेरे पास आएगा और बताएगा कि मैं क्या कहूँ।" तब बिलाम एक अधिक ऊँचे स्थान पर गया।

4परमेश्वर उस स्थान पर बिलाम के पास आया और बिलाम ने कहा, "मैंने सात वेदियाँ तैयार की हैं और मैंने हर एक वेदी पर एक बैल और एक मेढ़े को मारा है।"

5तब यहोवा ने बिलाम को वह बताया जो उसे कहना चाहिए। तब यहोवा ने कहा, "बालाक के पास जाओ और इन बातों को कहो जो मैंने कहने के लिए बताई हैं।"

6इसलिए बिलाम बालाक के पास लौटा। बालाक तब तक वेदी के पास खड़ा था और मोआब के सभी नेता उसके साथ खड़े थे। 7तब बिलाम ने ये बातें कहीं:

मोआब के राजा बालाक ने मुझे आराम से बुलाया पूर्व के पहाड़ों से। बालाक ने मुझसे कहा- "आओ और मेरे लिए याकूब के विरुद्ध कहो, आओ और इस्राएल के लोगों के विरुद्ध कहो।"

8 परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध नहीं है, अत: मैं भी उनके विरुद्ध नहीं कह सकता। यहोवा ने उनका बुरा होने के लिए नहीं कहा है। अत: मैं भी वैसा नहीं कर सकता।

9मैं उन लोगों को पर्वत से देखता हूँ। मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो अकेले रहते हैं। वे लोग किसी अन्य राष्ट्र के अंग नहीं हैं।

10याकूब के लोग बालू के कण से भी अधिक हैं। इस्राएल के लोगों की चौथाई को भी कोई गिन नहीं सकता। मुझे एक अच्छे मनुष्य की तरह मरने दो, मुझे उन लोगों की तरह ही मरने दो।

11बालाक ने बिलाम से कहा, "तुमने हमारे लिए क्या किया है? मैंने तुमको अपने शत्रुओं के विरुद्ध कुछ कहने को बुलाया था। किन्तु तुमने उन्हीं को आशीर्वाद दिया है।"

12किन्तु बिलाम ने उत्तर दिया, "मुझे वही करना चाहिए जो यहोवा मुझे करने को कहता है।"

13तब बालाक ने उससे कहा, "इसलिए मेरे साथ दूसरे स्थान पर आओ। उस स्थान पर तुम लोगों को भी देख सकते हो। किन्तु तुम उनके एक भाग को ही देख सकते हो, सभी को नहीं देख सकते और उस स्थान से तुम मेरे लिए उनके विरुद्ध कुछ कह सकते हो।"
14इसलिए बालाक बिलाम को सोपीम के मैदान में ले गया। यह पिसगा पर्वत की चोटी पर था। बालाक ने उस स्थान पर सात वेदियाँ बनाई। तब बालाक ने हर एक वेदी पर बलि के रूप में एक बैल और एक मेढ़ा मारा।

15इसलिए बिलाम ने बालाक से कहा, "इस वेदी के पास खड़े रहो। मैं उस स्थान पर परमेश्वर से मिलने जाऊँगा।"

16इसलिए यहोवा बिलाम के पास आया और उसने बिलाम को बताया कि वह क्या कहे। तब यहोवा ने बिलाम को बालाक के पास लौटने और उन बातों को कहने को कहा। 17इसलिए बिलाम बालाक के पास गया। बालाक तब तक वेदी के पास खड़ा था। मोआब के नेता उसके साथ थे। बालाक ने उसे आते हुए देखा और उससे पूछा, "यहोवा ने क्या कहा?"

बिलाम की दूसरी भविष्यवाणी

18तब बिलाम ने ये बातें कहीं: "बालाक! खड़े हो और मेरी बात सुनों। सिप्पोर के पुत्र बालाक! मेरी बात सुनो।

19परमेश्वर मनुष्य नहीं है, वह झूठ नहीं बोलेगा; परमेश्वर मनुष्य पुत्र नहीं, उसके निर्णय बदलेंगे नहीं। यदि यहोवा कहता है कि वह कुछ करेगा-तो वह अवश्य उसे करेगा। यदि यहोवा वचन देता है तो अपने वचन को अवश्य पूरा करेगा।

20यहोवा ने मुझे उन्हें आशीर्वाद देने का आदेश दिया। यहोवा ने उन्हें आशीर्वाद दिया है, इसलिए मैं उसे बदल नहीं सकता।

21याकूब के लोगों में कोई दोष नहीं था। इस्राएल के लोगों में कोई पाप नहीं था। यहोवा उनका परमेश्वर है

और वह उनके साथ है। महाराजा (परमेश्वर) की
वाणी उनके साथ है!
22परमेश्वर उन्हें मिस्र से बाहर लाया। इस्राएल के वे
लोग जंगली साँड़ की तरह शक्तिशाली हैं।
23कोई जादुई शक्ति नहीं जो याकूब के लोगों को
हरा सके। याकूब के बारे में और इस्राएल के लोगों के
विषय में भी लोग यह कहेंगे। "परमेश्वर ने जो महान
कार्य किये हैं उन पर ध्यान दो!"
24वे लोग सिंह की तरह शक्तिशाली होंगे। वे सिंह
जैसे लड़ेंगे। और यह सिंह कभी विश्राम नहीं करेगा,
जब तक वह शत्रु को खा नहीं डालता, और वह सिंह
कभी विश्राम नहीं करेगा जब तक वह उनका रक्त
नहीं पीता जो उसके विरुद्ध हैं।"
25तब बालाक ने बिलाम से कहा, "तुमने उन लोगों
के लिए अच्छी चीज़ें होने की मांग नहीं की। किन्तु
तुमने उनके लिए बुरी चीज़ें होने की भी माँग नहीं
की।"
26बिलाम ने उत्तर दिया, "मैंने पहले ही तुमसे कह
दिया कि मैं केवल वही कहूँगा जो यहोवा मुझसे कहने
के लिए कहता है।"
27तब बालाक ने बिलाम से कहा, "इसलिए तुम मेरे
साथ दूसरे स्थान पर चलो। सम्भव है कि परमेश्वर
प्रसन्न हो जाये और तुम्हें उस स्थान से शाप देने दे।"
28इसलिए बालाक बिलाम को पोर पर्वत की चोटी पर
ले गया। यह पर्वत मरुभूमि के छोर पर स्थित है।
29बिलाम ने कहा, "यहाँ सात वेदियाँ बनाओ। तब सात
साँड़ तथा सात मेढ़े वेदियों पर बलि के लिये तैयार
करो।" 30बालाक ने वही किया जो बिलाम ने कहा।
बालाक ने बलि के रूप में हर एक वेदी पर एक साँड़
तथा एक मेढ़ा मारा।

बिलाम की तीसरी भविष्यवाणी

24 बिलाम को मालूम हुआ कि यहोवा इस्राएल
को आशीर्वाद देना चाहता है। इसलिए बिलाम
ने किसी प्रकार के जादू मन्तर का उपयोग करके उसे
बदलना नहीं चाहा। किन्तु बिलाम मुड़ा और उसने
मरुभूमि की ओर देखा। 2बिलाम ने मरुभूमि के पार
तक देखा और इस्राएल के सभी लोगों को देख लिया। वे
अपने अलग-अलग परिवार समूहों के क्षेत्र में डेरा डाले
हुए थे। तब परमेश्वर ने बिलाम को प्रेरित किया। 3और
बिलाम ने ये शब्द कहे:
"बोर का पुत्र बिलाम जो सब कुछ स्पष्ट देख सकता
है ये बातें कहता है। 4ये शब्द कहे गए, क्योंकि मैं
परमेश्वर की बात सुनता हूँ। मैं उन चीज़ों को देख
सकता हूँ जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर चाहता है कि
मैं देखूँ। मैं जो कुछ स्पष्ट देख सकता हूँ वही नम्रता के
साथ कहता हूँ।
5याकूब के लोगों तुम्हारे खेमे बहुत सुन्दर हैं! इस्राएल
के लोगों जिनके घर सुन्दर हैं!
6तुम्हारे डेरे घाटियों की तरह प्रदेश के आर-पार
फैले हैं। ये नदी के किनारे उगे बाग की तरह हैं। ये
यहोवा द्वारा बोयी गई फसल की तरह हैं। ये नदियों के
किनारे उगे देवदार के सुन्दर पेड़ों की तरह हैं।
7तुम्हें पीने के लिए सदा पर्याप्त पानी मिलेगा। तुम्हें
फसलें उगाने के लिये पर्याप्त पानी मिलेगा। तुम लोगों
का राजा अगाग से महान होगा। तुम्हारा राज्य बहुत
महान हो जाएगा।
8परमेश्वर उन लोगों को मिस्र से बाहर लाया। वे
इतने शक्तिशाली हैं जितना कोई जंगली साँड़। वे अपने
सभी शत्रुओं को हरायेंगे। वे अपने शत्रुओं की हड्डियाँ
चूर करेंगे। और उनके बाण उनके शत्रु को मार डालेंगे
वे उस सिंह की तरह हैं जो अपने शिकार पर टूट पड़ना
चाहता हो।
9वे उस सिंह की तरह है जो सो रहा हो। कोई व्यक्ति
इतना साहसी नहीं जो उसे जगा दे! कोई व्यक्ति जो तुम्हें
आशीर्वाद देगा, आशीष पाएगा, और कोई व्यक्ति जो
तुम्हारे विरुद्ध बोलेगा विपत्ति में पड़ेगा।"
10तब बिलाम पर बालाक बहुत क्रोधित हुआ। बालाक
ने बिलाम से कहा, "मैंने तुम्हें आने और अपने शत्रुओं
के विरुद्ध कुछ कहने के लिए बुलाया। किन्तु तुमने
उनको आशीर्वाद दिया है। तुमने उन्हें तीन बार आशीर्वाद
दिया है। 11अब विदा हो और घर जाओ। मैंने कहा था
कि मैं तुम्हें बहुत अधिक सम्पन्न बनाऊँगा। किन्तु
यहोवा ने तुम्हें पुरस्कार से वंचित कराया है।"
12बिलाम ने बालाक से कहा, "तुमने आदमियों को
मेरे पास भेजा। उन व्यक्तियों ने मुझसे आने के लिए
कहा। किन्तु मैंने उनसे कहा, 13'बालाक अपना
सोने-चाँदी से भरा घर मुझको दे सकता है। परन्तु मैं
तब भी केवल वही बातें कह सकता हूँ जिसे कहने के
लिए यहोवा आदेश देता है। मैं अच्छा या बुरा स्वयं कुछ
नहीं कर सकता। मुझे वही करना चाहिए जो यहोवा
का आदेश हो।' क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने ये बातें
तुम्हारे लोगों से कहीं? 14अब मैं अपने लोगों के बीच जा
रहा हूँ किन्तु तुमको एक चेतावनी दूँगा। मैं तुमसे कहूँगा
कि भविष्य में इस्राएल के ये लोग तुम्हारे और तुम्हारे
लोगों के साथ क्या करेंगे।"

बिलाम की अन्तिम भविष्यवाणी

15तब बिलाम ने ये बातें कहीं: "बोर के पुत्र बिलाम
के ये शब्द हैं: ये उस व्यक्ति के शब्द हैं जो चीज़ों को
साफ-साफ देख सकता है।
16ये उस व्यक्ति के शब्द हैं जो परमेश्वर की बातें
सुनता है। सर्वोच्च परमेश्वर ने मुझे ज्ञान दिया है। मैंने
वह देखा है जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे दिखाना

चाहा है। मैं जो कुछ स्पष्ट देखता हूँ वही नम्रता के साथ कहता हूँ।

17मैं देखता हूँ कि यहोवा आ रहा है, किन्तु अभी नहीं। मैं उसका आगमन देखता हूँ, किन्तु यह शीघ्र नहीं है। याकूब के परिवार से एक तारा आएगा। इस्राएल के लोगों में से एक नया शासक आएगा। वह शासक मोआबी लोगों के सिर कुचल देगा। वह शासक सेईर के सभी पुत्रों के सिर कुचल देगा।

18एदोम देश पराजित होगा नये राजा का शत्रु सेईर पराजित होगा। इस्राएल के लोग शक्तिशाली हो जाएंगे।

19याकूब के परिवार से एक नया शासक आएगा। नगर में जीवित बचे लोगों को वह शासक नष्ट करेगा।"

20तब बिलाम ने अपने अमालेकी लोगों को देखा और ये बातें कहीं:

"सभी राष्टों में अमालेक सबसे अधिक बलवान था। किन्तु अमालेक भी नष्ट किया जाएगा।"

21तब बिलाम ने केनियों को देखा और उनसे ये बातें कहीं:

"तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा देश उसी प्रकार सुरक्षित है। जैसे किसी ऊँचे खड़े पर्वत पर बना घोंसला।

22किन्तु केनियों, तुम नष्ट किये जाओगे। अश्शूर तुम्हें बन्दी बनाएगा।"

23तब बिलाम ने ये शब्द कहे, "कोई व्यक्ति नहीं रह सकता जब परमेश्वर यह करता है।

24कित्तियों के तट से जहाज आएंगे। वे जहाज अश्शूर और एबेर को हराएंगे। किन्तु तब वे जहाज भी नष्ट कर दिए जाएंगे।"

25तब बिलाम उठा और अपने घर को लौट गया और बालाक भी अपनी राह चला गया।

पोर में इस्राएल

25 इस्राएल के लोग अभी तक शित्तीम के क्षेत्र में डेरा डाले हुए थे। उस समय लोग मोआबी स्त्रियों के साथ यौन सम्बन्धी पाप करने लगे। 2मोआबी स्त्रियों ने पुरुषों को आने और अपने मिथ्या देवताओं को भेंट चढ़ाने में सहायता करने के लिए आमन्त्रित किया। इस्राएली लोगों ने वहाँ भोजन किया और मिथ्या देवताओं की पूजा की। 3अत: इस्राएल के लोगों ने इसी प्रकार मिथ्या देवता पोर के बाल की पूजा आरम्भ की। यहोवा इन लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।

4यहोवा ने मूसा से कहा, "इन लोगों के नेताओं को लाओ। तब उन्हें सभी लोगों की आँखों के सामने मार डालो। उनके शरीर को यहोवा के सामने डालो। तब यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित नहीं होगा।"

5इसलिए मूसा ने इस्राएल के न्यायाधीशों से कहा, "तुम लोगों में से हर एक को अपने परिवार समूह में उन लोगों को ढूँढ निकालना है जिन्होंने लोगों को पोर के मिथ्या देवता बाल की पूजा के लिए प्रेरित किया है। तब तुम्हें उन लोगों को अवश्य मार डालना चाहिए।"

6उस समय मूसा और सभी इस्राएल के अग्रज (नेता) मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक साथ इकट्ठे थे। एक इस्राएली व्यक्ति एक मिद्यानी स्त्री को अपने भाईयों के पास अपने घर लाया। उसने यह वहाँ किया जहाँ उसे मूसा और सारे नेता देख सकते थे। मूसा और नेता बहुत दु:खी हुए। 7याजक हारून के पोते तथा एलीआज़ार के पुत्र पीनहास ने इसे देखा। इसलिए उसने बैठक छोड़ी और अपना भाला उठाया। 8वह इस्राएली व्यक्ति के पीछे-पीछे उसके खेमे में गया। तब उसने इस्राएली पुरुष और मिद्यानी स्त्री को अपने भाले से मार डाला। उसने अपने भाले को दोनों के शरीरों के पार कर दिया। उस समय इस्राएल के लोगों में एक बड़ी बीमारी फैली थी। किन्तु जब पीनहास ने इन दोनों लोगों को मार डाला तो बीमारी रूक गई। 9इस बीमारी से चौबीस हजार लोग मर चुके थे।

10यहोवा ने मूसा से कहा, 11"याजक हारून के पोते तथा एलीआज़ार के पुत्र पीनहास ने इस्राएल के लोगों को मेरे क्रोध से बचा लिया है। उसने मुझे प्रसन्न करने के लिए कठिन प्रयत्न किया। वह वैसा ही है जैसा मैं हूँ। उसने मेरी प्रतिष्ठा को लोगों में सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। इसलिए मैं लोगों को वैसे ही नहीं मारूँगा जैसे मैं मारना चाहता था। 12इसलिए पीनहास से कहो कि मैं उसके साथ एक शान्ति की वाचा करना चाहता हूँ। 13वह और उसके बाद के वंशज मेरे साथ एक वाचा करेंगे। वे सदा याजक रहेंगे क्योंकि उसने अपने परमेश्वर की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए कठिन प्रयत्न किया। इस प्रकार उसने इस्राएली लोगों के दोषों के लिए हर्जाना दिया।"

14जो इस्राएली मिद्यानी स्त्री के साथ मारा गया था उसका नाम जिम्रि था वह साल का पुत्र था। वह शिमोन के परिवार समूह के परिवार का नेता था 15और मारी गई मिद्यानी स्त्री का नाम कोजबी था। वह सूर की पुत्री थी। वह अपने परिवार का मुखिया था और वह मिद्यानी परिवार समूह का नेता था।

16यहोवा ने मूसा से कहा, 17"मिद्यानी लोग तुम्हारे शत्रु हैं। तुम्हें उनको मार डालना चाहिए। 18उन्होंने पहले ही तुमको अपना शत्रु बना लिया है। उन्होंने तुमको धोखा दिया और तुमसे अपने मिथ्या देवताओं की पोर में पूजा करवाई और उन्होंने तुममें से एक व्यक्ति का विवाह कोजबी के साथ लगभग करा दिया जो मिद्यानी नेता की पुत्री थी। यही स्त्री उस समय मारी गयी जब इस्राएली लोगों में बीमारी आई। बीमारी इसलिए उत्पन्न की गई कि लोग पोर में मिथ्या देवता बाल की पूजा कर रहे थे।"

दूसरी गिनती

26 बड़ी बीमारी के बाद यहोवा ने मूसा और हारून के पुत्र याजक एलीआज़ार से बातें की। 2उसने कहा, "सभी इस्राएली लोगों की संख्या गिनो। हर एक परिवार को देखो और बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के हर एक पुरुष को गिनो। ये वे पुरुष हैं जो इस्राएल की सेना में सेवा करने योग्य हैं।"

3इस समय लोग मोआब के मैदान में डेरा डाले थे। यह यरीहो के पार यरदन नदी के समीप था। इसलिए मूसा और याजक एलीआज़ार ने लोगों से बातें कीं। 4उन्होंने कहा, "तुम्हें बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के हर एक पुरुष को गिनना चाहिए। यही वह आदेश था जो यहोवा ने मूसा को पालन करने के लिए दिया था।" यहाँ उन इस्राएल के लोगों की सूची है जो मिस्र से आए थे:

5ये रूबेन के परिवार के लोग हैं। (रूबेन इस्राएल (याकूब) का पहलौठा पुत्र था।) ये परिवार थे:

हनोक-हनोकी परिवार। पल्लू-पल्लिय परिवार।

6 हेस्रोन-हेस्रोनी परिवार। कर्मी-कर्मी परिवार।

7रूबेन के परिवार समूह में वे परिवार थे। योग में सभी तैंतालीस हजार सात सौ तीस पुरुष थे।

8 पल्लू का पुत्र एलीआब था। 9 एलीआब के तीन पुत्र थे-नमूएल, दातान और अबीराम। याद रखो कि दातान और अबीराम वे दो नेता थे जो मूसा और हारून के विरोधी हो गए थे। वे कोरह के अनुयायी थे और कोरह यहोवा का विरोधी हो गया था। 10वही समय था जब पृथ्वी फटी थी और कोरह एवं उसके सभी अनुयायियों को निगल गई थी। कुल दो सौ पचास पुरुष मर गये थे। यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए एक संकेत और चेतावनी थी।

11किन्तु कोरह के परिवार के अन्य लोग नहीं मरे।

12शिमोन के परिवार समूह के ये परिवार थे:

नमूएल-नमूएल परिवार। यामीन-यामीन परिवार। याकीन-याकीन परिवार।

13जेरह-जेराही परिवार। शाऊल-शाऊल परिवार।

14शिमोन के परिवार समूह में वे परिवार थे। इसमें कुल बाइस हजार पुरुष थे।

15गाद के परिवार समूह के ये परिवार हैं: सपोन-सपोन परिवार। हाग्गी-हाग्गी परिवार। शूनी-शूनी परिवार।

16ओजनी-ओजनी परिवार। ऐरी-ऐरी परिवार।

17अरोद-अरोद परिवार। अरेली-अरेली परिवार।

18गाद के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें कुल चालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

19-20 यहूदा के परिवार समूह के ये परिवार हैं: शेला-शेला परिवार। पेरेस-पेरेस परिवार। जेरह-जेरह परिवार। (यहूदा के दो पुत्र एर, ओनान–कनान में मर गए थे।)

21पेरेस के ये परिवार हैं: हेस्रोन-हेस्रोनी परिवार। हामूल-हामूल परिवार।

22यहूदा के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनके कुल पुरुषों की संख्या छिहत्तर हजार पाँच सौ थी।

23 इस्साकार के परिवार समूह के परिवार ये थे: तोला-तोला परिवार। पुव्वा-पुव्वा परिवार।

24याशूब-याशूब परिवार। शिम्रोन-शिम्रोन परिवार।

25इस्साकार के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें कुल पुरुषों की संख्या चौसठ हजार तीन सौ थी।

26जबूलून के परिवार समूह के परिवार ये थे: सेरेद-सेरेद परिवार। एलोन-एलोन परिवार। यहलेल-यहलेल परिवार।

27जबूलून के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें कुल पुरुषों की संख्या साठ हजार पाँच सौ थी।

28यूसुफ के दो पुत्र मनश्शे और एप्रैम थे। हर एक पुत्र अपने परिवारों के साथ परिवार समूह बन गया था।

29मनश्शे के परिवार में ये थे: माकीर-माकीर परिवार, (माकीर गिलाद का पिता था।) गिलाद-गिलाद परिवार।

30गिलाद के परिवार ये थे: ईएजेर-ईएजेर परिवार। हेलेक-हेलेकी परिवार।

31अस्रीएल-अस्रीएली परिवार। शेकेम-शेकेमी परिवार।

32 शमीदा-शमीदा परिवार। हेपेर-हेपेरी परिवार।

33हेपेर का पुत्र सलोफाद था। किन्तु उसका कोई पुत्र न था। केवल पुत्री थी। उसकी पुत्रियों के नाम महला, नोआ, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा थे।

34मनश्शे परिवार समूह के ये परिवार हैं। इनमें कुल पुरुष बावन हजार सात सौ थे।

35एप्रैम के परिवार समूह के ये परिवार थे: शूतेलह-शूतेलही परिवार। बेकेर-बेकेरी परिवार। तहन-तहनी परिवार।

36एरान शूतेलह परिवार का था। उसका परिवार एरनी था।

37एप्रैम के परिवार समूह में ये परिवार थे। कुल पुरुषों की संख्या इसमें बत्तीस हजार पाँच सौ थी। वे ऐसे सभी लोग हैं जो यूसुफ के परिवार समूहों के हैं।

38बिन्यामीन के परिवार समूह के परिवार ये थे: बेला-बेला परिवार। अशबेल-अश्बेली परिवार। अहीरम-अहीरमी परिवार।

39 शपूपाम-शपूपाम परिवार। हूपाम-हूपामी परिवार।

40बेला के परिवार में ये थे: अर्द-अर्दी परिवार। नामान-नामानी परिवार।

41बिन्यामीन के परिवार समूह के ये सभी परिवार थे। इसमें पुरुषों की कुल संख्या पैंतालीस हजार छ: सौ थी।

42दान के परिवार समूह में ये परिवार थे: शूहाम-शूहाम परिवार समूह। दान के परिवार समूह से वह परिवार समूह था।

43शूहामी परिवार समूह में बहुत से परिवार थे। इनमें पुरुषों की कुल संख्या चौंसठ हजार चार सौ थी।

44आशेर के परिवार समूह के ये परिवार हैं: यिम्ना-यिम्नी परिवार। यिश्री-यिश्री परिवार। बरीआ-बरीआ परिवार।

45बरीआ के ये परिवार हैं: हेबेर-हेबेरी परिवार। मल्कीएल-मल्कीएली परिवार।

46(आशेर की एक पुत्री सेरह नाम की थी।) 47आशेर के परिवार समूह में वे परिवार थे। इसमें पुरुषों की संख्या तिरपन हजार चार सौ थी।

48नप्ताली के परिवार समूह के ये परिवार थे: यहसेल-यहसेली परिवार। गूनी-गूनी परिवार।

49येसेर-येसेरी परिवार। शिल्लेम-शिल्लेमी परिवार। 50नप्ताली के परिवार समूह के ये परिवार थे। इसमें पुरुषों की कुल संख्या पैंतालीस हजार चार सौ थी।

51इस प्रकार इस्राएल के पुरुषों की कुल संख्या छ: लाख एक हजार सात सौ तीस थी। 52यहोवा ने मूसा से कहा, 53"हर एक परिवार समूह को भूमि दी जाएगी। यह वही प्रदेश है जिसके लिए मैंने वचन दिया था। हर एक परिवार समूह उन लोगों के लिये पर्याप्त भूमि प्राप्त करेंगे जिन्हें गिना गया। 54बड़ा परिवार समूह अधिक भूमि पाएगा और छोटा परिवार समूह कम भूमि पाएगा। किन्तु हर एक परिवार समूह को भूमि मिलेगी जिसके लिए मैंने वचन दिया है और जो भूमि वे पाएंगे वह उनकी गिनी गई संख्या के बराबर होगी। 55हर एक परिवार समूह को पासों के आधार पर निश्चय करके धरती दी जाएगी और उस प्रदेश का वही नाम होगा जो उस परिवार समूह का होगा। 56वह प्रदेश जिसे मैंने लोगों को देने का वचन दिया, उनके उत्तराधिकार में होगा। यह बड़े और छोटे परिवार समूहों को दिया जाएगा। निर्णय करने के लिए तुम्हें पासे फेंकने होंगे।"

57लेवी का परिवार समूह भी गिना गया। लेवी के परिवार समूह के ये परिवार है:

गेर्शोन-गेर्शोन परिवार। कहात-कहात परिवार। मरारी-मरारी परिवार।

58लेवी के परिवार समूह से ये परिवार भी थे:

लिब्नि परिवार। हेब्रोनी परिवार। महली परिवार। मूशी परिवार। कहात परिवार।

अम्राम कहात के परिवार समूह का था। 59अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद था। वह भी लेवी के परिवार समूह की थी। उसका जन्म मिस्र में हुआ था। अम्राम और योकेबेद के दो पुत्र हारून और मूसा थे। उनकी एक पुत्री मरियम भी थी।

60हारून, नादाब, अबीहू, एलीआज़ार तथा ईतामार का पिता था। 61किन्तु नादाब और अबीहू मर गए। वे मर गए क्योंकि उन्होंने यहोवा को उस आग से भेंट चढ़ाई जो उनके लिए स्वीकृत नहीं थी।

62लेवी परिवार समूह के सभी पुरुषों की संख्या तेईस हजार थी। किन्तु ये लोग इस्राएल के अन्य लोगों के साथ नहीं गिने गए थे। वे भूमि नहीं पा सके जिसे अन्य लोगों को देने का वचन यहोवा ने दिया था। 63मूसा और याजक एलीआज़ार ने इन सभी लोगों को गिना। उन्होंने इस्राएल के लोगों को मोआब के मैदान में गिना। यह यरीहो से यरदन नदी के पार था। 64बहुत समय पहले मूसा और याजक हारून ने इस्राएल के लोगों को सीनै मरुभूमि में गिना था। किन्तु वे सभी लोग मर चुके थे। मोआब के मैदान में मूसा ने जिन लोगों को गिना, वे पहले गिने गए लोगों से भिन्न थे। 65यह इसलिए हुआ कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों से यह कहा था कि वे सभी मरुभूमि में मरेंगे। जो केवल दो जीवित बचे थे यपुन्ने का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू थे।

सलोफाद की पुत्रियाँ

27 सलोफाद हेपेर का पुत्र था। हेपेर गिलाद का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था। माकीर मनश्शे का पुत्र था और मनश्शे यूसुफ का पुत्र था। सलोफाद की पाँच पुत्रियाँ थीं। उनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का और तिर्सा था। 2ये पाँचों स्त्रियाँ मिलापवाले तम्बू में गई और मूसा, याजक एलीआज़ार, नेतागण और सब इस्राएलियों के सामने खड़ी हो गई।

पाँचों पुत्रियों ने कहा, 3"हमारे पिता उस समय मर गये जब हम लोग मरुभूमि से यात्रा कर रहे थे। वह उन लोगों में से नहीं था जो कोरह के दल में सम्मिलित हुए थे। (कोरह वही था जो यहोवा के विरुद्ध हो गया था।) हम लोगों के पिता की मृत्यु स्वाभाविक थी। किन्तु हमारे पिता का कोई पुत्र नहीं था। 4इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमारे पिता का नाम नहीं चलेगा। यह ठीक नहीं है कि हमारे पिता का नाम मिट जाए। इसलिए हम लोग यह माँग करते हैं कि हमें भी कुछ भूमि दी जाए जिसे हमारे पिता के भाई पाएंगे।"

5इसलिए मूसा ने यहोवा से पूछा कि वह क्या करे। 6यहोवा ने उससे कहा, 7"सलोफाद की पुत्रियाँ ठीक कहती हैं। तुम्हें उनके चाचाओं के साथ–साथ उन्हें भी भूमि का भाग अवश्य देना चाहिए जो तुम उनके पिता को देते।

8"इसलिए इस्राएल के लोगों के लिए इसे नियम बना दो। 'यदि किसी व्यक्ति के पुत्र न हो और वह मर जाए तो हर एक चीज जो उसकी है, उसकी पुत्री की होगी। 9यदि उसे कोई पुत्री न हो तो, जो कुछ भी उसका है उसके भाईयों को दिया जाएगा। 10यदि उसका कोई भाई न हो तो, जो कुछ उसका है उसके पिता के भाईयों को दिया जाएगा। 11यदि उसके पिता का कोई भाई नहीं है तो, जो कुछ उसका हो उसे उसके परिवार के निकटतम सम्बन्धी को दिया जाएगा। इस्राएल के लोगों में यह

नियम होना चाहिए। यहोवा मूसा को यह आदेश देता है।'"

12तब यहोवा ने मूसा से कहा, "उस पर्वत के ऊपर चढ़ो। जो अबारीम पर्वत श्रृंखला में से एक है। वहाँ तुम उस प्रदेश को देखोगे जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दे रहा हूँ। 13जब तुम इस प्रदेश को देख लोगे तब तुम अपने भाई हारून की तरह मर जाओगे। 14उस बात को याद करो जब लोग सीन की मरुभूमि में पानी के लिए क्रोधित हुए थे। तुम और हारून दोनों ने मेरा आदेश मानना अस्वीकार किया था। तुम लोगों ने मेरा सम्मान नहीं किया था और लोगों के सामने मुझे पवित्र नहीं बनाया था।" (यह पानी सीन की मरुभूमि में कादेश के अन्तर्गत मरीबा में था।)

15मूसा ने यहोवा से कहा, 16"यहोवा परमेश्वर है वही जानता है कि लोग क्या सोच रहे हैं। यहोवा मेरी प्रार्थना है कि तू इन लोगों के लिये एक नेता चुन।* 17मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा एक ऐसा नेता चुन जो उन्हें इस प्रदेश से बाहर ले जाएगा तथा उन्हें नये प्रदेश में पहुँचायेगा। तब यहोवा के लोग गड़ेरिया रहित भेड़ के समान नहीं होंगे।"

18इसलिए यहोवा ने मूसा से कहा, नून का पुत्र यहोशू नेता होगा। यहोशू बहुत बुद्धिमान है* उसे नया नेता बनाओ। 19उससे याजक एलीआज़ार और सभी लोगों के सामने खड़े होने को कहो। तब उसे नया नेता बनाओ।

20"लोगों को यह दिखाओ कि तुम उसे नेता बना रहे हो, तब सभी उसका आदेश मानेंगे। 21यदि यहोशू कोई विशेष निर्णय लेना चाहेगा तो उसे याजक एलीआज़ार के पास जाना होगा। एलीआज़ार ऊरीम का उपयोग यहोवा के उत्तर को जानने के लिए करेगा। तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोग वह करेंगे जो परमेश्वर कहेगा। यदि परमेश्वर कहेगा, 'युद्ध करने जाओ।' तो वे युद्ध करने जाएंगे और यदि परमेश्वर कहे, 'घर जाओं,' तो घर जायेंगे।"

22मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। मूसा ने यहोशू से याजक एलीआज़ार और इस्राएल के सब लोगों के सामने खड़ा होने के लिए कहा। 23तब मूसा ने अपने हाथों को उसके सिर पर यह दिखाने के लिए रखा कि वह नया नेता है। उसने यह वैसे ही किया जैसा यहोवा ने कहा था।

यहोवा ... चुन इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है– सभी लोगों की आत्माओं के परमेश्वर यहोवा, इन लोगों के लिए एक नेता नियुक्त कर ।

नून ... है शाब्दिक "नून के पुत्र यहोशू को चुनो। वह व्यक्ति अपने भीतर विशेष शक्ति रखता है।" इसका अर्थ यह हो सकता है कि यहोशू बहुत बुद्धिमान था अथवा यह भी अर्थ हो सकता है कि उसमें परमेश्वर की आत्मा का निवास था।

नित्य–भेंट

28 तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 2"इस्राएल के लोगों को यह आदेश दो। उनसे कहो कि वे ठीक समय पर निश्चयपूर्वक मुझे विशेष भेंट चढ़ाएं। उनसे कहो कि वे अन्नबलि और होमबलि चढ़ाएं। यहोवा उन होमबलियों की सुगन्ध पसन्द करता है। 3इन होमबलियों को उन्हें यहोवा को चढ़ाना ही चाहिए। उन्हें दोषरहित एक वर्ष के दो मेढ़े नित्य भेंट के रूप में चढ़ाना चाहिए। 4मेढ़ों में से एक को सवेरे चढ़ाओ और दूसरे मेढ़े को सन्ध्या के समय। 5इसके अतिरिक्त दो क्वार्ट* अन्नबलि एक क्वार्ट* जैतून के तेल के साथ मिला आटा दो।" 6(उन्होंने सीनै पर्वत पर नित्य भेंट देनी आरम्भ की थी। यहोवा ने उन होमबलियों की सुगन्ध पसन्द की थी।) 7लोगों को होमबलि के साथ पेय भेंट भी चढ़ानी चाहिए। उन्हें हर एक मेमने के साथ एक क्वार्ट दाखमधु देनी चाहिए। उस पेय भेंट को पवित्र स्थान में वेदी पर डालो। यह यहोवा को भेंट है। 8दूसरे मेढ़े की भेंट गोधूलि के समय चढ़ाओ। इसे सवेरे की भेंट की तरह चढ़ाओ। वैसे ही पेय भेंट भी चढ़ाओ। ये आग द्वारा दी गई भेंट होगी। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।"

सब्त भेंट

9"शनिवार को, जो छुट्टी का दिन है, एक वर्ष के दोष रहित दो मेमने जैतून के तेल के साथ मिले चार क्वार्ट* अच्छे आटे की अन्नबलि और पेय भेंट चढ़ाओ। 10यह छुट्टी के दिन की विशेष भेंट है। यह भेंट नियमित नित्य भेंट और पेय भेंट के अतिरिक्त है।"

मासिक बैठकें

11"हर एक महीने के प्रथम दिन तुम यहोवा को होमबलि चढ़ाओगे। यह भेंट दोष रहित दो बैलों, एक मेढ़ा और सात एक वर्ष के मेमनों की होगी। 12हर एक बैल के साथ जैतून के तेल के साथ मिले छ: क्वार्ट* अच्छे आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। हर एक मेढ़े के साथ जैतून के तेल के साथ मिले चार क्वार्ट अच्छे आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। 13हर एक मेमने के साथ जैतून के तेल के साथ मिले दो क्वार्ट अच्छे आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। यह ऐसी होमबलि होगी जो यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। 14पेय भेंट में दो क्वार्ट दाखमधु हर एक बैल के साथ, एक चौथाई क्वार्ट*

दो क्वार्ट शाब्दिक "1/2 हिन।"

एक क्वार्ट शाब्दिक "1/4 हिन।"

चार क्वार्ट आठ प्याला।

छ: क्वार्ट अर्थात् लगभग एक लीटर।

एक चौथाई क्वार्ट मूल में "1/3 हिन।"

दाखमधु हर एक मेढ़े के साथ और एक क्वार्ट दाखमधु
हर एक मेमने के साथ होगी। यह होमबलि है जो वर्ष
के हर एक महीने चढ़ाई जानी चाहिए। 15नित्य दैनिक
होमबलि और पेय भेंट के अतिरिक्त तुम्हें यहोवा को
एक बकरा देना चाहिए। वह बकरा पापबलि होगा।

फसह पर्व

16"पहले महीने के चौदहवें दिन यहोवा के सम्मान में
फसह पर्व होगा। 17उस महीने के पन्द्रहवें दिन अख़मीरी
रोटी की दावत आरम्भ होती है। यह पर्व सात दिन तक
रहता है। तुम वही रोटी खा सकते हो जो अख़मीरी हो।
18इस पर्व के पहले दिन तुम्हें विशेष बैठक बुलानी
चाहिए। उस दिन तुम कोई काम नहीं करोगे। 19तुम
यहोवा को होमबलि दोगे। यह होमबलि दोष रहित दो
बैल, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की होगी।
20-21हर एक बैल के साथ जैतून के तेल के साथ मिले
हुए छः क्वार्ट अच्छे आटे, मेढ़े के साथ जैतून के तेल
के साथ मिले हुए चार क्वार्ट अच्छे आटे और हर एक
मेमने के साथ दो क्वार्ट जैतून के तेल के साथ मिले हुए
आटे की अन्नबलि भी होगी। 22तुम्हें एक बकरा भी
देना चाहिए। वह बकरा तुम्हारे लिए पापबलि होगा। यह
तुम्हारे पापों को ढकेगा। 23तुम लोगों को वे भेंटे उन
भेंटों के अतिरिक्त देनी चाहिए जो तुम हर एक सवेरे
होमबलि के रूप में देते हो।

24उसी प्रकार तुम्हें सात दिन तक आग द्वारा भेंट देनी
चाहिए और इस के साथ पेय भेंट भी देनी चाहिए। यह
भेंट यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम्हें ये भेंटे
होमबलि के अतिरिक्त देनी चाहिए जो तुम प्रतिदिन देते
हो।

25तब फसह पर्व के सातवें दिन तुम एक विशेष
बैठक बुलाओगे और उस दिन तुम कोई काम नहीं
करोगे।

सप्ताहों का पर्व (कटनी का पर्व)

26"प्रथम फल का पर्व या सप्ताहों के पर्व के समय
तुम यहोवा को नये फसल की अन्नबलि दो। उस समय
तुम्हें एक विशेष बैठक भी बुलानी चाहिए। तुम उस
दिन कोई काम नहीं करोगे। 27तुम होमबलि चढ़ाओगे।
वह बलि यहोवा के लिए सुगन्ध होगी। तुम दोष रहित दो
साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट
चढ़ाओगे। 28तुम हर एक साँड़ के साथ जैतून के तेल
के साथ मिले हुए छः क्वार्ट अच्छे आटे, हर एक मेढ़े के
साथ चार क्वार्ट 29और हर एक मेमने के साथ दो
क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। 30तुम्हें अपने पापों को
ढकने के लिए एक बकरे की बलि चढ़ानी चाहिए।
31तुम्हें यह भेंट प्रतिदिन होमबलि और इसकी अन्नबलि
के अतिरिक्त चढ़ानी चाहिए। निश्चय कर लो कि जानवरों
में कोई दोष न हो और यह निश्चय कर लो कि पेय
भेंट ठीक है।

बिगुल का पर्व

29 "सातवें महीने के प्रथम दिन एक विशेष बैठक
होगी। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे।
वह बिगुल बजाने* का दिन है। 2तुम होमबलि चढ़ाओगे।
ये भेंटे यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित
एक साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की
भेंट चढ़ाओगे। 3तुम छः क्वार्ट तेल मिला अच्छा आटा
भी बैल के साथ, चार क्वार्ट मेढ़े के साथ और 4 सात
मेमनों में से हर एक के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट
चढ़ाओगे। 5इसके अतिरिक्त, पापबलि के लिए एक
बकरा भी चढ़ाओगे। यह तुम्हारे पापों को ढकेगी। 6ये
भेंटे नवचन्द्र बलि और उसकी अन्नबलि के अतिरिक्त
होगी और ये नित्य की भेंटों, इसकी अन्नबलियों तथा
पेय भेंटों के अतिरिक्त होगी। ये नियम के अनुसार की
जानी चाहिए। इन्हें आग में जलाना चाहिए। इसकी सुगन्धि
यहोवा को प्रसन्न करेगी।

प्रायश्चित का दिन

7"सातवें महीने के दसवें दिन एक विशेष बैठक
होगी। उस दिन तुम उपवास करोगे।* और तुम कोई
काम नहीं करोगे। 8तुम होमबलि दोगे। यह यहोवा के
लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित दो साँड़, एक मेढ़ा
और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट चढ़ाओगे। 9तुम
हर एक बैल के साथ जैतून के मिले हुए छः क्वार्ट
आटे, मेढ़े के साथ चार क्वार्ट आटे 10और हर एक
सातों मेमनों के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे।
11तुम एक बकरा भी पापबलि के रूप में चढ़ाओगे। यह
प्रायश्चित के दिन की पापबलि के अतिरिक्त होगी। यह
दैनिक बलि, अन्न और पेय भेंटों के भी अतिरिक्त
होगी।

बटोरने का पर्व

12"सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन एक विशेष बैठक
होगी। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। तुम यहोवा
के लिए सात दिन तक छुट्टी मनाओगे। 13तुम होमबलि
चढ़ाओगे। यह यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष
रहित तेरह साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह
मेमने भेंट चढ़ाओगे। 14तुम तेरह बैलों में से हर एक के
साथ जैतून के साथ मिले हुए छः क्वार्ट आटे, दोनों मेढ़ों
में से हर एक के लिए चार क्वार्ट 15और चौदह मेढ़ों में
से हर एक के लिए दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे।

बिगुल बजाना या 'चिल्लाना' और शोर मचाना व खुशी मनाना
भी शामिल है।

उपवास करोगे शाब्दिक, "तुम अपनी आत्मा को विनीत करोगे।"

16तुम्हें एक बकरा भी पापबलियों के रूप में अर्पित करना चाहिए। यह दैनिकबलि, अन्न और पेय भेंट के अतिरिक्त होगी।

17"इस पर्व के दूसरे दिन तुम्हें दोष रहित बारह साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 18तुम्हें साँड़, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय भेंट भी चढ़ानी चाहिए। 19तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

20"इस छुट्टी के तीसरे दिन तुम्हें दोष रहित ग्यारह साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 21तुम्हें बैलों, मेढों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भेंट भी चढ़ानी चाहिए। 22तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होनी चाहिए।

23"इस छुट्टी के चौथे दिन तुम्हें दोष रहित दस साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 24तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। 25तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

26"इस छुट्टी के पाँचवें दिन तुम्हें दोष रहित नौ साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 27तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न तथा पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। 28तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

29"इस छुट्टी के छठे दिन तुम्हें दोष रहित आठ साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 30तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भेंट भी चढ़ानी चाहिए। 31तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

32"इस छुट्टी के सातवें दिन तुम्हें दोष रहित सात साँड़, दो मेढ़े, और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 33तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। 34तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

35"इस छुट्टी का आठवाँ दिन तुम्हारी विशेष बैठक का दिन है। तुम्हें उस दिन कोई काम नहीं करना चाहिए। 36तुम्हें होमबलि चढ़ानी चाहिए। ये आग द्वारा दी गई भेंट होगी। यह यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। तुम्हें दोषरहित एक साँड़, एक मेढ़ा और एक-एक वर्ष के सात मेमने भेंट में चढ़ाने चाहिए। 37तुम्हें साँड़, मेढ़ा और मेमनों के लिए अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट देनी चाहिए। 38तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होनी चाहिए।

39"वे (तुम्हारे) विशेष छुट्टियाँ यहोवा के सम्मान के लिए है। तुम्हें उन विशेष मनौतियों, स्वेच्छा भेंटों, होमबलियों मेलबलियों या अन्न और पेय भेंटें, जो तुम यहोवा को देना चाहते हो, उसके अतिरिक्त इन विशेष दिनों को मनाना चाहिए।"

40मूसा ने इस्राएल के लोगों से उन सभी बातों को कहा जो यहोवा ने उसे आदेश दिया था।

विशेष दिए गए वचन

30 मूसा ने सभी इस्राएली परिवार समूहों के नेताओं से बातें कीं। मूसा ने यहोवा के इन आदेशों के बारें में उनसे कहा: 2यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को विशेष वचन देता है या यदि वह व्यक्ति यहोवा को कुछ विशेष अर्पित करने का वचन देता है तो उसे वैसा ही करने दो। किन्तु उस व्यक्ति को ठीक वैसा ही करना चाहिए जैसा उसने वचन दिया है।

3सम्भव है कि कोई युवती अपने पिता के घर पर ही रहती हो और वह युवती यहोवा को कुछ चढ़ाने का विशेष वचन देती है। 4और उसका पिता इस वचन के विषय में सुनता है और उसे स्वीकार कर लेता है तो उस युवती को उस वचन को अवश्य ही पूरा कर देना चाहिए जिसे करने का उसने वचन दिया है। 5किन्तु यदि उसका पिता उसके दिये गये वचन के बारे में सुन कर उसे स्वीकार नहीं करता तो उस युवती को वह वचन पूरा नहीं करना है। उसके पिता ने उसे रोका अत: यहोवा उसे क्षमा करेगा।

6सम्भव है कोई स्त्री अपने विवाह से पहले यहोवा को कोई वचन देती है अथवा बात ही बात में बिना सोचे विचारे कोई वचन ले लेती है और बाद में उसका विवाह हो जाता है 7और पति दिये गये वचन के बारे में सुनता है और उसे स्वीकार करता है तो उस स्त्री को अपने दिये गए वचन के अनुसार काम को पूरा करना चाहिए। 8किन्तु यदि पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उसे स्वीकार नहीं करता तो स्त्री को अपने दिये गए वचन को पूरा नहीं करना पड़ेगा। उसके पति ने उसका वचन तोड़ दिया और उसने उसे उसकी कही बात को पूरा नहीं करने दिया, अत: यहोवा उसे क्षमा करेगा।

9कोई विधवा या तलाक दी गई स्त्री विशेष वचन दे
सकती है। यदि वह ऐसा करती है तो उसे ठीक अपने
वचन के अनुसार करना चाहिए। 10एक विवाहित स्त्री
यहोवा को कुछ चढ़ाने का वचन दे सकती है। 11यदि
उसका पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और
उसे अपने वचन को पूरा करने देता है, तो उसे ठीक
अपने दिए वचनों के अनुसार ही वह कार्य करना
चाहिए। 12किन्तु यदि उसका पति उसके दिये गए वचन
को सुनता है और उसे वचन पूरा करने से इन्कार
करता है, तो उसे अपने दिये वचन के अनुसार वह
कार्य पूरा नहीं करना पड़ेगा। इसका कोई महत्व नहीं
होगा कि उसने क्या वचन दिया था, उसका पति उस
वचन को भंग कर सकता है। यदि उसका पति वचन
को भंग करता है, तो यहोवा उसे क्षमा करेगा। 13एक
विवाहित स्त्री यहोवा को कुछ चढ़ाने का वचन दे
सकती है या स्वयं को किसी चीज़ से वंचित रखने का
वचन दे सकती है* या वह परमेश्वर को कोई विशेष
वचन दे सकती है। उसका पति उन वचनों में से किसी
को रोक सकता है या पति उन वचनों में से किसी को
पूरा करने दे सकता है।

14पति अपनी पत्नी को कैसे अपने वचन पूरा
करने देगा? यदि वह दिये वचन के बारे में सुनता है
और उन्हें रोकता नहीं है तो स्त्री को अपने दिए वचन
के अनुसार कार्य को पूरा करना चाहिए। 15किन्तु यदि
पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उन्हें
रोकता है तो उसके वचन तोड़ने का उत्तरदायित्व पति
पर होगा।*

16ये आदेश है जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया। ये
आदेश एक व्यक्ति और उसकी पत्नी के बारे में है तथा
पिता और उसकी उस पुत्री के बारे में है जो युवती हो
और अपने पिता के घर में रह रही हो।

इस्राएल ने मिद्यानियों के विरुद्ध प्रत्याक्रमण किया

31 यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 2 "मैं
इस्राएल के लोगों के साथ मिद्यानियों ने जो
किया है उसके लिए उन्हें दण्ड दूँगा। उसके बाद, मूसा,
तू मर जाएगा।"*

3इसलिए मूसा ने लोगों से बात की। उसने कहा,
"अपने कुछ पुरुषों को युद्ध के लिये तैयार करो। यहोवा
उन व्यक्तियों का उपयोग मिद्यानियों को दण्ड देने में
करेगा। 4ऐसे एक हजार पुरुषों को इस्राएल के हर एक
कबीले से चुनो। 5इस्राएल के सभी परिवार समूहों से
बारह हजार सैनिक होंगे।"

6मूसा ने उन बारह हजार पुरुषों को युद्ध के लिए
भेजा। उसने याजक एलीआज़ार को उनके साथ भेजा।
एलीआज़ार ने अपने साथ पवित्र वस्तुएं, सींग और
बिगुल ले लिये। 7इस्राएली लोगों के साथ वैसे ही लड़े
जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। उन्होंने सभी
मिद्यानीं पुरुषों को मार डाला। 8जिन लोगों को उन्होंने
मार डाला उनमें एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा ये
पाँच मिद्यानी राजा थे। उन्होंने बोर के पुत्र बिलाम को
भी तलवार से मार डाला।

9इस्राएल के लोगों ने मिद्यानी स्त्रियों और बच्चों को
बन्दी बनाया। उन्होंने उनकी सारी रेवड़ों, मवेशियों के
झुण्डों और अन्य चीज़ों को ले लिया। 10तब उन्होंने
उनके उन सारे खेमों और नगरों में आग लगा दी जहाँ
वे रहते थे। 11उन्होंने सभी लोगों और जानवरों को ले
लिया, 12और उन्हें मूसा, याजक एलीआज़ार और इस्राएल
के सभी लोगों के पास लाए। वे उन सभी चीज़ों को
इस्राएल के डेरे में लाए जिन्हें उन्होंने वहाँ प्राप्त किया।
इस्राएल के लोग मोआब में स्थित यरदन घाटी में डेरा
डाले थे। यह यरीहो के समीप यरदन नदी के पूर्व की
ओर था। 13तब मूसा, याजक एलीआज़ार और लोगों के
नेता सैनिकों से मिलने के लिए डेरों से बाहर गए।

14मूसा सेनापतियों पर बहुत क्रोधित था। वह उन
एक हजार की सेना के संचालकों और सौ की सेना के
संचालकों पर क्रोधित था जो युद्ध से लौट कर आए थे।
15मूसा ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने स्त्रियों को क्यों
जीवित रहने दिया? 16देखो यह स्त्री ही थी जिसके
कारण बिलाम की घटना में इस्रालियों के लिए समस्याएं
पैदा हुई और पोर में वे यहोवा के विरुद्ध हो गये जिससे
इस्राएल के लोगों को महामारी झेलनी पड़ी। 17अब सभी
मिद्यानी लड़कों को मार डालो और उन सभी मिद्यानी
स्त्रियों को मार डालो जो किसी व्यक्ति के साथ रही हैं।
उन सभी स्त्रियों को मार डालो जिनका किसी पुरुष के
साथ यौन सम्बन्ध था। 18तुम केवल उन सभी लड़कियों
को जीवित रहने दे सकते हो जिनका किसी पुरुष के
साथ यौन सम्बन्ध नहीं हुआ है। 19तब अन्य व्यक्तियों
को मारने वाले तुम लोगों को सात दिन तक डेरे के
बाहर रहना पडेगा। तुम्हें डेरे से बाहर रहना होगा यदि
तुमने किसी शव को छूआ हो। तीसरे दिन, तुम्हें और
तुम्हारें बन्दियों को अपने आप को शुद्ध करना होगा।
तुम्हें वही कार्य सातवें दिन फिर करना होगा। 20तुम्हें
अपने सभी कपड़े धोने चाहिए। तुम्हें चमड़े की बनी हर
वस्तु ऊनी और लकड़ी की बनी वस्तुओं को भी धोना
चाहिए। तुम्हें शुद्ध हो जाना चाहिए।"

21तब याजक एलीआज़ार ने सैनिकों से बात की।
उसने कहा, "ये नियम वे ही हैं जिन्हें यहोवा ने मूसा को

स्वंय को ... सकती है शाब्दिक, "अपनी आत्मा को विनीत करना।" इसका सामान्य तात्पर्य है कि अपने शरीर को कुछ कष्ट दिया जाय, जैसे उपवास रखना।

पति ... होगा शाब्दिक, "वह पत्नी के दोष का भागी होता है।"

तू मर जाएगा शाब्दिक, "अपने पूर्वजों के साथ हो जाओगे।"

दिए थे। वे नियम युद्ध से लौटने वाले सैनिकों के लिये हैं। 22-23किन्तु जो चीज़ें आग में डाली जा सकती हैं उनके बारे में अलग-अलग नियम हैं। तुम्हें सोना, चाँदी, काँसा, लोहा, टिन या सीसे को आग में डालना चहिए और जब उन्हें पानी से धोओ वे शुद्ध हो जाएंगी। यदि चीज़ें आग में न डाली जा सकें तो तुम्हें उन्हें पानी से धोना चाहिए। 24सातवें दिन तुम्हें अपने सारे वस्त्र धोने चाहिये। जब तुम शुद्ध हो जाओगे।"

25उसके बाद तुम डेरे में आ सकते हो। तब यहोवा ने मूसा से कहा, 26"मूसा तुम्हें याजक एलीआज़ार और सभी नेताओं को चाहिये कि तुम उन बन्दियों, जानवरों और सभी चीजों को गिनों जिन्हें सैनिक युद्ध से लाए हों।

27तब उन चीज़ों को युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों और शेष इस्राएल के लोगों में बाँट देना चाहिए। 28जो सैनिक युद्ध में भाग लेने गये थे उनसे उन चीज़ों का आधा लो। वह हिस्सा यहोवा का होगा। हर एक पाँच सौ चीजों में से एक यहोवा का हिस्सा होगा। इसमें व्यक्ति मवेशी, गधे और भेड़े सम्मिलित हैं। 29सैनिकों ने युद्ध में जो चीज़ें प्राप्त कीं उनका आधा हर एक से लो। तब उन चीज़ों को (प्रत्येक पाँच सौ में से एक) याजक एलीआज़ार को दो। वह भाग यहोवा का होगा 30और तब बाकी के लोगों के आधे में से हर एक पचास चीज़ों में से एक चीज़ लो। इसमें व्यक्ति, मवेशी, गधा, भेड़ या कोई अन्य जानवर शामिल हैं। यह हिस्सा लेवीवंशी को दो। क्यों? क्योंकि लेवीवंशी यहोवा के पवित्र तम्बू की देखभाल करते हैं।"

31इस प्रकार मूसा और याजक एलीआज़ार ने वही किया जो मूसा को यहोवा का आदेश था। 32सैनिकों ने छ: लाख पचहत्तर हजार भेड़ें, 33बहत्तर हजार मवेशी, 34एकसठ हजार गधे, 35बत्तीस हजार स्त्रियाँ लूटी थी। ये ऐसी स्त्रियाँ थीं जिनका किसी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध नहीं हुआ था। 36जो सैनिक युद्ध में गए थे उन्होंने अपने हिस्से की तीन लाख सैंतीस हजार पाँच सौ भेड़ें प्राप्त कीं। 37उन्होंने छ: सौ पचहत्तर भेड़ें यहोवा को दीं। 38सैनिकों को छत्तीस हजार मवेशी मिले। उन्होंने बहत्तर यहोवा को दिए। 39सैनिकों ने साढ़े तीस हजार गधे प्राप्त किये। उन्होंने यहोवा को एकसठ गधे दिये। 40सैनिकों को सोलह हजार स्त्रियाँ मिलीं। उन्होंने बत्तीस स्त्रियाँ यहोवा को दीं। 41यहोवा के आदेश के अनुसार मूसा ने यहोवा के लिए दी गई उन सारी भेटों को याजक एलीआज़ार को दे दिया।

42तब मूसा ने लोगों को प्राप्त आधे हिस्से को गिना। यह वह हिस्सा था जिसे मूसा ने युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों से लिया था। 43लोगों ने तीन लाख सैंतीस हजार पाँच सौ भेड़ें, 44छत्तीस हजार मवेशी, 45तीस हजार पाँच सौ गधे 46और सोलह हजार स्त्रियाँ प्राप्त कीं। 47मूसा ने हर एक पचास चीज़ों पर एक चीज़ यहोवा के लिए ली। इसमें जानवर और व्यक्ति दोनों शामिल थे। तब उन चीज़ों को उसने लेवीवंशी को दे दिया। क्यों? क्योंकि वे यहोवा के पवित्र तम्बू की देखभाल करते थे। मूसा ने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

48तब सेना के संचालक एक हजार सैनिकों के सेनापति तथा एक सौ सैनिकों के सेनापति मूसा के पास गए। 49उन्होंने मूसा से कहा, "तेरे सेवक हम लोगों ने अपने सभी सैनिकों को गिना है। हम लोगों में से कोई भी कम नहीं है। 50इसलिए हम लोग हर एक सैनिक से यहोवा की भेंट ला रहे हैं। हम लोग सोने की चीज़ें बाजूबन्द, शुजबन्द, अंगूठी, कान की बालियाँ और हार ला रहे हैं। यहोवा को ये भेंटे हमारे पापों के भुगतान के लिए हैं।"

51इसलिए मूसा ने वे सभी सोने की चीज़ें लीं और याजक एलीआज़ार को उन्हें दिया। 52एक हजार सैनिकों और सौ सैनिकों के सेनापतियों ने जो सोना एकत्र किया और यहोवा को दिया उसका वजन लगभग चार सौ बीस पौंड* था। 53प्रत्येक सैनिक ने युद्ध में प्राप्त चीज़ों का अपना हिस्सा अपने पास रख लिया। 54मूसा और एलीआज़ार ने एक हजार सैनिकों और एक सौ सैनिकों के सेनापतियों से सोना लिया। तब उन्होंने सोने को मिलापवाले तम्बू में रखा। यह भेंट एक यादगार* के रूप में इस्राएल के लोगों के लिए यहोवा के सामने थी।

यरदन नदी के पूर्व के परिवार समूह

32 रूबेन और गाद के परिवार समूहों के पास भारी संख्या में मवेशी थे। उन लोगों ने याजेर और गिलाद के समीप की भूमि को देखा। उन्होंने सोचा कि वह भूमि उनके मवेशियों के लिए ठीक है। 2इसलिए रूबेन और गाद परिवार समूह के लोग मूसा के पास आए। उन्होंने मूसा, याजक एलीआज़ार तथा लोगों के नेताओं से बात की। 3-4 उन्होंने कहा, "तेरे सेवक, हम लोगों के पास भारी संख्या में मवेशी हैं और वह भूमि जिसे यहोवा ने इस्राएल के लोगों को युद्ध में दिया है, मवेशियों के लिए ठीक है। इस प्रदेश में अतारोत, दीबोन याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम नबो और बोन शामिल हैं। 5यदि तेरी स्वीकृति हो तो हम लोग चाहेंगे कि यह प्रदेश हम लोगों को दिया जाए। हम लोगों को यरदन नदी की दूसरी ओर न ले जाए।"

6मूसा ने रूबेन और गाद के परिवार समूह से पूछा, "क्या तुम लोग यहाँ बसोगे और अपने भाइयों को यहाँ से जाने और युद्ध करने दोगे? 7तुम लोग इस्राएल के लोगों को निरुत्साहित क्यों करना चाहते हो? तुम लोग उन्हें नदी पार करने की सोचने नहीं दोगे और जो प्रदेश

चार सौ बीस पौंड मूल में, 16,750 शेकेल।

यादगार कोई ऐसी चीज़ जिसे लोग इस रूप में याद करते हैं कि कभी अतीत में ऐसा हुआ।

यहोवा ने उन्हें दिया है उसे नहीं लेने दोगे। 8तुम्हारे
पिताओं ने मेरे साथ ऐसा ही किया। कादेशबर्ने से मैंने
जासूसों को प्रदेश की छान–बीन करने के लिये भेजा।
9वे लोग एश्कोल घाटी तक गए। उन्होंने प्रदेश को देखा
और उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को उस धरती पर
जाने को निरुत्साहित किया। उन लोगों ने इस्राएल के
लोगों को उस प्रदेश में जाने की इच्छा नहीं करने दी
जिसे यहोवा ने उनको दे दिया था। 10यहोवा लोगों पर
बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने यह निर्णय सुनाया: 11'मिस्र
से आने वाले लोगों और बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र
का कोई भी व्यक्ति इस प्रदेश को नहीं देख पाएगा। मैंने
इब्राहीम, इसहाक और याकूब को यह वचन दिया था।
मैंने यह प्रदेश इन व्यक्तियों को देने का वचन दिया था।
किन्तु इन्होंने मेरा अनुसरण पूरी तरह नहीं किया।
इसलिए वे इस प्रदेश को नहीं पाएंगे। 12केवल कनजी
यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू ने यहोवा
का पूरी तरह अनुसरण किया।'

13"यहोवा इस्राएल के लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित
था। इसलिए यहोवा ने लोगों को चालीस वर्ष तक मरुभूमि
में रोके रखा। यहोवा ने उनको तब तक वहाँ रोके
रखा जब तक वे लोग, जिन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप
किए थे, मर न गए 14और अब तुम लोग वही कर रहे
हो जो तुम्हारे पूर्वजों ने किया। अरे पापियों! क्या तुम
चाहते हो कि यहोवा इस्राएल के लोगों के विरुद्ध और
अधिक क्रोधित हो? 15यदि तुम लोग यहोवा का अनुसरण
करना छोड़ोगे तो यहोवा इस्राएल को और अधिक
समय तक मरुभूमि में ठहरा देगा। तब तुम इन सभी
लोगों को नष्ट कर दोगे!"

16किन्तु रूबेन और गाद परिवार समूहों के लोग मूसा
के पास गए। उन्होंने कहा, "यहाँ हम लोग अपने बच्चों
के लिए नगर और अपने जानवरों के लिए बाड़े बनाएंगे।
17तब हमारे बच्चे उन अन्य लोगों से सुरक्षित रहेंगे जो
इस प्रदेश में रहते हैं। किन्तु हम लोग प्रसन्नता से आगे
बढ़कर इस्राएल के लोगों की सहायता करेंगे। हम लोग
उन्हें उनके प्रदेश में ले जाएंगे। 18हम लोग तब तक घर
नहीं लौटेंगे जब तक हर एक व्यक्ति इस्राएल में अपनी
भूमि का हिस्सा नहीं पा लेता। 19हम लोग यरदन नदी
के पश्चिम में कोई भूमि नहीं लेंगे। नहीं! हम लोगों की
भूमि का भाग यरदन नदी के पूर्व ही है।"

20मूसा ने उनसे कहा, "यदि तुम लोग यह सब करोगे
तो यह भूमि तुम लोगों की होगी। किन्तु तुम्हारे सैनिक
यहोवा के सामने युद्ध में जाने चाहिए। 21तुम्हारे सैनिकों
को यरदन नदी पार करनी चाहिए और शत्रु को उस
देश को छोड़ने के लिए विवश करना चाहिए। 22जब
हम सभी को भूमि प्राप्त कराने में यहोवा सहायता कर
चुके तब तुम घर वापस जा सकते हो। तब यहोवा और
इस्राएल तुमको अपराधी नहीं मानेंगे। तब यहोवा तुमको
यह प्रदेश लेने देगा। 23 किन्तु यदि तुम ये बातें पूरी नहीं
करते हो, तो तुम लोग यहोवा के विरुद्ध पाप करोगे
और यह गाँठ बांधो कि तुम अपने पाप के लिए दण्ड
पाओगे। 24अपने बच्चों के लिए नगर और अपने जानवरों
के लिए बाड़े बनाओ। किन्तु उसके बाद उसे पूरा करो
जिसे करने का तुमने वचन दिया है।"

25तब गाद और रूबेन परिवार समूह के लोगों ने मूसा
से कहा, "हम तेरे सेवक हैं। तू हमारा स्वामी है। इसलिए
हम लोग वही करेंगे जो तू कहता है। 26हमारी पत्नियाँ,
बच्चे और हमारे जानवर गिलाद नगर में रहेंगे। 27किन्तु
तेरे सेवक, हम यरदन नदी को पार करेंगे। किन्तु हम
लोग यहोवा के सामने अपने स्वामी के कथनानुसार
युद्ध में कूद पड़ेंगे।"

28मूसा ने याजक एलीआज़ार, नून के पुत्र यहोशू
और इस्राएल के परिवार समूह के सभी नेताओं को
उनके बारे में आज्ञा दी। 29मूसा ने उनसे कहा, "गाद
और रूबेन के पुरुष यरदन नदी को पार करेंगे। वे
यहोवा के आगे युद्ध में धावा बोलेंगे। वे देश जीतने में
तुम्हारी सहायता करेंगे और तुम लोग गिलाद का प्रदेश
उनके हिस्से के रूप में उन्हें दोगे। 30वे वचन देते हैं कि
वे कनान देश को जीतने में तुम्हारी सहायता करेंगे।"

31गाद और रूबेन के लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोग
वही करने का वचन देते हैं जो यहोवा का आदेश है।
32हम लोग यरदन नदी पार करेंगे और कनान देश पर
यहोवा के सामने धावा बोलेंगे और हमारे देश का भाग
यरदन नदी के पूर्व की भूमि होगी।"

33इस प्रकार मूसा ने उस प्रदेश को गाद, रूबेन और
मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों को दिया। मनश्शे
यूसुफ का पुत्र था। उस प्रदेश में एमोरियों के राजा
सीहोन का राज्य और बाशान के राजा ओग का राज्य
शामिल थे। उस प्रदेश में उस क्षेत्र के चारों ओर के
नगर भी शामिल थे।

34गाद के लोगों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर, 35अत्रौत,
शोपान, याजेर, योगबहा, 36बेतनिम्रा और बेथारान नगरों
को बनाया। उन्होंने मजबूत चाहारदीवारों के साथ नगरों
को बनाया और अपने जानवरों के लिए बाड़े बनाए।

37रूबेन के लोगों ने हेशबोन, एलाले, किर्यातैम, 38नबो,
बालमोन, मूसा-बॉथ और तित्पा नगर बनाए। उन्होंने
जिन नये नगरों को फिर से बनाया उनके पुराने नामों
का ही उपयोग किया गया किन्तु नबो और बालमोन
को नये नाम दिये गए।

39मनश्शे परिवार समूह की सन्तान माकीर से उत्पन्न
लोग गिलाद को गए। उन्होंने नगर को हराया। उन्होंने
उन एमोरी को हराया जो वहाँ रहते थे। 40इसलिए
मनश्शे के परिवार समूह के माकीर को मूसा ने गिलाद
दिया। इसलिए उसका परिवार वहाँ बस गया। 41मनश्शे
की सन्तान याईर ने वहाँ के छोटे नगरों को हराया। तब

उसने उन्हें याईर के नगर नाम दिया। 42नोबह ने कनात और उसके पास के छोटे नगरों को हराया। तब उसने उस स्थान का नाम अपने नाम पर नोबह रखा।

मिस्र से इस्राएलियों की यात्रा

33 मूसा और हारून ने इस्राएल के लोगों को मिस्र से समूहों में निकाला ये वे स्थान हैं जिनकी उन्होंने यात्रा की। 2मूसा ने उन यात्राओं के बारे में लिखा। मूसा ने वे बातें लिखीं जिन्हें यहोवा चाहता था। वे यात्रायें यहाँ हैं। 3प्रथम महीने के पन्द्रहवें दिन उन्होंने रामसेस छोड़ा। फसह पर्व के बाद सवेरे, इस्राएल के लोगों ने विजय के साथ अपने अस्त्र-शस्त्रों को उठाए हुए मिस्र से बाहर प्रस्थान किया। मिस्र के सभी लोगों ने उन्हें देखा। 4मिस्री उन लोगों को जला रहे थे जिन्हें यहोवा ने मार डाला था। वे अपने सभी पहलौठे पुत्रों को जला रहे थे। यहोवा ने मिस्र के देवताओं के विरुद्ध अपना निर्णय दिखाया था।

5इस्राएल के लोगों ने रामसेस को छोड़ा और सुक्कोत की यात्रा की। 6सुक्कोत से उन्होंने एताम की यात्रा की। वहाँ पर लोगों ने मरुभूमि के छोर पर डेरे डाले। 7उन्होंने एताम को छोड़ा और पीहहीरोत को गए। यह बालसपोन के पास था। लोगों ने मिगदोल के पास डेरे डाले।

8लोगों ने पीहहीरोत छोड़ा और समुद्र के बीच से चले। वे मरुभूमि की ओर चले। तब वे तीन दिन तक एताम मरुभूमि से होकर चले। लोगों ने मारा में डेरे डाले। 9लोगों ने मारा को छोड़ा और एलीम गए तथा वहाँ डेरे डाले। वहाँ पर बारह पानी के सोते थे और सत्तर खजूर के पेड़ थे। 10लोगों ने एलीम छोड़ा और लाल सागर के पास डेरे डाले।

11लोगों ने लालसागर को छोड़ा और सीन मरुभूमि में डेरे डाले।

12लोगों ने सीन मरुभूमि को छोड़ा और दोपका में डेरे डाले।

13लोगों ने दोपका छोड़ा और आलूश में डेरे डाले।

14 लोगों ने आलूश छोड़ा और रपीदीम में डेरे डाले। वहाँ लोगों को पीने के लिए पानी नहीं था।

15लोगों ने रपीदीम छोड़ा और सीनै मरुभूमि में डेरे डाले।

16लोगों ने सीनै मरुभूमि को छोड़ा और किब्रोथत्तावा में डेरे डाले।

17लोगों ने किब्रोथत्तावा छोड़ा और हसेरोत में डेरे डाले।

18लोगों ने हसेरोत को छोड़ा और रित्मा में डेरे डाले।

19लोगों ने रित्मा को छोड़ा और रिम्मोनपेरेस में डेरे डाले।

20लोगों ने रिम्मोनपेरेस को छोड़ा और लिब्ना में डेरे डाले।

21लोगों ने लिब्ना छोड़ा और रिस्सा में डेरे डाले।

22लोगों ने रिस्सा छोड़ा और कहेलाता में डेरे डाले।

23लोगों ने कहेलाता छोड़ा और शेपेर पर्वत पर डेरे डाले।

24लोगों ने शेपेर पर्वत छोड़ा और हरादा में डेरे डाले।

25लोगों ने हरादा छोड़ा और मखेलोत में डेरे डाले।

26लोगों ने मखेलोत छोड़ा और तहत में डेरे डाले।

27लोगों ने तहत छोड़ा और तेरह में डेरे डाले।

28लोगों ने तेरह को छोड़ा और मित्का में डेरे डाले।

29लोगों ने मित्का छोड़ा और हशमोना में डेरे डाले।

30लोगों ने हशमोना को छोड़ा और मोसेरोत में डेरे डाले।

31लोगों ने मोसेरोत छोड़ा और बने-याकान में डेरे डाले।

32लोगों ने बने-याकान छोड़ा और होर्हग्गिदगाद में डेरे डाले।

33लोगों ने होर्हग्गिदगाद छोड़ा और योतबाता में डेरे डाले।

34लोगों ने योतबाता छोड़ा और अब्रोना में डेरे डाले।

35लोगों ने अब्रोना छोड़ा और एस्योनगेबेर में डेरे डाले।

36लोगों ने एस्योनगेबेर छोड़ा और सीन मरुभूमि में कादेश में डेरे डाले।

37 लोगों ने कादेश छोड़ा और होर में डेरे डाले। यह एदोम देश की सीमा पर एक पर्वत था। 38याजक हारून ने यहोवा की आज्ञा मानी और वह होर पर्वत पर चढ़ा। हारून पाँचवें महीने के प्रथम दिन मरा। वह मिस्र को इस्राएल के लोगों द्वारा छोड़ने का चालीसवाँ वर्ष था। 39हारून जब होर पर्वत पर मरा तब वह एक सौ तेईस वर्ष का था।

40अरात कनान के नेगेव प्रदेश में था। कनानी राजा ने वहाँ सुना कि इस्राएल के लोग आ रहे हैं। 41लोगों ने होर पर्वत को छोड़ा और सलमोना में डेरे डाले।

42लोगों ने सलमोना को छोड़ा और पूनोन में डेरे डाले।

43लोगों ने पूनोन छोड़ा और ओबोस में डेरे डाले।

44लोगों ने ओबोस छोड़ा और अबारीम में डेरे डाले। यह मोआब देश की सीमा पर था।

45लोगों ने इयीम (इयीम अबारीम) को छोड़ा और दीबोन-गाद में डेरे डाले।

46लोगों ने दीबोन-गाद छोड़ा और अल्मोनदिबलातैम में डेरे डाले।

47लोगों ने अल्मोनदिबलातैम छोड़ा और नबो के पास अबारीम पर्वतों पर डेरे डाले।

48लोगों ने अबारीम पर्वतों को छोड़ा और यरदन नदी के पास मोआब के प्रदेश में डेरे डाले। यह यरीहो के पास था। 49उन्होंने यरदन के पास डेरे डाले। उनके डेरे

वेत्यशीमोत से अबेलशित्तीम चरागाह तक फैले थे। यह
अबारीम मोआब के मैदानों में था।
50यरीहो के पार यरदन घाटी के मोआब के मैदानों
में, यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 51“इस्राएल
के लोगों से बात करो। उनसे यह कहो: तुम लोग यरदन
नदी को पार करोगे। तुम लोग कनान देश में जाओगे।
52तुम लोग उन लोगों से भूमि ले लोगे जिन्हें तुम वहाँ
पाओगे। तुम लोगों को उनकी उत्कीर्ण मूर्तियों और
प्रतीकों को नष्ट कर देना चाहिए। तुम्हें उनके सभी
उच्च स्थानों को नष्ट कर देना चाहिए। 53तुम वह देश
लोगे और वहाँ बसोगे। क्यों? क्योंकि यह देश मैं तुमको
दे रहा हूँ। यह तुम्हारे परिवारों का होगा। 54तुम्हारा हर
एक परिवार भूमि का हिस्सा पाएगा। तुम इस बात के
लिए गोट डालोगे कि देश का कौन सा हिस्सा किस
परिवार को मिलता है। बड़े परिवार भूमि का बड़ा
हिस्सा पाएंगे। छोटे परिवार देश का छोटा भाग पाएंगे।
भूमि उन लोगों को दी जाएगी जिनके नाम गोट निश्चित
करेगी। हर एक परिवार समूह अपनी भूमि पाएगा।
55तुम लोगों को उन अन्य लोगों से देश खाली करा
लेना चाहिए। यदि तुम उन लोगों को अपने देश में
ठहरने दोगे तो वे तुम्हारे लिए बहुत परेशानियाँ उत्पन्न
करेंगे। वे तुम्हारी आँखों में काँटे या तुम्हारी बगल के
कीलें की तरह होंगे। वे उस देश पर बहुत विपत्तियाँ
लाएंगे जहाँ तुम रहोगे। 56मैंने तुम लोगों को समझा दिया
जो मुझे उनके साथ करना है और मैं तुम्हारे साथ वही
करूँगा यदि तुम लोग उन लोगों को अपने देश में रहने
दोगे।”

कनान की सीमाएँ

34 यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा,
2“इस्राएल के लोगों को यह आदेश दो: तुम
लोग कनान देश में आ रहे हो। तुम लोग इस देश को
हराओगे। तुम लोग पूरा कनान देश ले लोगे। 3दक्षिणी
ओर तुम लोग एदोम के निकट सीन मरुभूमि का भाग
प्राप्त करोगे। तुम्हारी दक्षिणी सीमा मृत सागर की दक्षिणी
छोर से आरम्भ होगी। 4यह बिच्छूदर्रे (स्कार्पियन पास)
के दक्षिण से गुजरेगी। यह सीन मरुभूमि से होकर
कादेशबर्ने तक जाएगी, और तब हसरद्दार तथा तब यह
अस्मोन से होकर जाएगी। 5अस्मोन से सीमा मिस्र की
नदी तक जाएगी और इसका अन्त भूमध्य सागर पर
होगा। 6तुम्हारी पश्चिमी सीमा भूमध्य सागर होगी। 7तुम्हारी
उत्तरी सीमा भूमध्य सागर पर आरम्भ होगी और होर
पर्वत तक जाएगी। लबानोन में 8होर पर्वत से यह लेबोहामात
को जाएगी और तब सदाद को। 9तब यह सीमा जिप्रोन
को जाएगी तथा यह हसेरनान पर समाप्त होगी। इस
प्रकार यह तुम्हारी उत्तरी सीमा होगी। 10तुम्हारी पूर्वी
सीमा एनान पर आरम्भ होगी और यह शापान तक
जाएगी। 11शापान से सीमा ऐन के पूर्व रिबला तक
जाएगी। किन्नरेत सागर गलील के सागर के साथ की
पहाड़ियों के साथ सीमा चलती रहेगी। 12तब सीमा यरदन
नदी के साथ-साथ चलेगी। इसका अन्त मृत सागर पर
होगा। तुम्हारे देश के चारों ओर की सीमा यही है।”
13मूसा ने इस्राएल के लोगों को आदेश दिया: “यही
वह देश है जिसे तुम प्राप्त करोगे। तुम लोग नौ परिवार
समूहों और मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों के
लिए भूमि बाँटने के लिए उनके नाम गोटें डालोगे।
14रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे परिवार के लोगों
के परिवार समूहों ने पहले ही अपना प्रदेश ले लिया है।
15उस ढाई परिवार समूह ने यरीहो के निकट यरदन
नदी के पूर्व अपना प्रदेश ले लिया है।”
16तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 17“ये
वे लोग हैं जो भूमि बाँटने में तुम्हारी सहायता करेंगे:
याजक एलीआज़ार, नून का पुत्र यहोशू 18और हर एक
परिवार समूह से तुम एक नेता चुनोगे। ये लोग भूमि
का बँटवारा करेंगे। 19नेताओं के नाम ये हैं:

यहूदा के परिवार समूह से, यपुन्ने का पुत्र कालेब;

20शिमोन के परिवार समूह से, अम्मीहूद का पुत्र
शमूएल।

21 बिन्यामीन के परिवार समूह से, किसलोन का
पुत्र एलीदाद।

22दान के परिवार समूह से, योग्ली का पुत्र बुक्की।

23मनश्शे (यूसुफ का पुत्र) के परिवार समूह से,
एपोद का पुत्र हन्नीएल।

24एप्रैम (यूसुफ का पुत्र) के परिवार समूह से, शिप्तान
का पुत्र कमूएल।

25जबूलून के परिवार समूह से, पर्नाक का पुत्र
एलीसापान।

26इस्साकार के परिवार समूह से, अज्जान का पुत्र
पलतीएल।

27आशेर के परिवार समूह से, शलोमी का पुत्र
अहीहूद।

28नप्ताली के परिवार समूह से, अम्मीहूद का पुत्र
पदहेल।”

29यहोवा ने इन पुरुषों को इस्राएल के लोगों में कनान
की भूमि बाँटने के लिये चुना।

लेवीवंश के नगर

35 यहोवा ने मूसा से बात की जो यरीहो के पार
यरदन नदी के किनारे मोआब की यरदन
घाटी में हुई। यहोवा ने कहा, 2“इस्राएल के लोगों से
कहो कि उन्हें अपने हिस्से के देश में कुछ नगर लेवीवंशियों
को देने चाहिए। इस्राएल के लोगों को नगर और उसके
चारों ओर की चरागाहें लेवीवंशियों को देनी चाहिए।
3लेवीवंशी उन नगरों में रह सकेंगे और सभी मवेशी

तथा अन्य जानवर, जो लेवीवंशियों के होंगे, नगर के
चारों ओर की चरागाहों में चर सकेंगे।

4तुम लेवीवंशियों को अपने देश का कितना भाग
दोगे? नगरों की दीवारों से डेढ़ हजार फीट* बाहर तक
नापते जाओ। वह सारी भूमि लेवीवंशियों की होगी।
5सारी तीन हजार फीट भूमि नगर के पूर्व तीन हजार
फीट नगर के दक्षिण, तीन हजार फीट नगर के पश्चिम
तथा तीन हजार फीट* नगर के उत्तर, भी लेवीवंशियों
की होगी। उस भूमि के मध्य में नगर होगा। 6उन नगरों
में से छ: नगर सुरक्षा नगर होंगे। यदि कोई व्यक्ति किसी
को संयोगवश मार डालता है तो वह सुरक्षा के लिए उन
नगरों में भाग कर जा सकता है। उन छ: नगरों के
अतिरिक्त तुम लेवीवंशियों को बयालीस अन्य नगर दोगे।
7इस प्रकार तुम लेवीवंशियों को कुल अड़तालीस नगर
दोगे। तुम उन नगरों को चारों ओर की भूमि भी दोगे।
8इस्राएल के बड़े परिवार भूमि के बड़े भाग देंगे। इस्राएल
के छोटे परिवार भूमि के छोटे भाग देंगे। सभी परिवार
समूह लेवीवंशियों को अपने हिस्से के प्रदेश में से कुछ
भाग प्रदान करेंगे।"

9तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 10"लोगों
से यह कहो: तुम लोग यरदन नदी को पार करोगे और
कनान देश में जाओगे। 11तुम्हें "सुरक्षा नगर" बनाने के
लिए नगरों को चुनना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति संयोगवश
किसी को मार डालता है, तो यह सुरक्षा के लिए इन
नगरों में से किसी में भागकर जा सकता है। 12वह उस
किसी भी व्यक्ति से सुरक्षित रहेगा जो मृतक व्यक्ति के
परिवार का हो और उसे पकड़ना चाहता हो। वह तब
तक सुरक्षित रहेगा जब तक न्यायालय में उनके बारे में
निर्णय नहीं हो जाता। 13"सुरक्षा नगर" छ: होंगे। 14उन
नगरों में तीन नगर यरदन नदी के पूर्व होंगे और तीन
अन्य नगर कनान प्रदेश में यरदन नदी के पश्चिम में
होंगे। 15वे नगर इस्राएल के नागरिकों, विदेशियों और
यात्रियों के लिए सुरक्षा नगर होंगे। कोई भी व्यक्ति, जो
संयोगवश किसी को मार डालता है, इन किसी एक
नगर में भाग कर जा सकेगा।

16"यदि कोई व्यक्ति किसी को मारने के लिए लोहे
का हथियार उपयोग में लाता है, तो उस व्यक्ति को
मरना चाहिए 17और यदि कोई व्यक्ति एक पत्थर उठाता
है और किसी को मार डालता है, तो उसे भी मरना
चाहिए। पत्थर उस आकार का होना चाहिए जिसे व्यक्तियों
को मारने के लिए प्राय: उपयोग में लाया जाता है।
18यदि कोई व्यक्ति किसी लकड़ी का उपयोग करता है
और किसी को मार डालता है, तो उसे मरना चाहिए।
लकड़ी एक हथियार के रूप में होनी चाहिए जिसका
उपयोग प्राय: लोग मनुष्यों को मारने के लिए करते हैं।
19मृतक व्यक्ति के परिवार का सदस्य* उस हत्यारे
का पीछा कर सकता है और उसे मार सकता है।

20-21"कोई व्यक्ति किसी पर हाथ से प्रहार कर सकता
है और उसे मार सकता है या कोई व्यक्ति किसी को
धक्का दे सकता है और उसे मार सकता है या कोई
व्यक्ति पर कुछ फेंक सकता है और उसे मार सकता
है। यदि उस मारने वाले ने घृणा के कारण ऐसा किया
तो वह हत्यारा है। उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए।
मृतक के परिवार का कोई सदस्य उस हत्यारे का पीछा
कर सकता है और उसे मार सकता है।

22"किन्तु कोई व्यक्ति संयोगवश किसी को मार सकता
है। वह व्यक्ति उस व्यक्ति से घृणा नहीं करता था, वह
घटना संयोगवश हो गई या कोई व्यक्ति कुछ फेंक
सकता है और संयोगवश किसी को मार सकता है,
उसने मारने का इरादा नहीं किया था। 23या कोई
व्यक्ति कोई बड़ा पत्थर फेंक सकता है और वह पत्थर
किसी ऐसे व्यक्ति पर गिर पड़े जो उसे न देख रहा हो
और वह उसे मार डाले। उस व्यक्ति ने किसी को मार
डालने का इरादा नहीं किया था। उसने मृतक व्यक्ति
के प्रति घृणा नहीं रखी थी, यह केवल संयोगवश हुआ।
24यदि ऐसा हो, तो जाति निर्णय करेगी कि क्या किया
जाए। जाति का न्यायालय यह निर्णय देगा कि मृतक
व्यक्ति के परिवार का सदस्य उसे मार सकता है।
25यदि न्यायालय को यह निर्णय देना है कि वह जीवित
रहे तो उसे अपने "सुरक्षा नगर" में जाना चाहिए। उसे
वहाँ तब तक रहना चाहिए जब तक महायाजक न मरे,
यह महायाजक वही होना चाहिए जिसका अभिषेक
पवित्र तेल से हुआ हो।

26-27"उस व्यक्ति को अपने "सुरक्षा नगर" की सीमाओं
के कभी बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि वह सीमाओं के
पार जाता है और मृतक व्यक्ति परिवार का सदस्य उसे
पकड़ता है और उसको मार डालता है तो वह सदस्य
हत्या का अपराधी नहीं होता।

28उस व्यक्ति को, जिसने संयोगवश किसी को मार
डाला है, "सुरक्षा नगर" में तब तक रहना पड़ेगा जब
तक महायाजक मर नहीं जाता। महायाजक के मरने
के बाद वह व्यक्ति अपने देश को लौट सकता है। 29ये
नियम तुम्हारे लोगों के नगरों के लिये सदा के लिए
नियम होंगे।

डेढ़ हजार फीट शाब्दिक, "एक हजार हाथ" लोग, संभवत: अपनी भेड़ों और मवेशियों को इस भूमि का उपयोग करने देते थे।

डेढ़ हजार फीट शाब्दिक, "एक हजार हाथ" लोग, संभवत: अपनी भेड़ों और मवेशियों को इस भूमि का उपयोग करने देते थे।

मृतक व्यक्ति परिवार का सदस्य शाब्दिक, "खून का बदला लेने वाला।" प्राय: यह मित्र या परिवार का सदस्य होता था जो मृतक व्यक्ति के हत्यारे का पीछा कर सकता था और उसे मार सकता था।

30“हत्यारे को तभी मृत्यु दण्ड दिया जा सकेगा। जब
उसके विरोध में एक से अधिक गवाहियाँ होंगी। यदि
एक ही गवाह होगा तो किसी व्यक्ति को प्राणदण्ड नहीं
दिया जाएगा। **31**यदि कोई व्यक्ति हत्यारा है, तो उसे मार
डालना चाहिए। धन के बदले उसे छोड़ नहीं दिया जाना
चाहिए। उस हत्यारे को मार दिया जाना चाहिए।

32“यदि किसी व्यक्ति ने किसी को मारा और वह
भाग कर किसी “सुरक्षा नगर” में गया, तो घर लौटने
के लिये उससे धन न लो। उस व्यक्ति को उस नगर में
तब तक रहना पड़ेगा जब तक याजक न मरे।

33“अपने देश को निरपराधों के खून से भ्रष्ट मत
होने दो। यदि कोई व्यक्ति किसी को मारता है, तो उस
अपराध का बदला केवल यही है कि उस व्यक्ति को
मार दिया जाए। अन्य कोई ऐसा भुगतान नहीं है जो उस
अपराध से उस देश को मुक्त कर सके। **34**मैं यहोवा हूँ!
मैं इस्राएल के लोगों के साथ तुम्हारे देश में सदा रहता
रहूँगा। मैं उस देश में रहता रहूँगा अत: निरपराध लोगों
के खून से उस देश को अपवित्र न करो।”

सलोफाद की पुत्रियों का देश

36 मनश्शे यूसुफ का पुत्र था। माकीर मनश्शे
का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था।
गिलाद परिवार के नेता मूसा और इस्राएल के परिवार
समूह के नेताओं से बात करने गए। **2**उन्होंने कहा,
“महोदय, यहोवा ने आदेश दिया कि हम लोग अपनी
भूमि गोट डालकर प्राप्त करें और महोदय, यहोवा ने
आदेश दिया कि सलोफाद की भूमि उसकी पुत्रियों
को मिले। सलोफाद हमारा भाई था। **3**यह हो सकता है
कि किसी दूसरे परिवार समूह का व्यक्ति सलोफाद की
किसी पुत्री से विवाह करे। क्या वह भूमि हमारे परिवार
से निकल जाएगी? क्या उस दूसरे परिवार समूह के
व्यक्ति उस भूमि को प्राप्त करेंगे? क्या हम लोग वह
भूमि खो देंगे जिसे हम लोगों ने गोट डालकर प्राप्त
किया था? **4** लोग अपनी भूमि बेच सकते हैं। किन्तु
जुबली के वर्ष में सारी भूमि उस परिवार समूह को
लौट जाती है जो इसका असली मालिक होता है। उस
समय सलोफाद की पुत्रियों की भूमि कौन पाएगा? यदि
वैसा होता है तो हमारा परिवार उस भूमि से सदा के
लिए वंचित हो जाएगा।”

5मूसा ने इस्राएल के लोगों को यह आदेश दिया। यह
आदेश यहोवा का था। “यूसुफ के परिवार समूह के ये
व्यक्ति ठीक कहते हैं! **6**सलोफाद की पुत्रियों के लिए
यहोवा का यह आदेश है: यदि तुम किसी से विवाह
करना चाहती हो तो तुम्हें अपने परिवार समूह के
किसी पुरुष के साथ ही विवाह करना चाहिए। **7**इस
प्रकार, इस्राएल के लोगों में भूमि एक परिवार समूह से
दूसरे परिवार समूह में नहीं जाएगी। हर एक इस्राएली
अपने पूर्वजों की भूमि को ही अपने पास रखेगा। **8**और
यदि कोई पुत्री पिता की भूमि प्राप्त करती है, तो उसे
अपने परिवार समूह में से ही किसी के साथ विवाह
करना चाहिए। इस प्रकार, हर एक व्यक्ति वही भूमि
अपने पास रखेगा जो उसके पूर्वजों की थी। **9**इस प्रकार,
इस्राएल के लोगों में एक परिवार समूह से दूसरे परिवार
समूह में नहीं जाएगी। हर एक इस्राएली वह भूमि रखेगा
जो उसके अपने पूर्वजों की थी।”

10सलोफाद की पुत्रियों ने, मूसा को दिये गए यहोवा
के आदेश को स्वीकार किया। **11**इसलिए सलोफाद की
पुत्रियाँ महला, तिर्सा, होग्ला, मिल्का और नोआ ने
अपने चचेरे भाइयों के साथ विवाह किया। **12**उनके
पति यूसुफ के पुत्र मनश्शे के परिवार समूह के थे,
इसलिए उनकी भूमि उनके पिता के परिवार और
परिवार समूह की बनी रही।

13इस प्रकार ये नियम और आदेश यरीहो के पार
यरदन नदी के किनारे मोआब क्षेत्र में मूसा को दिये गए
यहोवा के आदेश थे और मूसा ने उन नियमों और
आदेशों को इस्राएल के लोगों को दिया।